

इमाम अली के मकतूबात (पत्र)

(नहजुल बलागा से)

अलहसनैन इस्लामी नैटवर्क

मुक़द्देमा

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम

नहजुल बलागा अमीरुल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब अ.स. के कलाम का वह मशहूर तरीन संयोजन है जिसे सैयद रजी ने चौथी शताब्दी के अंत में संकलित किया तथा इस किताब को तीन हिस्सो मे तकसीम किया गया है :

1. खुतबाते इमाम अली (उपदेश)
2. इमाम अली के मकतूब (पत्र)
3. इमाम अली के अक़वाल (कथन)

किताब के बड़ी होने के कारण हम यहा सिर्फ इमाम अली के मकतूब (पत्र) जमा कर रहे है।

इमाम अली के मकतूब (पत्र)

इसमें मौलाए कायनात अमीरूल मोमेनीन (अ0) के वह खुतूत और तहरीरें दर्ज हैं जो आपने अपने मुखालेफ़ीन और अपने कलमर्द के मुख्तलिफ़ शहरों के हाकमो के नाम भेजी हैं और इसमें कारिन्दों के ना जो हुक्मत के परवाने और अपने साहेबज़ादों और साथियों के नाम जो वसीयत नामे लिखे हैं या हिदायतें की हैं, उनका इन्तेखाब भी दर्ज है। अगरचे हज़रत का तमाम का तमाम कलाम इन्तेखाब में आने के लायक़ है।

1 आपका मकतूबे गिरामी-(जो मदीने से बसरे की जानिब रवाना होते हुए अहले कूफ़ा के नाम तहरीर किया)

खुदा के बन्दे अली अमीरूल मोमेनीन (अ0) की तरफ़ से अहले कूफ़ा के नाम जो मददगारों में सरबरावरदा, और कौमे अरब में बलन्द नाम हैं, मैं उस्मान के मामले से तुम्हें इस तरह आगाह किये देता हूँ के सुनने और देखने में कोई फ़र्क न रहे। लोगों ने उन पर एतराज़ात किये तो मुहाजेरीन में से एक मैं ऐसा था जो ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करता था के इनकी मर्ज़ी के खिलाफ़ कोई बात न हो और शिकवा-शिकायत बहुत कम करता था। अलबत्ता उनके बारे में तल्हा व जुबैर की हल्की से हल्की रफ़्तार भी तुन्द व तेज़ थी और नर्म से नर्म आवाज़ भी सख़्ती व दरशती लिये हुए थी, और उन पर आइशा को भी बेतहाशा गुस्सा था चुनांचे एक गिरोह आमादा हो गया और उसने उन्हें क़त्ल कर दिया और लोगों ने मेरी बैयत कर ली इस तरह के न उन पर कोई ज़बरदस्ती थी और न उन्हें मजबूर किया गया था बल्कि उन्होंने रग़बत व इख़्तेयार से ऐसा किया। और तुम्हें मालूम होना चाहिये के दारूल बहत (मदीना) अपने रहने वालों से खाली हो गया है और इसके बाशिन्दों के क़दम वहां से उखड़ चुके हैं और वह देग की तरह उबल रहा है और फ़िल्ने की चक्की चलने लगी है लेहाज़ा अपने अमीर की तरफ़ तेज़ी से बढ़ो और अपने दुश्मनों से जेहाद करने के लिये जल्दी से निकल खड़े हो।

2- आपका मकतूबे गिरामी (जिसे अहले कूफ़ा के नाम बसरा की फ़तेह के बाद लिखा गया)

शहरे कूफ़ा वालों! खुदा तुम्हें तुम्हारे पैगम्बर (स0) के अहलेबैत (अ0) की तरफ़ से जज़ाए ख़ैर दे, ऐसी बेहतरीन जज़ा जो उसकी इताअत पर अमल करने वालों और उसकी नेमतों का शुक्रिया अदा करने वालों को दी जाती है, के तुमने मेरी बात सुनी और इताअत की, तुम्हें पुकारा गया तो तुमने मेरी आवाज़ पर लब्बैक कही।

3-आपका मकतूबे गिरामी (अपने क़ाज़ी शरीह के नाम)

कहा जाता है के अमीरूलमोमेनीन (अ0) के एक क़ाज़ी शरीह बिन अलहारिस ने आपके दौर में अस्सी दीनार का एक मकान ख़रीद लिया तो हज़रत ने खबर पाते ही उसे तलब कर लिया और फ़रमाया के मैंने सुना है तुमने अस्सी दीनार का मकान ख़रीद लिया है और उसके लिये सयामा (दस्तावेज़) भी लिखा है और इस पर गवाही भी ले ली है? शरीह ने कहा के ऐसा तो हुआ है। आपको गुस्सा आ गया और फ़रमाया

शरीह! अनक़रीब तेरे पास वह शख्स आने वाला है जो न इस तहरीर को देखेगा और न तुझे से गवाहों के बारे में सवाल करेगा बल्कि तुझे उस घर से निकाल कर तनो तन्हा क़ब्र के हवाले कर देगा। अगर तुमने यह मकान दूसरे के माल से ख़रीदा है और ग़ैर हलाल से कीमत अदा की है तो तुम्हें दुनिया और आख़िरत दोनों में ख़सारा होगा। (((-साहब आग़ानी ने इस वाक़ेए को

नक़ल किया है के अमीरूल मोमेनीन (अ0) का इख्तेलाफ़ एक यहूदी से हो गया जिसके पास आपकी ज़िरह थी, उसने काज़ी से फैसला कराने पर इसरार किया, आप यहूदी के साथ शरीह के पास आए, उसने आपसे गवाह तलब किये, आपने क़म्बर और इमाम हुसैन (अ0) को पेश किया, शरीह ने क़म्बर की गवाही कुबूल कर ली और इमाम हसन (अ0) की गवाही फ़रज़न्द होने की बिना पर रद कर दी, आपने फ़रमाया के रसूले अकरम (स0) ने उन्हें सरदार जवानाने जन्नत करार दिया है और तुम उनकी गवाही को रद कर रहे हो? लेकिन इसके बावजूद आपने फैसले का खयाल करते हुए ज़िरह यहूदी को दे दी। उसने वाक़े को निहायत दरजए हैरत की निगाह से देखा और फिर कलमए शहादतैन पढ़ कर मुसलमान हो गया। आपने ज़िरह के साथ उसे घोड़ा भी दे दिया और 900 दिरहम वज़ीफ़ा मुकर्रर कर दिया। वह मुस्तक़िल आपकी खिदमत में हाज़िर रहा यहां तक के सिफ़ीन में दरजए शहादत पर फ़ाएज़ हो गया। इस वाक़े से अन्दाज़ा होता है के इमाम अलैहिस्सलाम का किरदार क्या था और शरीह की बदनफ़सी का क्या आलम था और यहूदी के ज़र्फ़ में किस क़द्र सलाहियत पाई जाती थी।))))

याद रखो अगर तुम इस मकान को ख़रीदते वक़्त मेरे पास आते तो मुझसे दस्तावेज़ लिखवाते तो एक दिरहम में भी ख़रीदने के लिये तैयार न होते, अस्सी दिरहम तो बहुत बड़ी बात है। मैं उसकी दस्तवेज़ इस तरह लिखता-

यह वह मकान है जिससे एक बन्दाए ज़लील ने उस मरने वाले से ख़रीदा है जिसे कूच के लिये आमामादा कर दिया गया है। यह मकान दुनियाए पुरफ़रेब में वाक़ेअ है जहाँ फ़ना होने वालों की बस्ती है और हलाक होने वालों का इलाक़ा है, इस मकान के हुदूद राबइया हैं।

एक हद असबाबे आफ़ात की तरफ़ है और दूसरी असबाबे मसाएब से मिलती है, तीसरी हद हलाक कर देने वाली ख़्वाहिशात की तरफ़ है और चौथी गुमराह करने वाले शैतान की तरफ़ और इसी तरफ़ इस घर का दरवाज़ा खुलता है। इस मकान को उम्मीदों के फ़रेब ख़ोरदा ने अजल के राहगीर से ख़रीदा है जिसके ज़रिये क़नाअत की इज़ज़त से निकल कर तलब व ख़्वाहिश की ज़िल्लत में दाख़िल हो गया है। अब अगर इस ख़रीदार को इस सौदे में कोई ख़सारा हो तो यह उस ज़ात की ज़िम्मेदारी है जो बादशाहों के जिस्मों का तहो बाला करने वाला, जाबिरों की जान निकाल लेने वाला, फ़िरऔनों की सलतनत को तबाह कर देने वाला, कसरा व कैसर तबअ व हमीर और ज़्यादा से ज़्यादा माल जमा करने वालों, मुस्तहकम इमारतें बना कर उन्हें सजाने वालों, उनमें बेहतरीन फ़र्श बिछाने वालों और औलाद के ख़याल से ज़ख़ीरा करने वालों और जागीरें बनाने वालों को फ़ना के घाट उतार देने वाला है के इन सबको क़यामत के मौक़फ़ हिसाब और मन्ज़िले सवाब व अज़ाब में हाज़िर कर दे जब हक़ व बातिल का हतमी फैसला होगा और अहले बातिल यकीनन ख़सारे में होंगे। इस सौदे पर इस अक़ल ने गवाही दी है जो ख़्वाहिशात की कैद से आज़ाद और दुनिया की वाबस्तगीयों से महफूज़ है' (((-जब असहाबे जमल बसरा में वारिद हुए तो वहाँ के गवर्नर उस्मान बिन हनीफ़ ने आपके नाम एक ख़त लिखा जिसमें बसरा की सूरते हाल का ज़िक्र किया गया था। आपने इसके जवाब में तहरीर फ़रमाया के जंग में पहल करना हमारा काम नहीं है लेहाज़ा तुम्हारा पहला काम यह है के उन पर एतमामे हुज्जत करो फिर अगर इताअते इमाम (अ0) पर आमादा हो जाएं तो बेहतरीन बात है वरना तुम्हारे पास फ़रमाबरदार किस्म के अफ़राद मौजूद हैं, उन्हें साथ लेकर ज़ालिमों का मुक़ाबला करना और ख़बरदार जंग के मामले में किसी पर किसी किस्म का ज़ब्र न करना के जंग का मैदान कुरबानी का मैदान है और इसमें वही अफ़राद साबित क़दम रह सकते हैं जो जान व दिल से कुरबानी के लिये तैयार हों वरना अगर बादल न ख़्वास्ता फ़ौज इकट्ठा भी कर ली गई तो यह

खतरा बहरहाल रहेगा के यह ऐन वक़्त पर छोड़ कर फ़रार कर सकते हैं जिसका तजुर्बा तारीख़े इस्लाम में बारहा हो चुका है और जिसका सबूत खुद कुराने हकीम में मौजूद है।-)))

4 -आपका मकतूबे गिरामी (लशकर के कुछ सरदारों के नाम)

अगर दुश्मन इताअत के ज़ेरे साया आ जाएं तो यही हमारा मुद्दा है और अगर मुआमलात इफ़तेराक़ और नाफ़रमानी की मन्ज़िल ही की तरफ़ बढ़े तो तुम अपने इताअत गुज़ारों को लेकर नाफ़रमानों के मुक़ाबले में उठ खड़े हो और अपने फ़रमाबरदारों के वसीले से इन्हें फ़रार करने वालों से बेनियाज़ हो जाओ के बादल नाख्वास्ता हाज़िरी देने वालों की हाज़िरी से ग़ैबत बेहतर है (जो बददिली से साथ हो उसका न होना होने से बेहतर है) और उनका बैठ जाना ही उठ जाने से ज़्यादा मुफ़ीद है।

5- आपका मकतूबे गिरामी (आज़रबाईजान के गवर्नर अशअस बिन कैस के नाम)

यह तुम्हारा मन्सब कोई लुक़्मए तर नहीं है बल्कि तुम्हारी गर्दन पर अमानते इलाही है और तुम एक बलन्द हस्ती के ज़ेरे निगरानी हिफ़ाज़त पर मामूर हो, तुम्हें रिआया के मामले में इस तरह के एकदाम का हक़ नहीं है और ख़बरदार किसी मुस्तहक़म दलील के बग़ैर किसी बड़े काम में हाथ मत डालना, तुम्हारे हाथों में जो माल है यह भी परवरदिगार के असवाल का एक हिस्सा

है और तुम इसके जिम्मेदार हो जब तक मेरे हवाले न कर दो, बहरहाल शायद इस नसीहत की बिना पर मैं तुम्हारा बुरा वाली न हूंगा, वस्सलाम।

6- आपका मकतूबे गिरामी

देख मेरी बैअत उसी क्रौम ने की है जिसने अबूबकर व उमर व उस्मान की बैअत की थी और उसी तरह की है जिस तरह उनकी बैअत की थी, के न किसी हाज़िर को नज़रेसानी का हक़ था और न किसी ग़ायब को रद कर देने का इख्तेयार था। शूरा का इख्तेयार भी सिर्फ़ महाजेरीन व अन्सार को होता है लेहाज़ा वह किसी शख्स पर इत्तेफ़ाक़ कर लें और उसे इमाम नामज़द कर दे तो गोया के इसी में रिज़ाए इलाही है और अगर कोई शख्स तन्कीद करके या बिदअत की बुनियाद पर इस अम्र से बाहर निकल जाए तो लोगों का फ़र्ज़ है के इसे वापस दे दें और अगर इन्कार कर दे तो उससे जंग करें के इसने मोमेनीन के रास्ते से हट कर राह निकाली है और अल्लाह भी उसे उधर ही फेर देगा जिधर वह फिर गया है।

माविया! मेरी जान की कसम, अगर तू ख्वाहिशात को छोड़कर अक्ल की निगाहों में देखोगा तो मुझे सबसे ज़्यादा खूने उस्मान से मैं इस सिलसिले मसले से पाक दामन (बरी) पाएगा और तुझे मालूम हो जाएगा के मैं इस मसले से बिल्कुल अलग थलग था। मगर यह के तू हक़ाएक की परदा पोशी करके इल्ज़ाम ही लगाना चाहे तो तुझे मुकम्मल इख्तेयार है, (यह गुजिशता बैअतों की सूरते हाल की तरफ़ इशारा है वरना इस्लाम में खिलाफ़त शूरा से तै नहीं होती है-- जवादी)

7-आपका मकतूबे गिरामी

अम्माबाद! मेरे पास तेरी बेजोड़ नसीहतों का मजमुआ और तेरा खूबसूरत सजाया बनाया हुआ खत वारिद हुआ है जिसे तेरे गुमराही के कलम ने लिखा है और इस पर तेरी बेअकली ने इमज़ा किया है, यह एक ऐसे शख्स का खत है जिसके पास न हिदायत देने वाली बसीरत है और न रास्ता बताने वाली क़यादत, उसे ख्वाहिशात ने पुकारा तो उसने लब्बैक कह दी और गुमराही ने खींचा तो उसके पीछे चल पड़ा और इसके नतीजे में औल-फ़ौल बकने लगा और रास्ता भूलकर गुमराह हो गया। देख यह बैअत एक मरतबा होती है जिसके बाद न किसी को नज़रे सानी का हक़ होता है और न दोबारा इख्तेयार करने का। इससे बाहर निकल जाने वाला इस्लामी निज़ाम पर मोतरज़ शुमार किया जाता है और इसमें सोच विचार करने वाला मुनाफ़िक़ कहा जाता है। (((-अब्बास महमूद एकाद ने अबक़रीतुल इमाम (अ0) में इस हक़ीक़त का एलान किया है के खूने उस्मान की तमामतर जिम्मेदारी खुद माविया पर है के वह उनका तहफ़फ़ुज़ करना चाहता तो उसके पास तमामतर इमकानात मौजूद थे, वह शाम का हाकिम था और उसके पास एक अज़ीमतररीन फ़ौज मौजूद थी जिससे किसी तरह का काम लिया जा सकता था। इमाम अली (अ0) की यह हैसियत नहीं थी - आप पर दोनों तरफ़ से दबाव पड़ रहा था, इन्केलाबियों का खयाल था के अगर आप बैअत कुबूल कर लें तो उस्मान को ब-आसानी माज़ूल किया जा सकता है और उस्मान का खयाल था के आप चाहें तो इन्केलाबियों को हटाकर मेरे मन्सब का तहफ़फ़ुज़ कर सकते हैं और मेरी जान बचा सकते हैं। ऐसे हालात में हज़रत ने जिस ईमानी फ़रासत और इरफ़ानी हिकमत का मुज़ाहिरा किया है उससे ज़्यादा किसी फ़र्दे बशर के इमकान में नहीं था।-)))

8- आपका मकतूबे गिरामी (जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली के नाम जब

उन्हें माविया की फ़हमाइश के लिये रवाना फ़रमाया)

अम्माबाद- जब तुम्हें यह मेरा खत मिल जाए तो माविया से हतमी फ़ैसले का मुतालेबा कर देना (उसे दो टूक फ़ैसले पर आमादा करो, और उसे किसी आखिरी और क़तई राय का पाबन्द बनाओ और दो बातों में से किसी एक के इख्तेयार करने पर मजबूर करो), के घर से बेघर कर देने वाली जंग या रूसवा करने वाली सुलह, अगर वह जंग को इख्तेयार करे तो तमाम ताल्लुकात और गफ़्त व शनीद ख़तम कर दो और अगर सुलह चाहे तो उससे बैअत ले लो।

9- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)

हमारी क़ौम (कुरैश) का इरादा था के हमारे पैग़म्बर (स0) को क़त्ल कर दे और हमें जड़ से उखाड़ कर फेंक दे, उन्होंने हमारे बारे में रंजो ग़म के असबाब फ़राहम किये और हमसे तरह-तरह के बरताव किये, हमें राहत व आराम से रोक दिया और हमारे लिये मुख्तलिफ़ किस्म के हौफ़ का इन्तेज़ाम किया। कभी हमें नाहमवार पहाड़ों में पनाह लेने पर मजबूर किया और कभी हमारे लिये जंग की आग भड़का दी, लेकिन परवरदिगार ने हमें ताक़त दी के हम उनके दीन की हिफ़ाज़त करें और उनकी हु़रमत से हर तरह से दिफ़ाअ करें। हममें साहेबे ईमान अज़े आखिरत के तलबगार थे और कुफ़्रार अपनी अस्ल की हिमायत कर रहे थे। कुरैश में जो लोग मुसलमान हो गए थे वह इन मुश्किलात से आज़ाद थे या इसलिये के उन्होंने कोई हिफ़ाज़ती मुआहेदा कर लिया था या उनके पास क़बीला था जो उनके सामने खड़ा हो जाता था और वह क़त्ल से

महफूज़ रहते थे और रसूले अकरम (स0) का यह आलम था के जब जंग के शोले भड़क उठते थे और लोग पीछे हटने लगते थे तो आप अपने अहलेबैत (अ0) को आगे बढ़ा देते थे और वह अपने को सिपर बनाकर असहाब को तलवार और नैज़ों की गरमी से महफूज़ रखते थे। चुनांचे बद्र के दिन जनाबे उबैदा बिन अलहारिस मार दिये गए, ओहद के दिन हमज़ा शहीद हुए और मौतह में जाफ़र काम आ गए। एक शख्स ने जिसका नाम मैं बता सकता हूँ उन्हीं लोगों जैसी शहादत का क़स्द किया था लेकिन उन सब की मौत जल्दी आ गई और उसकी मौत पीछे टाल दी गई।

किस क़द्र ताज्जुबखेज़ है जमाने का यह हाल के मेरा मुक़ाबला ऐसे अफ़राद से होता है जो कभी मेरे साथ क़दम मिलाकर नहीं चले और न इस दीन में उनका कोई कारनामा है जो मुझसे मवाज़ना किया जा सके मगर यह के कोई मुद्दई किसी ऐसे शरफ़ का दावा करे जिसको न मैं जानता हूँ या “शायद” खुदा ही जानता है (यानी कुछ हो तो वह जाने) मगर हर हाल में खुदा का शुक्र है। रह गया तुम्हारा यह मुतालेबा के मैं कातिलाने उस्मान को तुम्हारे हवाले कर दूँ तो मैंने इस मसले में काफ़ी ग़ौर किया है। मेरे इमकान में उन्हें तुम्हारे हवाले करना है और न किसी और के, मेरी जान की क़सम अगर तुम अपनी गुमराही और अदावत से बाज़ न आए तो अनक़रीब उन्हें देखोगे के वह खुद तुम्हें ढूँढ लेंगे और इस बात की ज़हमत न देंगे के तुम उन्हें खुशकी या तरी, पहाड़ या सहारा में तलाश करो, अलबत्ता यह तलब होगी के जिसका हुसूल तुम्हारे लिये बाइसे मसरत न होगा (नागवारी का बाएस होगा) और वह मुलाक़ात होगी जिससे किसी तरह की खुशी न होगी और सलाम उसके अहल पर। (((-कुरैश की ज़िन्दगी का सारा इन्तेज़ाम क़बाइली बुनियादों पर चल रहा था और हर क़बीले को कोई न कोई हैसियत हासिल थी लेकिन इस्लाम के आने के बाद इन तमाम हैसियतों का खातेमा हो गया और इसके नतीजे

में सबने इस्लाम के खिलाफ़ इत्तेहाद कर लिया और मुख्तलिफ़ मारके भी सामने आ गए लेकिन परवरदिगारे आलम ने रसूले अकरम (स0) के घराने के ज़रिये अपने दीन को बचा लिया और इसमें कोई क़बीला भी इनका शरीक नहीं है और न किसी को यह शरफ़ हासिल है, न किसी क़बीले में कोई अबूतालिब जैसा मुहाफ़िज़ पैदा हुआ है और न उबैदा जैसा मुजाहिद, न किसी क़बीले ने हमज़ा जैसा सय्यदुश शोहदा पैदा किया है और न जाफ़र जैसा तय्यार यह सिर्फ़ बनी हाशिम का शरफ़ है और इस्लाम की गरदन पर उनके अलावा किसी का कोई एहसान नहीं है।-
)))

10- आपका मकतूबे गिरामी (माविया ही के नाम)

तुम उस वक़्त क्या करोगे जब दुनिया के यह लिबास जिनमें लिपटे हुए हो तुमसे उतर जाएंगे, यह दुनिया जो अपनी सज-धज की झलक दिखाती और अपने हज़ व कैफ़ से वरगलाती है जिसने तुम्हें पुकारा तो तुमने लब्बैक कही, उसने तुम्हें खींचा तो तुम उसके पीछे हो लिये और उसने तुम्हें हुक़्म दिया तो तुमने उसकी पैरवी की, वह वक़्त दूर नही के बताने वाला तुम्हें उन चीज़ों से आगाह करे के जिनसे कोई सिपर तुम्हें बचा न सकेगी, लेहाज़ा मुनासिब है के इस दावे से बाज़ आ जाओ और हिसाब व किताब का सामान तैयार कर लो, आने वाली मुसीबतों के लिये आरास्ता (तैयार) हो जाओ और गुमराहों को अपनी समाअत पर हावी न बनाओ वरना ऐसा न किया तो मैं तुम्हें इन तमाम चीज़ों से बाख़बर कर दूंगा जिनसे तुम गाफ़िल हो, तुम ऐश व इशरत के दिलदादह हो शैतान ने तुम्हें अपनी गिरफ़्त में ले लिया है और अपनी उम्मीदों को हासिल कर लिया है और तुम्हारे रग व पै में रूह और खून की तरह सरायत कर गया है।

माविया! आखिर तुम लोग कब रियाया की निगरानी के काबिल और उम्मत के मसाएल के वाली थे जबके तुम्हारे पास न कोई साबेका शरफ था और न कोई बलन्द व बाला इज्जत हम अल्लाह से तमाम दीरीना बदबख्तीयों से पनाह मांगते हैं और तुम्हें बाखबर करते हैं के खबरदार उम्मीदों के धोखे में और जाहिर व बातिन के इख्तेलाफ में मुब्तिला होकर गुमराही में दूर तक मत चले जाओ। तुमने मुझे जंग की दावत दी है तो बेहतर यह है के लोगों को अलग कर दो और बजाते खुद मैदान में आ जाओ, फरीकैन को जंग से माफ कर दो और हम तुम बराहे रास्त मुकाबला कर लें ताके तुम्हें मालूम हो जाए के किस के दिल पर रंग लग गया है और किस की आंखों पर परदे पड़े हुए हैं। मैं वही अबुलहसन हूँ जिसने रोझे बद्र तुम्हारे नाना (उतबा) मामू (वलीद बिन उतबा) और भाई हन्ज़ला का सर तोड़कर खात्मा कर दिया है। (((-इस मुक़ाम पर सियासत से मुराद सियासते आदिला और आयते कामेला है के इस काम का अन्जाम देना हर कस व नाकस के बस का नहीं है वरना सियासत से मक्कारी, दगाबाज़ी और गद्वारी मुराद ली जाए तो बनी उमय्या हमेशा से सियासत के मुराद थे और अबू सुफयान ने हर महाज़ पर इस्लाम के खिलाफ लशकरकशी की है और इस राह में किसी भी मौके को नज़र अन्दाज़ नहीं किया है। कभी मैदानों में मुकाबला किया है और कभी बैअत करके इस्लाम का सफ़ाया किया है। हज़रत का यह वह मुतालेबा था जिसकी अम्र व आस ने भी ताईद कर दी थी लेकिन माविया फ़ौरन ताड़ गया और उसने कहा के तू खिलाफ़त का उम्मीदवार दिखाई दे रहा है और फिर मैदान का रूख करने का इरादा भी नहीं किया के अली की तलवार से बच कर निकल जाना मुहालात में से है।-)))

अभी वह तलवार मेरे पास है और मैं उसी हिम्मत के क़ल्ब के साथ दुश्मन का मुकाबला करूंगा, मैंने न दीन तब्दील किया है और न नया नबी खड़ा किया है और मैं बिला शुबह उसी

शाहेराह पर हूँ जिसे तुमने अपने इख्तेयार से छोड़ रखा था और फिर ब-मजबूरी इसमें दाखिल हुए और तुम ऐसा ज़ाहिर करते हो के तुम खून उस्मान का बदला लेने को उठे हो हालांके तुम्हें अच्छी तरह मालूम है के उनका खून किसके सर है, अगर वाकई बदला ही लेना मन्ज़ूर है तो उन्हीं से लो। मुझे तो यह मन्ज़र नज़र आ रहा है के जंग तुम्हें दांतों से काट रही है और तुम इस तरह फ़रयाद कर रहे हो जिस तरह ऊंट भारी बोझ से बिलबिलाने लगते हैं और तुम्हारी जमाअत मुसलसल तलवार की ज़र्ब और मौत की गर्म बाज़ारी और क़ज़ा और कशतों के पुशते लग जाने की बिना पर मुझे किताबे खुदा की तरफ़ दावत दे रही होगी, हालांके वह ऐसे लोग हैं जो काफ़िर और हक़ के मुनकिर हैं या बैअत के बाद उसे तोड़ देने वाले हैं।

11- आपका मकतूबे गिरामी (दुश्मन की तरफ़ भेजे हुए एक लशकर को यह हिदायतें फ़रमाईं)

जब तुम दुश्मन की तरफ़ बढ़ो या दुश्मन तुम्हारी तरफ़ बढ़े तो तुम्हारा पड़ाव टीलों के आगे या पहाड़ के दामन में या नहरों के मोड़ में होना चाहिये ताके यह चीज़ तुम्हारे लिये पुशत पनाही और रोक का काम दे और जंग बस एक तरफ़ या (ज़ाएद से ज़ाएद दो तरफ़ से हो) और पहाड़ों की चोटियों और टीलों की बलन्द सतहों पर दीदबानों को बिठा दो ताके दुश्मन किसी खटके की जगह से या इत्मीनान वाली जगह से (अचानक) न आ पड़े और उसको जाने रहो के फ़ौज का हर अक्वल दस्ता फ़ौज का खबर रसाँ होता है और हर अक्वल दस्ते को इत्तेलाआत उन मुखबिरों से हासिल होती है (लोग आगे बढ़ कर सुराग़ लगाते हैं) देखो तितर-बितर होने से बचे रहो, उतरो तो एक साथ उतरो, और कूच करो तो एक साथ करो और जब रात तुम पर छा जाए तो नैज़ों

को (अपने गिर्द) गाड़कर एक दाएरा सा बना लो और सिर्फ़ उंघ लेने और एक-आध झपकी ले लेने के सिवा नीन्द का मज़ा न चखो।

12- आपकी नसीहत (जो माक़ल बिन कैस रियाही को उस वक़्त फ़रमाई है जब उन्हें तीन हज़ार का लशकर देकर शाम की तरफ़ रवाना फ़रमाया है)

उस अल्लाह से डरते रहना जिसकी बारगाह में बहरहाल हाज़िर होना है और जिसके अलावा कोई आखिरी मन्ज़िल नहीं है, जंग उसी से करना जो तुमसे जंग करे, ठण्डे औकात में सुबह व शाम सफ़र करना और गरमी के वक़्त में काफ़िले को रोक कर लोगों को आराम करने देना। (((- यह वह हिदायात हैं जो हर दौर में काम आने वाली हैं और काएदे इस्लाम का फ़र्ज़ है के जिस दौर में जिस तरह का मैदान और जिस तरह के असलहे हों उन सब की तन्ज़ीम इन्हीं उसूलों की बुनियाद पर करे जिनकी तरफ़ अमीरूल मोमेनीन (अ0) ने दौरे नैज़ा व शमशीर में इशारा फ़रमाया है। हालात और असलहों के बदल जाने से उसूले हर्ब व ज़र्ब और क़वानीने जेहाद व केताल में फ़र्क नहीं हो सकता है-)))

आहिस्ता सफ़र करना और अक्वले शब में सफ़र मत करना के परवरदिगार ने रात को सुकून के लिये बनाया है और उसे क़याम के लिये करार दिया है, सफ़र के लिये नहीं, लेहाज़ा रात में अपने बदन को आराम देना और अपनी सवारी के लिये सूकून फ़राहम करना, उसके बाद जब देख लेना के सहर तुलूअ हो रही है और सुबह रौशन हो रही है तो बरकते खुदा के सहारे उठ

खड़े होना और जब दुश्मन का सामना हो जाए तो अपने असहाब के दरम्यान ठहरना और न दुश्मन से इस कदर करीब हो जाना के जैसे जंग छेड़ना चाहते हो और न इस कदर दूर हो जाना के जैसे जंग से खौफ़ज़दा हो, यहां तक के मेरा हुक्म आ जाए और देखो खबरदार दुश्मन की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर आमादा न कर दे के उसे हक़ की दावत देने और हुज्जत तमाम करने से पहले जंग का आगाज़ कर दो।

13-आपकी नसीहत

मैंने तुम पर और तुम्हारे मातहत लशकर पर मालिक बिन अलहारिस अल अशतर को सरदार करार दे दिया है लेहाज़ा उनकी बातों पर तवज्जोह देना और उनकी इताअत करना और उन्हीं को अपनी ज़िरह और सिपर करार देना के मालिक उन लोगों में हैं जिनकी कमज़ोरी और लज़िश का कोई खतरा नहीं है और न वह इस मौक़े पर सुस्ती कर सकते हैं जहां तेज़ी ज़्यादा मुनासिब हो, और न वहां तेज़ी कर सकते हैं जहां सुस्ती उमदा करीने अक़ल हो। (((-यह सारी हिदायात माक़ल बिन कैस के बारे में हैं जिन्हें आपने तीन हज़ार अफ़राद का सरदारे लशकर बनाकर भेजा था और ऐसे हिदायात से मसलेह फ़रमा दिया था जो सुबहे क़यामत तक काम आने वाली हों और हर दौर का इन्सान उनसे इस्तेफ़ाज़ा कर सके। मालिके अशतर उन लोगों में हैं जिन्होंने अबूज़र के गुस्ल व कफ़न का इन्तेज़ाम किया था जिनके बारे में रसूले अकरम (स0) ने फ़रमाया था के मेरा एक सहाबी आलमे ग़ुरबत में इन्तेक़ाल करेगा और साहेबाने ईमान की एक जमाअत इसकी तजहीज़ व तकफ़ीन का इन्तेज़ाम करेगी।-)))

14- हिदायत (अपने लशकर के नाम सिफ़ीन की जंग के आगाज़ से पहले)

खबरदार! उस वक़्त तक जंग शुरू न करना जब तक वह लोग पहल न कर दें के तुम बेहम्दे अल्लाह अपनी दलील रखते हो और उन्हें उस वक़्त तक का मौक़ा देना जब तक पहल न कर दें, एक दूसरी हुज्जत हो जाए, इसके बाद जब हुक़मे खुदा से दुश्मन को शिकस्त हो जाए तो किसी भागने वाले को क़त्ल न करना और किसी आजिज़ को हलाक न करना और किसी ज़ख्मी पर क़ातिलाना हमला न करना और औरतों को अज़ीयत मत देना चाहे वह तुम्हें गालियां ही क्यों न दें और तुम्हारे हुक़ाम को बुरा भला ही क्यों न कहें के यह कूवते नफ़्स और अक़ल के एतबार से कमज़ोर हैं और हम पैग़म्बर (स0) के ज़माने में भी उनके बारे में हाथ रोक लेने पर मामूर थे। जबके वह मुशरिक थीं और उस वक़्त भी अगर कोई शख्स औरतों से पत्थर या लकड़ी के ज़रिये तारज़ करता था तो उसे और उसकी नस्लों को मतऊन किया जाता था। (((-यह दलील सूरे हिजरात की आयत नम्बर 9 है जिसमें बागी से क़ेताल का हुक़म दिया गया है और इसमें कोई शक नहीं है के माविया और उसकी जमाअत बागी थी जिसकी तसदीक़ जनाबे अम्मारे यासिर की शहादत से हो गई, जिनके क़ातिल को सरकारे दो आलम (स0) ने बागी करार दिया था-)))

15-आपकी दुआ (जिसे दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त दोहराया करते थे)

खुदाया तेरी ही तरफ़ दिल खिंच रहे हैं और गर्दन उठी हुई हैं और आंखें लगी हुई हैं और कदम आगे बढ़ रहे हैं और बदन लाग़र हो चुके हैं।

खुदाया छिपे हुए कीने सामने आ गए हैं और अदावतों की देगें जोश खाने लगी हैं। खुदाया हम तेरी बारगाह में अपने रसूल की ग़ैबत और दुश्मनों की कसरत की और ख्वाहिशात के तफ़रिक्के की फ़रयाद कर रहे हैं। खुदाया हमारे और दुश्मनों के दरम्यान हक़ के साथ फ़ैसला कर दे के तू बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

16- आपका मक़तूब गिरामी (जो जंग के वक़्त अपने असहाब से फ़रमाया करते थे)

खबरदार तुम पर वह फ़रार गराँ न गुज़रे जिसके बाद हमला करने का इमकान हो और वह पसपाई परेशान कुन न हो जिसके बाद दोबारा वापसी का इमकान हो, तलवारों को उनका हक़ दे दो और पहलू के भल गिरने वाले दुश्मनों के लिये मक़तल तैयार रखो, अपने नफ़स को शदीद नैज़ाबाज़ी और सख़्त तरीन शमशीरज़नी के लिये आमादा रखो और आवाज़ों को मुर्दा बना दो के इससे कमज़ोरी दूर हो जाती है, क़सम है उस ज़ात की जिसने दाने को शिगाफ़ता किया है और जानदार चीज़ों को पैदा किया है के यह लोग इस्लाम नहीं लाए हैं बल्कि हालात के सामने सिपर अन्दाख़ता हो गए हैं और अपने कुफ़र को छिपाए हुए हैं और जैसे ही मददगार मिल गए वैसे ही

इज़हार कर दिया। (((-इसमें कोई शक नहीं के मैदाने जंग में ऐसे हालात आ जाते हैं जब सिपाही को अपनी जगह छोड़ना पड़ती है और एक तरह से फ़रार का रास्ता इख़तेयार करना पड़ता है, लेकिन इसमें कोई इश्काल नहीं है बशर्ते के हौसलाए जेहाद बरकरार रहे और जज़बाए कुरबानी में फ़र्क न आए। मैदाने ओहद का सबसे बड़ा ऐब यही था के “सहाबाए कराम” जज़बाए कुरबानी से आरी हो गए थे और रसूले अकरम (स0) के पुकारने के बावजूद पलट कर आने के लिये तैयार न थे ऐसी सूरते हाल यकीनन इस काबिल है के उसकी मज़म्मत की जाए और यह नंग व आर नस्लों में बाक़ी रह जाए वरना फ़रार के बाद हमला या पस्पाई के बाद वापसी कोई ऐसी बात नहीं है जिस पर मज़म्मत या मलामत की जाए।-)))

17-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम उसके एक ख़त के जवाब में)

तुम्हारा यह मुतालबा के मैं शाम का इलाका तुम्हारे हवाले कर दूँ तो जिस चीज़ से कल इनकार कर चुका हूँ वह आज अता नहीं कर सकता हूँ और तुम्हारा यह कहना के जंग ने अरब का खातेमा कर दिया है और चन्द एक अफ़राद के अलावा कुछ नहीं बाक़ी रह गया है तो याद रखो के जिसका ख़ात्मा हक़ पर हुआ है उसका अन्जाम जन्नत है और जिसे बातिल खा गया है उसका अन्जाम जहन्नम है। रह गया हम दोनों का जंग और शख़िसयात के बारे में बराबर होना, तो तुम शक में इस तरह तेज़ रफ़्तारी से काम नहीं कर सकते हो जितना मैं यकीन में कर सकता हूँ और अहले शाम दुनिया के बारे में इतने हरीस नहीं हैं जिस क़द्र अहले इराक़ आखिरत के बारे में फ़िक्रमन्द हैं। और तुम्हारा यह कहना के हम सब अब्दे मुनाफ़ की औलाद हैं तो यह

बात सही है लेकिन न उमय्या हाशिम जैसा हो सकता है और न हर्ब अब्दुलमुत्तलिब जैसा, न अबू सुफ़ियान अबूतालिब का हमसर हो सकता है और न राहे खुदा में हिजरत करने वाला आज़ाद कर्दा अफ़राद जैसा। न वाज़ेह नसब वाले का क़यास शजरे से चिपकाए जाने वाले पर हो सकता है और न हक़दार को बातिल नवाज़ जैसा करार दिया जा सकता है। मोमिन कभी मुनाफ़िक़ के बराबर नहीं रखा जा सकता है, बदतरीन औलाद तो वह है जो इस सल्फ़ के नक़्शे क़दम पर चले जो जहन्नम में गिर चुका है। इसके बाद हमारे हाथों में नबूवत का शरफ़ है जिसके ज़रिये हमने बातिल के इज़ज़तदारों को ज़लील बनाया है और हक़ के कमज़ोरों को ऊपर उठाया है और जब परवरदिगार ने अरब को अपने दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल किया है और यह क़ौम बख़ुशी या ब-कराहत (नाख़ुशी से) मुसलमान हुई है तो तुम उन्हें दीन के दायरे में दाख़िल होने वालों में थे या ब-रग़बत (लालच से) या ब-ख़ौफ़ जबके सबक़त हासिल करने वाले सबक़त हासिल कर चुके थे और मुहाजेरीन अक्वलीन अपनी फ़ज़ीलत पा चुके थे, देखो ख़बरदार शैतान को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सेदार मत बनाओ और उसे अपने नफ़्स पर राह मत दो, वस्सलाम। (((-माविया ने अपने ख़त में चार नुक्ते उठाए थे और हज़रत ने सबके अलग-अलग जवाबात दिये हैं और हक़ व बातिल का अबदी फ़ैसला कर दिया है और आख़िर में यह भी वाज़ेह कर दिया है के तमाम मुआमलात में मसावात फ़र्ज़ कर लेने के बाद भी शरफ़े नबूवत का कोई मुक़ाबला नहीं हो सकता है जो परवरदिगार ने बनी हाशिम को अता किया है है और इसका बनी उमय्या से कोई ताल्लुक नहीं है। और ज़ाती किरदार के एतबार से भी बनी हाशिम इस्लाम की मन्ज़िल पर फ़ाएज़ थे और बनी उमय्या ने फतहे मक्का के मौक़े पर मजबूरन कलमा पढ़ लिया था और ज़ाहिर है के अस्तसलाम इस्लाम के मानिन्द नहीं हो सकता है-)))

18- हज़रत का मकतूबे गिरामी (बसरा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन

अब्बास के नाम)

याद रखो के यह बसरा इबलीस के उतरने और फ़ितनों के उभरने की जगह का नाम है लेहाज़ा यहाँ के लोगों के साथ अच्छा बरताव करना और उनके दिलों से ख़ौफ़ की गिरह खोल देना। मुझे यह ख़बर मिली है के तुम बनी तमीम के साथ सख़्ती से पेश आते हो और उनसे सख़्त क़िस्म का बरताव करते हो तो याद रखो के बनी तमीम वह लोग हैं के जब उनका कोई सितारा डूबता है तो दूसरा उभर आता है, यह जंग के मामले में जाहेलीयत या इस्लाम कभी किसी से पीछे नहीं रहे हैं और फिर हमारा उनसे रिश्तेदारी और क़राबतदारी का ताल्लुक भी है के अगर हम इसका ख़याल रखेंगे तो अज़्र पाएंगे और क़तअ ताल्लुक करेंगे तो गुनहगार होंगे, लेहाज़ा इब्ने अब्बास ख़ुदा तुम पर रहमत नाज़िल करे, उनके साथ अपनी ज़बान या हाथ पर जारी होने वाली अच्छाई या बुराई में सोच-समझ कर क़दम उठाना के हम दोनों इन ज़िम्मेदारियों में शरीक हैं, और देखो तुम्हारे बारे में हमारा हुस्ने ज़न बरकरार रहे और मेरी राय ग़लत न साबित होने पाए।

19- आपका मकतूबे गिरामी (अपने बाज़ गवर्नरो के नाम)

अम्माबाद! तुम्हारे शहर के ज़मीनदारों ने तुम्हारे बारे में सख़्ती, संगदिली, तहक़ीर व तज़लील और तशद्दुद की शिकायत की है और मैंने उनके बारे में ग़ौर कर लिया है, वह अपने शिर्क की बिना पर क़रीब करने के क़ाबिल तो नहीं हैं लेकिन अहद व पैमान की बिना पर उन्हें दूर भी

नहीं किया जा सकता है और उन पर ज़्यादाती भी नहीं की जा सकती है लेहाज़ा तुम नके बारे में ऐसी नरमी का शोआर इख्तेयार करो जिसमें क़द्र से (कहीं-कहीं) सख्ती भी शामिल हो और उनके साथ सख्ती और नरमी के दरम्यान का बरताव करो के कभी करीब कर लो, कभी दूर कर दो, कभी नज़दीक बुला लो और कभी अलग रखो, इन्शाअल्लाह।

20-आपका मकतूबे गिरामी (ज़ियाद बिन अबिया के नाम)

जो बसरा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अब्बास का नायब हो गया था और इब्ने अब्बास बसरा और अहवाज़ के तमाम एतराफ़ के गवर्नर थे)

मैं अल्लाह की सच्ची क़सम खाकर कहता हूँ के अगर मुझे खबर मिल गई के तुमने मुसलमानों के माले ग़नीमत में छोटी या बड़ी क़िस्म की ख़यानत की है तो मैं तुम पर ऐसी सख्ती करूंगा के तुम नादार, बोझिल पीठ वाले और बेनंग व नाम (बेआबरू) होकर रह जाओगे। वस्सलाम। (((-वाज़ेह रहे के किसी का करीब कर लेना और है और उसके साथ आदिलाना और मुनसिफ़ाना बरताव करना और है, इस्लाम आदिलाना बरताव का हुक़म हर एक के बारे में देता है लेकिन कुरबत का जवाज़ सिर्फ़ साहिबाने ईमान व किरदार के लिये है) कुफ़्रार व मुशारेकीन को तो उसने हरमे खुदा से भी दूर कर दिया है और उनका दाखिला हुदूदे हरम में बन्द कर दिया है, यह और बात है के आज आलमे इस्लाम में कुफ़्रार व मुशारेकीन ही करीब बनाए जाने के काबिल हैं और कलमागो मुसलमान इस लाएक नहीं रह गए हैं और उनसे सुबह व शाम सर्द जंग सिर्फ़ कुफ़्रार व मुशारेकीन से कुरबत पैदा करने या बरकरार रखने की बुनियाद पर की जा रही है, अल्लाह इस इस्लाम पर रहम करे और इस उम्मत को अक़ले सलीम इनायत फ़रमाए।

वाज़ेह रहे के हज़रत इख्तेयारी तौर पर किसी ऐसे शख्स को ओहदा नहीं दे सकते हैं जिसका नसब मशकूक हो, यह काम इब्ने अब्बास ने ज़ाती तौर पर किया था, इसीलिये हज़रत ने नेहायत ही सख्त लहजे में खिताब फ़रमाया है-)))

21-आपका मकतूबे गिरामी (ज़ियाद इब्ने अबिया के नाम)

इसराफ़ को छोड़कर मयानारवी इख्तेयार करो और आज के दिन कल को याद रखो, बक्रदे ज़रूरत माल रोक कर बाक़ी रोज़े हाजत (मोहताजी के दिन) के लिये आगे बढ़ा दो (फ़ुज़ूल खर्ची से बाज़ आओ)। क्या तुम्हारा खयाल यह है के तुम मुतकब्बिरों में रहोगे और खुदा तुम्हें मुतवाज़ेह अफ़राद जैसा अज़्र देगा या तुम्हारे वास्ते सदक़ा व ख़ैरात करने वालों का सवाब लाज़िम करार देगा और तुम नेमतों में करवटें बदलते रहोगे, न किसी कमज़ोर का खयाल करोगे और न किसी बेवा का जबके इन्सान को उसी का अज़्र मिलता है जो उसने अन्जाम दिया है और वह उसी पर वारिद होता है जो उसने पहले भेज दिया है, वस्सलाम।

22-आपका मकतूबे गिरामी

(अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम, जिसके बारे में खुद इब्ने अब्बास का मक़ैला था

के मैंने रसूले अकरम (स0) के बाद किसी कलाम से इस क़द्र इस्तेफ़ादा नहीं किया है जिस क़द्र इस कलाम से किया है)

अम्माबाद! कभी कभी ऐसा होता है के इन्सान उस चीज़ को पाकर भी खुश हो जाता है जो उसके हाथ से जाने वाली नहीं थी और उस चीज़ के चले जाने से भी रन्जीदा हो जाता है जो उसे मिलने वाली नहीं थी लेहाज़ा तुम्हारा फ़र्ज़ है के उस आखिरत पर खुशी मनाओ जो हासिल हो जाए और उस पर अफ़सोस करो जो इसमें से हासिल न हो सके, दुनिया हासिल हो जाए तो इस पर ज़्यादा खुशी का इज़हार न करो और हाथ से निकल जाए तो बेकरार होकर अफ़सोस न करो, तुम्हारी तमामतर फ़िक्र मौत के बाद के बारे में होनी चाहिये।

23- आपका इरशादे गिरामी (जिसे अपनी शहादत से पहले बतौर वसीयत फ़रमाया है)

तुम सबके लिये मेरी वसीयत यह है के ख़बरदार खुदा के बारे में किसी तरह का शिर्क न करना और हज़रत मोहम्मद (स0) की सुन्नत को ज़ाया और बरबाद न करना इन दोनों को कायम रखो और इन दोनों पर चिराग़ों को रौशन रखो, इसके बाद किसी मज़म्मत का कोई अन्देशा नहीं है। मैं कल तुम्हारे साथ था और आज तुम्हारे लिये इबरत बन गया हूँ और कल तुमसे जुदा हो जाऊंगा, इसके बाद मैं बाक़ी रह गया तो अपने खून का साहबे इख़तेयार मैं खुद हूँ वरना अगर मेरी मुद्दते हयात पूरी हो गई तो मैं दुनिया से चला जाऊंगा। मैं अगर माफ़ कर दूँ तो यह मेरे लिये कुरबते इलाही का ज़रिया होगा और तुम्हारे हक़ में भी एक नेकी होगी लेहाज़ा तुम भी माफ़ कर देना “क्या तुम नहीं चाहते हो के अल्लाह तुम्हें बख़्श दे” खुदा की कसम यह अचानक मौत ऐसी नहीं है जिसे मैं नापसन्द करता हूँ और न ऐसा सानेहा है जिसे मैं बुरा समझता हूँ, मैं उस शख़्स के मानिन्द हूँ जो रात भर पानी की जुस्तजू में रहे और सुबह को

चश्मे पर वारिद हो जाए और तलाश के बाद अपने मकसद को पा ले और फिर “खुदा की बारगाह में जो कुछ भी है वह नेक किरदारों के लिये बेहतर ही है।”

सय्यद रज़ी- इस कलाम का एक हिस्सा पहले गुज़र चुका है लेकिन यहाँ कुछ इज़ाफ़ात थे लेहाज़ा मुनासिब मालूम हुआ के उसे दोबारा नक़ल कर दिया जाए।(((--वाज़ेह रहे के इस माफ़ी से मुराद दुनिया में इन्तेक़ाम न लेना है के क़ातिल के जुर्म की दो हैसियतें होती हैं- वह इन्सानी दुनिया में एक खून का ज़िम्मेदार होता है जिसके नतीजे में क़सास का क़ानून सामने आता है और मज़हबी दुनिया में हुक्मे इलाही की मुखालेफ़त का मुजरिम होता है जिसका अन्जाम आतिशे जहन्नम है। दुनिया के क़सास व इन्तेक़ाम में फ़सादात के अन्देशे होते हैं और अदावतों के शोले मज़ीद भड़क उठते हैं लेकिन आख़िरत के अज़ाब में कोई ख़तरा नहीं होता है। इसलिये साहेबाने अक़ल व दानिश यहाँ के इन्तेक़ाम को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं ताके मज़ीद फ़साद न पैदा हो सके और इस बात से मुतमईन रहते हैं के मुजरिम के लिये अज़ाबे जहन्नम ही काफ़ी है और खुदा से बेहतर इन्तेक़ाम लेने वाला कौन है?-)))

24- आपकी वसीयत (अपने अमवाल के बारे में जिसे जंगे सिफ़्फ़ीन की वापसी पर तहरीर फ़रमाया है)

यह बन्दए खुदा, अली बिन अबीतालिब (अ0) अमीरूलमोमेनीन का हुक्म है अपने अमवाल के बारे में जिसका मक़सद रिज़ाए परवरदिगार है ताके उसके ज़रिये जन्नत में दाख़िल हो सके और रोज़े महशर के हौल से अमान पा सके। इन अमवाल की निगरानी हसन (अ0) बिन अली करेंगे, बक़द्रे ज़रूरत इस्तेमाल करेंगे और बक़द्रे मुनासिब अनफ़ाक़ करेंगे। इसके बाद अगर उन्हें कोई

हादसा पेश आ गया और हुसैन (अ0) बाकी रह गए तो जिम्मेदार वह होंगे और इसी अन्दाज़ पर काम करेंगे। औलादे फ़ातेमा (अ0) का हक़ अली (अ0) के सदक़ात में वही है जो दीगर औलादे अली (अ0) का है, मैंने निगरानी का काम औलादे फ़ातेमा (अ0) को सिर्फ़ रिज़ाए इलाही और कुरबते पैग़म्बर (स0) के ख़याल से सौंप दिया है के इस तरह हज़रत की हुर्मत का एहतेराम भी हो आएगा और आपकी कराबत का एज़ाज़ भी बरकरार रहेगा। लेकिन इसके बाद भी वाली के लिये यह शर्त है के माल की असल को बाकी रखे और सिर्फ़ इसके समरात को खर्च करे, वह भी उन राहों में जिनका हुक़म दिया गया है और जिनकी हिदायत दी गई है और ख़बरदार इस करिया के नखलिस्तान में से एक पौदा भी फ़रोख़्त न करे यहां तक के वह ज़मीन में दोबारा बोने के लाएक न रह जाए। मेरी वह कनीज़ें जिनसे मेरा ताल्लुक़ रह चुका है और उनकी औलाद भी मौजूद है या वह हामेला हैं, उनको उनकी औलाद के हिसाब से (बच्चे के हक़ में) रोक लिया जाए और उन्हीं का हिस्सा करार दे दिया जाए (वह उसके हिस्से में शुमार होगी)। इसके बाद अगर बच्चा मर जाए और कनीज़ जिन्दा रह जाए तो उसे आज़ाद कर दिया जाए के गोया इसकी गुलामी ख़त्म हो चुकी है और आज़ादी हासिल हो चुकी है। सय्यद रज़ी- इस वसीयत में हज़रत का इरशाद “वदिया भी फ़रोख़्त न किया जाए” इसमें वदिया से मुराद ख़ुर्मा के छोटे दरख़्त हैं जिसकी जमा वदी होती है और “हती तशक़ल अरज़हा ग़रासा” एक फ़सीहतरीन कलाम है जिसका मक़सद यह है के ज़मीन में खज़ूर की दरख़्तकारी इतनी ज़्यादा हो जाए के देखने वाला इसकी असल हैसियत का अन्दाज़ा न कर सके और इसके लिये मसलए मुश्तबा हो जाए के शायद यह कोई दूसरी ज़मीन है। (((मोअर्रेख़ीन के बयान के मुताबिक़ अमीरूलमोमेनीन (अ0) ने अपनी जिन्दगी में सिर्फ़ अरवाह व नुफ़ूस की सरज़मीनों को जिन्दा करने का काम अन्जाम नहीं दिया है, बल्कि मादी ज़मीनों में भी मुसलसल काम करते रहे हैं, ज़मीनों को काबिले काश्त बनाया है, चश्मों को जारी किया है, दरख़्तों की सिंचाई की है और एक मज़दूर

जैसी ज़िन्दगी गुजारी है और फिर अपनी सारी ज़हमतों और मेहनतों के नतीजे को राहे खुदा में वक़फ़ कर दिया है ताके बन्दगाने खुदा इस्तेफ़ादा कर सकें और औलादे अली (अ0) भी सिर्फ़ बक़द्रे ज़रूरत फ़ायदा उठा सके, ऐसा किरदार अब सिर्फ़ कागज़ात पर रह गया है वरना इसका वजूद दुनिया से अनक़ा हो चुका है अली (अ0) वालों में देखने में नहीं आता है। सरबराहाने ममलिकत फोटो खींचवाने के लिये हाथ में फावड़ा और कुदाल ले लेते हैं वरना उन्हें ज़राअत से क्या ताल्लुक है, ज़मीनों का ज़िन्दा रखना अबूतुराब का काम था और उन्होंने इसका हक़ अदा कर दिया। बाकी सब दास्तानें हैं जो सफ़हे करतास पर महफूज़ कर दी गई हैं और उनमें रोशनाई की चमक है, किरदार और हकीकत की रोशनी नहीं है।-)))

25-आपकी वसीयत (जिसे हर उस शख्स को लिख कर देते थे जिसे सदक़ात का आमिल करार देते थे)

सय्यद रज़ी- मैंने यह चन्द जुमले इसलिये नक़ल कर दिये हैं ताके हर शख्स को अन्दाज़ा हो जाए के हज़रत किस तरह सुतूने हक़ को कायम रखते थे

और हर छोटे बड़े और पोशीदा व ज़ाहिर उमूर में अद्ल के नमूने कायम फ़रमाते थे।

खुदाए वहदहू लाशरीक का खौफ़ लेकर आगे बढ़ो और खबरदार न किसी मुसलमान को खौफ़ज़दा करना और न किसी की ज़मीन पर जबरन अपना गुज़र करना और जितना उसके माल में अल्लाह का हक़ निकलता हो उससे ज़र्रा बराबर ज़ायद (ज़्यादा) न लेना, और जब किसी कबीले पर वारिद होना तो उनके घरों में घुसने के बजाए पहले उनके चश्मे और कनवीं पर

वारिद होना और उसके बाद सुकून व वेकार के साथ उनकी तरफ़ जाना और उनके दरम्यान खड़े होकर सलाम करना और सलाम करने में कंजूसी से काम न लेना, इसके बाद उन से कहना के बन्दगाने खुदा मुझे तुम्हारी तरफ़ परवरदिगार के वली और जानशीन ने भेजा है ताके में तुम्हारे अमवाल में से परवरदिगार का हक़ ले लूँ तो क्या तुम्हारे अमवाल में कोई हक़के अल्लाह है जिसे मेरे हवाले कर सको? अगर कोई शख्स इन्कार कर दे तो उससे ज़्यादा तकरार न करना और अगर कोई शख्स इकरार करे तो उसके साथ इस अन्दाज़ से जाना के न किसी को खौफ़ज़दा करना न धमकी देना, न सख़्ती का बरताव करना और न बेजा दबाव डालना जो सोना या चान्दी दे दें वह ले लेना और अगर चैपाया या ऊंट हों तो उनके मरकज़ पर अचानक बिला इजाज़त वारिद न हो जाना के ज़्यादा हिस्सा तो मालिक ही का है, उसके बाद जब चैपायों के मरकज़ तक पहुंच जाना तो किसी ज़ालिम व जाबिर की तरह दाखिल न होना न किसी जानवर को भड़का देना और न किसी को खौफ़ज़दा कर देना और मालिक के साथ भी ग़लत बरताव न करना बल्कि माल को दो हिस्सों में तक़सीम करके मालिक को इख़तेयार देना के वह जिस हिस्से को इख़तेयार कर ले उस पर कोई एतराज़ न करना, फिर बाक़ी को दो हिस्सों पर तक़सीम करना और उसे इख़तेयार देना और फिर उसके हिस्से पर एतराज़ न करना, यहांतक के उतना ही माल बाक़ी रह जाए जिससे हक़के खुदा अदा हो सकता है तो इसी को ले लेना बल्कि अगर कोई शख्स पहले इन्तेखाब को मुस्तर्द करके दोबारा इन्तेखाब करना चाहे तो उसे इसका मौक़ा दो और सारे माल को मिलाकर फिर पहले की तरह तक़सीम करना और आखिर में इस बचे माल में से हक़के अल्लाह ले लेना, बस इसका खयाल रखना के बूढ़ा, ज़ईफ़ कमर शिकस्ता, कमज़ोर और ऐबदार ऊंट न लेना और उन ऊंटों का अमीन भी उसी को बनाना जिसके दीन का एतबार हो और जो मुसलमानों के माल में नर्मि का बरताव करता हो। ताके वह वली तक माल पहुंचा दे और वह उनके दरम्यान तक़सीम कर दे, इस मौजू पर सिर्फ़ उसे वकील बनाना जो मुखलिस,

खुदातरस अमानतदार और निगराँ हो, न सख्ती करने वाला हो, न जुल्म करने वाला, न थका देने वाला हो न शिद्दत से दौडाने वाला, इसके बाद जिस कद्र माल जमा हो जाए वह मेरे पास भेज देना ताके में अमे इलाही के मुताबिक़ उसके मरकज़ तक पहुंचा दूँ। अमानतदार को माल देते वक़्त इस बात की हिदायत दे देना के ख़बरदार ऊंटनी और उसके बच्चे को जुदा न करे और सारा दूध न निकाल ले जो बच्चे के हक़ में मुज़िर हो, सवारी में भी शिद्दत से काम न ले और उसके और दूसरी ऊंटनियों के दरम्यान अद्ल व मसावात से काम ले। (((-दुनिया में कौन ऐसा सरबराहे ममलेकत है जो अपने एहकाम को इतनी शदीद पाबन्दियों में जकड़ दे और अपनी रिआया को इस कद्र सहूलत दे दे, दुनिया के हुक्काम में तो इसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता है, हैरतअंगेज़ अम्र यह है के इस्लाम के खोलफ़ा में भी दूर-दूर तक इस किरदार का पता नहीं मिलता है और हुक्मत का आगाज़ ही ज़ब्र, ज़ोर और असीरी व खानासोज़ी से होता है। ज़रूरत है के इस वसीयत नामे को बग़ौर पढ़ा जाए और इसकी एक-एक दिफ़ा पर ग़ौर किया जाए ताके यह अन्दाज़ा हो के इस्लामी सलतनत में रिआया का क्या मरतबा होता है। हक्के अल्लाह की अदायगी में किस कद्र सहूलत फ़राहम की जाती है और इन्सानों की तरह जानवरों के साथ किस तरह बरताव किया जाता है।-)))

थके मान्दे ऊंट को दम लेने का मौक़ा दे और जिसके खुर घिस गए हों या पांव शिकस्ता हों उनके साथ नर्मी का बरताव करे, रास्ते में तालाब पड़ें तो उन्हें पानी पीने के लिये ले जाए और सरसब्ज़ रास्तों को छोड़कर बेआब व ग्याह रास्तों पर न ले जाए वक़्तन-फ़वक़्तन आराम देता रहे और पानी और सब्ज़े के मुक़ामात पर ठहरने की मोहलत दे यहाँ तक के हमारे पास इस आलम में पहुंचे तो हुक्मे खुदा से तन्दरूस्त हो गए हों व उनकी हड्डियों के गूदे बढ़ चुके हों। थके मान्दे और दरमान्दा न हों ताके किताबे खुदा और सुन्नते रसूल (स0) के मुताबिक़ उन्हें

तकसीम कर सकें के यह बात तुम्हारे लिये भी अज़े अज़ीम का बाएस और हिदायत से करीबतर है, इन्शाअल्लाह।

26-आपका अहदनामा (बाज़ गवर्नरो के लिये जिन्हें सदक़ात की जमाआवरी के लिये रवाना फ़रमाया था)

मैं उन्हें हुक्म देता हूँ के अपने पोशीदा उमूर और मख़फ़ी आमाल में भी अल्लाह से डरते रहें जहां उसके अलावा कोई दूसरा गवाह और निगरां नहीं होता है और ख़बरदार ऐसा न हो के ज़ाहेरी मामेलात में खुदा की इताअत करें और मख़फ़ी मसाएल में इसकी मुखालेफ़त करें, इसलिये के जिसके ज़ाहिर व बातिन और क़ौल व फ़ेल में इख़तेलाफ़ नहीं होता है वही अमानते इलाही का अदा करने वाला और इबादते इलाही में मुखलिस होता है और फिर हुक्म देता हूँ के खबरदार लोगों से बुरे तरीके से पेश न आएं और उन्हें परेशान न करें और न उनसे इज़हारे इक़तेदार के लिये किनाराकशी करें के बहरहाल यह सब भी दीनी भाई हैं और हुक्क की अदाएगी में मदद करने वाले हैं।

देखो इन सदक़ात में तुम्हारा हिस्सा मुअय्यन है और तुम्हारा हक़ मालूम है लेकिन फ़ोकरा व मसाकीन और फ़ाक़ाक़श अफ़राद भी इस हक़ में तुम्हारे शरीक हैं, हम तुम्हें तुम्हारा पूरा हक़ देने वाले हैं लेहाज़ा तुम्हें भी इनका पूरा हक़ देना होगा के अगर ऐसा नहीं करोगे तो क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा दुश्मन तुम्हारे होंगे और सबसे ज़्यादा बदबख़्ती इसी के लिये है जिसके दुश्मन बारगाहे इलाही में फ़ोकरा व मसाकीन, साएलीन, महरूमिन, मकरूज़ और ग़ुरबत ज़दा

मुसाफ़िर हों और जिस शख्स ने भी अमानत को मामूली तसव्वुर किया और खयानत की चरागाह में दाखिल हो गया और अपने नफ़स और दीन को खयानतकारी से नहीं बचाया, उसने दुनियां में भी अपने को ज़िल्लत और रूसवाई की मन्ज़िल में उतार दिया और आखिरत में तो ज़िल्लत व रूसवाई उससे भी ज़्यादा है और याद रखो के बदतरीन खयानत उम्मत के साथ खयानत है और बदतरीन फ़रेबकारी सरबराहे दीन के साथ फ़रेबकारी का बरताव है।

(((-काश दुनिया के तमाम हुक्काम को यह एहसास पैदा हो जाए के फ़ोकरा व मसाकीन इस दुनिया में बे आसरा और बे सहारा हैं लेकिन आखिरत में उनका भी वाली व वारिस है और वहां किसी साहबे इक्तेदार का इक्तेदार काम आने वाला नहीं है। अदालते इलाही में शख्सियात का कोई असर नहीं है हर शख्स को अपने आमाल का हिसाब देना होगा और इसके मवाखेज़ा और मुहासेबा का सामना करना होगा। वहाँ न किसी की कुर्सी काम आ सकती है और न किसी का तख्त व ताज। अफ़राद के साथ खयानत तो बरदाश्त भी की जा सकती है के वह इन्फ़ेरादी मामला होता है और उसे अफ़राद माफ़ कर सकते हैं लेकिन क़ौम व मिल्लत के साथ खयानत नक़ाबिले बरदाश्त है के इसकी मुद्दई तमाम उम्मत होगी और इतने बड़े मुक़दमे का सामना करना किसी इन्सान के बस का काम नहीं है-)))

27- आपका अहदनामा (मोहम्मद बिन अबीबक्र के नाम- जब उन्हें

मिस्र का हाकिम बनाया)

लोगों के सामने अपने शानों को झुका देना और अपने बरताव को नरम रखना, कुशादारोई से पेश आना और निगाह व नज़र में भी सब के साथ एक जैसा सुलूक करना ताके बड़े आदमियों को यह खयाल न पैदा हो जाए के तुम उनके मफ़ाद में जुल्म कर सकते हो और कमज़ोरों को तुम्हारे इन्साफ़ की तरफ़ से मायूसी न हो जाए, परवरदिगार रोज़े क़यामत तमाम बन्दों से उनके तमाम छोटे और बड़े ज़ाहिर और मख़फ़ी आमाल के बारे में मुहासेबा करेगा उसके बाद अगर वह अज़ाब करेगा तो तुम्हारे जुल्म का नतीजा होगा और अगर माफ़ कर देगा तो उसके करम का नतीजा होगा।

बन्दगाने खुदा! याद रखो के परहेज़गार अफ़राद दुनिया और आखिरत के फ़वाएद लेकर आगे बढ़ गए वह अहले दुनिया के साथ उनकी दुनिया में शरीक रहे लेकिन अहले दुनिया उनकी आखिरत में शरीक न हो सके, वह दुनिया में बेहतरीन अन्दाज़ से ज़िन्दगी गुज़ारते रहे जो सबने खाया उससे अच्छा पाकीज़ा खाना खाया और वह तमाम लज़ज़तें हासिल कर लीं जो ऐश परस्त हासिल करते हैं और वह सब कुछ पा लिया जो जाबिर और तकब्बुर अफ़राद के हिस्से में आता है। इसके बाद वह ज़ादे रराह लेकर गए जो मन्ज़िल तक पहुंचा दे और वह तिजारत करके गए जिसमें फ़ायदा ही फ़ायदा हो, दुनिया में रहकर दुनिया की लज़ज़त हासिल की और यह यकीन रखे रहे के आखिरत में परवरदिगार के जवारे रहमत में होंगे, जहां न उनकी आवाज़ ठुकराई जाएगी और न किसी लज़ज़त में इनके हिस्से में कोई कमी होगी।

बन्दगाने खुदा! मौत और उसके कुर्ब से डरो उसके लिये सरो सामान मुहैया कर लो के वह एक अज़ीम अम्र और बड़े हादसे के साथ आने वाली है, ऐसे ख़ैर के साथ जिसमें कोई शर न हो या ऐसे शर के साथ जिसमें कोई ख़ैर न हो, जन्नत या जहन्नम की तरफ़ उनके लिये अमल

करने वालों से ज़्यादा करीबतर कौन हो सकता है तुम वह हो जिसका मौत मुसलसल पीछा किये हुए है, तुम ठहर जाओगे तब भी तुम्हें पकड़ेगी और फ़रार करोगे तब भी अपनी गिरफ़्त में ले लेगी वह तुम्हारे साथ तुम्हारे साये से ज़्यादा चिपकी हुई है। उसे तुम्हारी पेशानियों के साथ बान्ध दिया गया है और दुनिया तुम्हारे पीछे से बराबर लपेटी जा रही है, इस जहन्नम से डरो जिसकी गहराई बहुत दूर तक है और इसकी गर्मी बेहद शदीद है और इसका अज़ाब भी बराबर ताज़ा होता रहेगा।

वह घर ऐसा है जहां न रहमत का गुज़र है और न वहां कोई फ़रयाद सुनी जाती है और न किसी रंज व ग़म की कशाइश का कोई इमकान है अगर तुम लोग यह कर सकते हो के तुम्हारे दिल में खौफ़े खुदा शदीद हो जाए और तुम्हें इससे हुस्ने ज़न हासिल हो जाए तो इन दोनों को जमा कर लो के बन्दे का हुस्ने ज़न उतना ही होता है जितना खौफ़े खुदा होता है और बेहतरीन हुस्ने ज़न रखने वाला वही है जिसके दिल में शदीदतरीन खौफ़े खुदा पाया जाता हो, मोहम्मद बिन अबी बक्र! याद रखो के मैंने तुमको अपने बेहतरीन लशकर अहले मिस्र पर हाकिम करार दिया है।

(((-बेहतरीन ज़िन्दगी से मुराद कस्रे शाही में कयाम और लज़ीज़तरीन गिज़ाएं नहीं हैं, बेहतरीन ज़िन्दगी से मुराद तमाम असबाब हैं जिनसे ज़िन्दगी गुज़र जाए और इन्सान किसी हराम और नाजाएज़ में मुब्तिला न हो। मौत के आने का मतलब यह नहीं है के आखिरत में या सिर्फ़ ख़ैर है या सिर्फ़ शर और मखलूत आमाल वालों की कोई जगह नहीं है, मक़सद यह है के आखिरत के सवाब व अज़ाब का फ़लसफ़ा यही है के इसमें किसी तरह का इखलात व इमतेराज नहीं है, दुनिया के हर आराम में तकलीफ़ शामिल है और हर तकलीफ़ में आराम का कोई न

कोई पहलू ज़रूर है लेकिन आखिरत में अज़ाब का एक लम्हा भी वह है जिसमें किसी राहत का तसव्वुर नहीं है और सवाब का एक लम्हा भी वह है जिसमें किसी तकलीफ़ का कोई इमकान नहीं है। लेहाज़ा इन्सान का फ़र्ज़ है के उस अज़ाब से डरे और इस सवाब का इन्तेज़ाम कर ले-
)))

अब तुमसे मुतालेबा यह है के अपने नफ़्स की मुखालफ़त करना और अपने दीन की हिफ़ाज़त करना चाहे तुम्हारे लिये दुनिया में सिर्फ़ एक ही साअत बाक़ी रह जाए और किसी मखलूक को खुश करके ख़ालिक को नाराज़ न करना के खुदा हर एक के बदले काम आ सकता है लेकिन इसके बदले कोई काम नहीं आ सकता है।

नमाज़ उसके मुकर्ररा औकात में अदा करना, न ऐसा हो के फ़ुर्सत हासिल करने के लिये पहले अदा कर लो और न ऐसा हो के मशगूलियत की बिना पर ताख़ीर कर दो। याद रखो के तुम्हारे हर अमल को नमाज़ का पाबन्द होना चाहिये। याद रखो के इमामे हिदायत और पेशवाए हलाकत एक जैसे नहीं हो सकते हैं नबी का दोस्त और दुश्मन यकसाँ नहीं होता है। रसूले अकरम (स0) ने खुद मुझसे फ़रमाया है के “मैं अपनी इमामत के बारे में न किसी मोमिन से खौफ़ज़दा हूँ और न मुशरिक से, मोमिन को अल्लाह उसके ईमान की बिना पर बुराई से रोक देगा और मुशरिक को उसके शिर्क की बिना पर मगलूब कर देगा, सारा ख़तरा उन लोगों से है जो ज़बान के आलिम हों और दिल के मुनाफ़िक़। कहते वही हैं जो तुम सब पहचानते हो और करते वह हैं जिसे तुम बुरा समझते हो।”

28-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के खत के जवाब में जो बकौल

सय्यद रज़ी आपका बेहतरीन खुत्बा है)

अम्माबाद! मेरे पास तुम्हारा खत आया है जिसे तुमने रसूले अकरम (स0) के दीने खुदा के लिये मुन्तखब होने और आपके परवरदिगार की तरफ से असहाब के ज़रिये उनको कूवत व तवानाई मिलने का ज़िक्र किया है लेकिन यह तो एक बड़ी अजीब व ग़रीब बात है जो ज़माने ने तुम्हारी तरफ से छिपाकर रखी थी के तुम हमको उन एहसानात की इत्तेलाअ दे रहे हो जो परवरदिगार ने हमारे ही साथ किये हैं और उस नेमत की खबर दे रहे हो जो हमारे ही पैगम्बर (स0) को मिली है। गोया के तुम मकामे हिज़्र की तरफ खुरमे भेज रहे हो या उस्ताद को तीरअन्दाज़ी की दावत दे रहे हो। इसके बाद तुम्हारा खयाल है के फुलां और फुलां तमाम अफ़राद बेहतर थे तो यह ऐसी बात है के अगर सही भी हो तो इस काम से तुम्हारा कोई ताल्लुक नहीं है और अगर ग़लत भी हो तो तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं है। तुम्हारा इस फ़ाज़िल व मफ़ज़ूल, हाकिम व रिआया के मसले से क्या ताल्लुक है, भला आज़ादकरदा गुलाम और उनकी औलाद को मुहाजेरीन अक्वलीन के दरम्यान इम्तियाज़ कायम करने, उनके दरजात का ताअय्युन करने और उनके तबक़ात के पहुंचाने का क्या हक़ है (यह तो उस वक़्त मुसलमान भी नहीं थे) अफ़सोस के जुए के तीरों के साथ बाहर के तीर भी आवाज़ निकालने लगे और मसाएल में वह लोग भी करने लगे जिनके खिलाफ़ खुद ही फ़ैसला होने वाला है।

(((-माविया ने खत अबू इमामा बाहेली के ज़रिये भेजा था और इसमें मुतादद मसाएल की तरफ़ इशारा किया था, सबसे बड़ा मसला हज़रात शैखीन के फ़ज़ाएल का था के हज़रत अली (अ0) के साथ अकसरीयत उन्हीं अफ़राद की थी जो आपको सिलसिले से चौथा खलीफ़ा तस्लीम करते थे, अब अगर उनके बारे में अपनी सही राय का इज़हार कर दे तो क़ौम बदज़न हो जाएगी

और मुआशरे में एक नया फ़ितना खड़ा हो जाएगा और अगर उनके फ़ज़ाएल का इकरार कर लें तो गोया इन तमाम कलेमात की तकज़ीब कर दी जो कल तक अपनी फ़ज़ीलत या मज़लूमियत के बारे में बयान करते थे। हज़रत ने इस हस्सास सूरते हाल का बख़ूबी अन्दाज़ा कर लिया और वाज़ेह जवाब देने के बजाय माविया को इस मसले से अलग रहने की तलक़ीन फ़रमाई और उसे इसकी औकात से भी बाख़बर कर दिया के यह मसले सद्दे इस्लाम का है और उस वक़्त तो तुम्हारा बाप भी मुसलमान नहीं था तुम्हारा क्या ज़िक्र है? लेहाज़ा ऐसे मसाएल में तुम्हें राय देने का कोई हक़ नहीं है, अलबत्ता यह बहरहाल साबित हो जाता है के इन फ़ज़ाएल में तुम्हारे खानदान का कोई ज़िक्र नहीं है।-)))

ऐ शख्स तू अपने लंगड़ेपन को देखकर अपनी हद पर ठहरता क्यों नहीं है और अपनी कोताह दस्ती को समझता क्यों नहीं है और जहां कज़ा व क़द्र का फैसला तुझे पीछे हटा चुका है वहीं पीछे हट कर जाता क्यों नहीं है। तुझे किसी मग़लूब की शिकस्त या ग़ालिब की फ़तेह से क्या ताल्लुक है। तू तो हमेशा गुमराहियों में हाथ पांव मारने वाला और दरम्यानी राह से इन्हेराफ़ करने वाला है, मैं तुझे बाख़बर नहीं कर रहा हूँ बल्कि नेमते ख़ुदा का तज़क़िरा कर रहा हूँ वरना क्या तुझे नहीं मालूम है के मुहाजेरीन व अन्सार की एक बड़ी जमाअत ने राहे ख़ुदा में जानें दी हैं और सब साहेबाने फ़ज़ल हैं लेकिन जब हमारा कोई शहीद हुआ है तो उसे सय्यदुशशोहदा कहा गया है और रसूले अकरम (स0) ने उसके जनाज़े की नमाज़ में सत्तर तकबीरें कही हैं। इसी तरह तुझे मालूम है के राहे ख़ुदा में बहुत सों के हाथ कटे हैं और साहेबाने शरफ़ हैं लेकिन जब हमारे आदमी के हाथ काटे गए तो उसे जन्नत में तय्यार और जुलजनाहीन बना दिया गया और अगर परवरदिगार ने अपने मुंह से अपनी तारीफ़ से मना न किया होता तो बयान करने वाला बेशुमार फ़ज़ाएल बयान करता जिन्हें साहेबाने ईमान के दिल पहचानते हैं और सुनने वालों के

कान भी अलग नहीं करना चाहते हैं। छोड़ो उनका जिक्र जिनका तीर निशाने से खता करने वाला है, हमें देखो जो परवरदिगार के बराहेरास्त साख्ता व परदाख्ता हैं और बाकी लोग हमारे एहसानात का नतीजा हैं। हमारी कदीमी इज़्जत और तुम्हारी क़ौम पर बरतरी हमारे लिये इस अम्र से मानेअ नहीं हुई के हमने तुमको अपने साथ शामिल कर लिया तो तुमसे रिश्ते लिये और तुम्हें रिश्ते दिये जो आम से बराबर के लोगों में किया जाता है और तुम हमारे बराबर के नहीं हो और हो भी किस तरह सकते हो जबके हममें से रसूले अकरम (स0) हैं और तुममें से इनकी तकज़ीब करने वाला, हम में से असदुल्लाह हैं और तुममें से असदुल हलाफ़, हम में सरदाराने जवानाने जन्नत हैं और तुम में जहन्नुमी लड़के, हममें सय्यदते निसाइल आलमीन हैं और तुम में हम्मालतल हतब और ऐसी बेशुमार चीज़ें हैं जो हमारे हक़ में हैं और तुम्हारे खिलाफ़। हमारा इस्लाम भी मशहूर है और हमारा कब्ले इस्लाम का शरफ़ भी नाकाबिले इनकार है और किताबे खुदा ने हमारे मुन्तशिर औसाफ़ को जमा कर दिया है, यह कहकर के “कराबतदार बाज़ बाज़ के लिये ऊला हैं” और यह कहकर के “इब्राहीम के लिये ज़्यादा करीबतर वह लोग हैं जिन्होंने उनका इत्तेबाअ किया है और यह पैग़म्बर (स0) और साहेबाने ईमान और अल्लाह साहेबाने ईमान का वली है। (((-यह उस अम्र की तरफ़ इशारा है के रसूले अकरम (स0) ने अपने हाथ की परवरदा लड़कियों का अक्द बनी उमय्या में कर दिया और अबू सुफ़ियान की बेटी उम्मे हबीबा से खुद अक्द कर लिया हालांके आम तौर से लोग रिश्तों के लिये बराबरी तलाश करते हैं, मगर चूँके इस्लाम ने ज़ाहिरी कलमे को काफ़ी करार दिया है लेहाज़ा हमने भी रिश्तेदारी कायम कर ली और तुम्हारी औकात का खयाल नहीं किया ताके मज़हब समाज पर हाकिम रहे और समाज मज़हब पर हुक्मत न करने पाए।-)))

यानी हम कराबत के एतबार से भी ऊला हैं और इताअत व इत्तेबाअ के ऐतबार से भी, इसके बाद जब मुहाजेरीन ने अन्सार के खिलाफ़ रोज़ सक्रीफ़ा कराबते पैगम्बर (स0) से इस्तेदलाल किया और कामयाब भी हो गए, तो अगर कामयाबी का राज़ यही है तो हक़ हमारे साथ है न के तुम्हारे साथ और अगर कोई और दलील है तो अन्सार का दावा बाक़ी है।

तुम्हारा खयाल है के मैं खोलफ़ा से हसद रखता हूँ और मैंने सबके खिलाफ़ बगावत की है तो अगर यह सही भी है तो इसका जुल्म तुम पर नहीं है के तुमसे माज़ेरत की जाए, (यह वह ग़लती है जिससे तुम पर कोई हर्फ़ नहीं आता) बकौल शायर

और तुम्हारा यह कहना के मैं इस तरह खींचा जा रहा था जिस तरह नकेल डालकर ऊंट को खींचा जाता है ताके मुझसे बैअत ली जाए तो खुदा की कसम तुमने मेरी मज़म्मत करना चाही और नादानिस्ता तौर पर तारीफ़ कर बैठे और मुझे रूसवा करना चाहा था मगर खुद रूसवा हो गए।

मुसलमान के लिये इस बात में कोई ऐब नहीं है के वह मज़लूम हो जाए जब तक के वह दीन के मामले में शक़ में मुब्तिला न हो, और इसका यकीन शुबह में न पड़ जाए, मेरी दलील असल में दूसरों के मुकाबले में है लेकिन जिस क़द्र मुनासिब था मैंने तुमसे भी बयान कर लिया।

इसके बाद तुमने मेरे और उस्मान के मामले का ज़िक़्र किया है तो इसमें तुम्हारा हक़ है के तुम्हें जवाब दिया जाए इसलिये के तुम उनके कराबतदार हो लेकिन यह सच सच बताओ के हम

दोनों में उनका ज़्यादा दुश्मन कौन था और किसने उनके क़त्ल का सामान फ़राहम किया था, उसने जिसने नुसरत की पेशकश की और उसे बिठा दिया गया और रोक दिया गया या उसने जिससे नफ़रत का मुतालेबा किया गया और उसने सुस्ती बरती और मौत का रूख़ उनकी तरफ़ मोड़ दिया यहां तक के क़ज़ा व क़द्र ने अपना काम पूरा कर दिया, खुदा की क़सम मैं हरगिज़ इसका मुजरिम नहीं हूँ और अल्लाह उन लोगों को भी जानता है जो रोकने वाले थे और अपने भाइयों से कह रहे थे के हमारी तरफ़ चले आओ और जंग में बहुत कम हिस्सा लेने वाले थे। मैं उस बात की माज़ेरत नहीं कर सकता के मैं उनकी बिदअतों पर बराबर एतराज़ कर रहा था के अगर यह इरशाद और हिदायत भी कोई गुनाह था तो बहुत से ऐसे लोग होते हैं जिनकी बेगुनाह भी मलामत की जाती है और “कभी कभी वाक़ई नसीहत करने वाले भी बदनाम हो जाते हैं” मैंने अपने इमकान भर इसलाह की कोशिश की और मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह के सहारे है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ मेरी तवज्जो है।”

तुमने यह भी ज़िक्र किया है के तुम्हारे पास मेरे और मेरे असहाब के लिये तलवार के अलावा कुछ नहीं है तो यह कहकर तुमने रोते को हंसा दिया है, भला तुमने औलादे अब्दुल मुत्तलिब को कब दुश्मनों से पीछे हटते या तलवार से ख़ौफ़ज़दा होते देखा है? “ज़रा ठहर जाओ के हमल मैदान जंग तक पहुंच जाए” (शायर) (((-क़यामत की बातत है के माविया तलवार की धमकी साहबे जुलफ़ेकार को दे रहा है जबके उसे मालूम है के अली (अ0) उस बहादुर का नाम है जिसने दस बरस की उम्र में तमाम कुफ़ार व मुशरेकीन से रसूले अकरम (स0) को बचाने का वादा किया था और हिजरत की रात तलवार की छांव में निहायत सुकून व इतमीनान से सोया है और बद्र के मैदान में तमाम रोसाए कुफ़ार व मुशरेकीन और ज़ामाए बनी उमय्या का तनो तन्हा खात्मा कर दिया है।-))) अनक़रीब जिसे तुम ढूंढ रहे हो वह तुम्हें खुद ही तलाश कर लेगा और

जिस चीज़ को बईद खयाल कर रहे हो उसे करीब कर देगा। अब मैं तुम्हारी तरफ़ मुहाजेरीन व अन्सार के लशकर के साथ बहुत जल्द आ रहा हूँ और मेरे साथ वह भी हैं जो उनके नक्शे क़दम पर ठीक तरीक़े से चलने वाले हैं, इनका हमला शदीद होगा और गुबारे जंग सारी फ़िज़ा में मुन्तशिर होगा। यह मौत का लिबास पहने होंगे और उनकी नज़र में बेहतरीन मुलाक़ात परवरदिगार की मुलाक़ात होगी, उनके साथ असहाबे बद्र की ज़ुर्रियत और बनी हाशिम की तलवारें होंगी। तुमने उनकी तलवारों की काट अपने भाई, मामू, नाना और ख़ानदान वालों में देख ली है और वह ज़ालिमों से अब भी दूर नहीं है।”

29-आपका मकतूबे गिरामी (अहले बसरा के नाम)

तुम्हारी तफ़रिका परवाज़ी और मुख़ालफ़त का जो आलम था वह तुमसे मख़फ़ी नहीं है लेकिन मैंने तुम्हारे मुजरिमों को माफ़ कर दिया, भागने वालों से तलवार उठा ली, आने वालों को बढ़कर गले लगा लिया, अब इसके बाद भी अगर तुम्हारी तबाह कुन आराए और तुम्हारे ज़ालिमाना उफ़कार की हिमाक़त तुम्हें मेरी उलफ़त और अहद शिकनी पर आमादा कर रही है तो याद रखो के मैंने घोड़ों को करीब कर लिया है, ऊंटों पर सामान बार कर लिया है और अगर तुमने घर से निकलने पर मजबूर ककर दिया तो ऐसी मारेका आराई करूंगा के जंगे जमल फ़क़त ज़बान की चाट रह जाएगी। मैं तुम्हारे इताअत गुज़ारों के शरफ़ को पहचानता हूँ और मुखलेफ़ीन के हक़ को जानता हूँ, मेरे लिये यह मुमकिन नहीं है के मुजरिम से आगे बढ़कर बेख़ता पर हमला कर दूँ या अहद शिकन से तजावुज़ करके वफ़ादार से भी तारिज़ करूँ (वफ़ादार को भी लपेट लूँ)।

30 - आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)

जो कुछ साज़ व सामान तुम्हारे पास है उसमें अल्लाह से डरो और जो उसका हक़ तुम्हारे ऊपर है उस पर निगाह रखो, उस हक़ की फ़ुरक़त की तरफ़ पलट आओ (उन हक़ को पहचानो) जिससे नावाक़फ़ीयत काबिले माफ़ी नहीं है, देखो इताअत के निशानात वाज़ेह, रास्ते रौशन, शाहेराहें सीधी हैं और मन्ज़िले मक़सूद सामने है जिस पर तमाम अक्ल वाले वारिद होते हैं। (((पहले अहले बसरा ने वफ़ादारी का एलान किया तो हज़रत ने उस्मान बिन हनीफ़ को गवर्नर

बनाकर भेज दिया, इसकेबाद आइशा वारिद हुई तो अक्सरीयत मुनहरिफ हो गई और जंगे जमल की नौबत आ गई लेकिन आपने आम तौर से सबको माफ़ कर दिया और आइशा भी मदीने वापस चली गई, लेकिन माविया ने फिर दोबारा वरगलाना शुरू कर दिया तो आपने यह तन्बीही खत रवाना फ़रमाया के जंगे जमल तो सिर्फ़ मज़ा चखाने के लिये थी, जंग तो अब होने वाली है लेहाज़ा होश में आजाओ और माविया के बहकाने पर राहे हक़ से इन्कार न करो-)))

और पस्त फ़ितरत इसकी मुखालफ़त करते हैं, जो इस हदफ़ से मुनहरिफ़ हो गया वह राहे हक़ से हट गया और गुमराही में ठोकरें खाने लगा, अल्लाह ने उसकी नेमतों को सल्ब कर लिया और अपना अज़ाब उस पर वारिद कर दिया, लेहाज़ा अपने नफ़स का खयाल रखो और उसे हलाकत से बचाओ के परवरदिगार ने तुम्हारे लिये रास्ते को वाज़ेह कर दिया है और वह मन्ज़िल बता दी है जहां तक उमूर को जाना है, तुम निहायत तेज़ी से बदतरीन खसारे और कुफ़र की मन्ज़िल की तरफ़ भागे जा रहे हो, तुम्हारे नफ़स ने तुम्हें बदबख़्ती में डाल दिया है और गुमराही में झोंक दिया है, हलाकत की मन्ज़िलों में वारिद कर दिया है और सही रास्तों को दुश्वार गुज़ार बना दिया है।

31-आपका वसीयत नामा (जिसे इमाम हसन (अ0) के नाम सिफ़फ़ीन से वापसी पर मक़ामे हाज़ेरीन में तहरीर फ़रमाया है)

यह वसीयत एक ऐसे बाप की है जो फ़ना होने वाला और ज़माने के तसरूफ़ात का इकरार करने वाला है जिसकी उम्र खातमे के करीब है और वह दुनिया के मसाएब के सामने सिपरअन्दाख़्ता है। मरने वालों की बस्ती में मुक़ीम है और कल यहाँ से कूच करने वाला है। उस फ़रज़न्द के नाम जो दुनिया में वह उम्मीदें रखे हुए है जो हासिल होने वाली नहीं हैं और हलाक होने वालों के रास्ते पर गामज़न है बीमारियों का निशाना और रोज़गार के हाथों गिरवी है, मसाएबे ज़माने का हदफ़ और दुनिया का पाबन्द है, उसकी फ़रेब कारियों का ताजिर और मौत का कर्जदार है, अजल का कैदी और रंज व ग़म का साथी, मुसीबतों का हमनशी है और आफ़तों का निशाना, ख़्वाहिशात का मारा हुआ और मरने वालों का जानशीन।

अम्माबाद! मेरे लिये दुनिया के मुंह फेर लेने, ज़माने के जुल्म व ज़्यादती करने और आखिरत के मेरी तरफ़ आने की वजह से जिन बातों का इन्केशाफ़ हो गया है उन्होंने मुझे दूसरों के ज़िक्र और अग़यार के अन्देशे से रोक दिया है, मगर जब मैं तमाम लोगों की फ़िक्र से अलग होकर अपनी फ़िक्र में पड़ा तो मेरी राय ने मुझे ख़्वाहिशात से रोक दिया और मुझ पर वाक़ेई हकीकत मुनकशिफ़ हो गई जिसने मुझे इस मेहनत व मशक्कत तक पहुंचा दिया जिसमें किसी तरह का कील नहीं है और इस सिदाक़त तक पहुंचा दिया जिसमें किसी तरह की ग़लत बयानी नहीं है। ((-बाज़ शारहीन का ख़याल है के यह वसीयतनामा जनाब मोहम्मद हनफ़िया के नाम है और सय्यद रज़ी अलैहिर्रहमा ने इसे इमाम हसन (अ0) के नाम बताया है, बहरहाल यह एक आम वसीयतनामा है जिससे हर बाप को इस्तेफ़ादा करना चाहिये और अपनी औलाद को इन्हीं ख़ुतूत पर वसीयत व नसीहत करना चाहिये वरना इसका मुकम्मल मज़मून न मौलाए कायनात पर मुनतबिक़ होता है और न इमामे हसन (अ0) पर, और न ऐसे वसीयतनामे किसी एक फ़र्द से मख़सूस हुआ करते हैं। यह इन्सानियत का अज़ीमतरिन तसव्वुर है जिसमें अज़ीमतरिन बाप ने

अजीमतरिन बेटे को मुखातब करार दिया है ताके दीगर अफ़रादे मिल्लत इससे इस्तेफ़ादा करें बल्कि इबरत हासिल करें।))

मैंने तुमको अपना ही एक हिस्सा पाया बल्कि तुमको अपना सरापा वजूद समझा के तुम्हारी तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ है और तुम्हारी मौत मेरी मौत है इस लिये मुझे तुम्हारे मुआमलात की इतनी ही फ़िक्र है जितनी अपने मुआमलात की होती है और इसीलिये मैंने यह तहरीर लिख दी है जिसके ज़रिये तुम्हारी इमदाद करना चाहता हूँ चाहे मैं ज़िन्दा रहूँ या मर जाऊँ।

फ़रज़न्द! मैं तुमको खौफ़े खुदा और उसके एहकाम की पाबन्दी की वसीयत करता हूँ, अपने दिल को उसकी याद से आबाद रखना और उसकी रीसमाने हिदायत से वाबस्ता रहना के उससे ज्यादा मुस्तहकम कोई रिश्ता तुम्हारे और खुदा के दरम्यान नहीं है। अपने दिल को मोएज़ा से ज़िन्दा रखना और उसके ख्वाहिशात को ज़ोहद से मुर्दा बना दिया। उसे यकीन के ज़रिये क़वी रखना और हिकमत के ज़रिये नूरानी रखना, ज़िक्रे मौत के ज़रिये काबू में करना और फ़ना के इकरार पर उसे ठहराना, दुनिया के हवादिस से आगाह रखना और ज़माने के हमले और लैल व नहार के तसरूफ़ात से होशियार रखना। उस पर गुज़िश्ता लोगों के अख़बार को पेश करते रहना और पहले वालों पर पड़ने वाले मसाएब को याद दिलाते रहना, उनके दयार व आसार में सरगमों सफ़र रहना और यह देखते रहना के उन्होंने क्या किया है और कहां से कहां चले गए हैं, कहां वारिद हुए हैं और कहां डेरा डाला है।

फिर तुम देखोगे के वह अहबाब की दुनिया से मुन्तक़िल हो गए हैं और दयारे ग़ुरबत में वारिद हो गए हैं और गोया के अनक़रीब तुम भी उन्हीं में शामिल हो जाओगे लेहाज़ा अपनी

मन्ज़िल को ठीक कर लो और खबरदार आखिरत को दुनिया के एवज़ में फ़रोख़्त न करना, जिन बातों को नहीं जानते हो उनके बारे में बात न करना और जिस चीज़ का तुमसे ताल्लुक नहीं हो उनके बारे में गुफ़्तगू न करना। जिस रास्ते में गुमराही का खौफ़ हो उधर क़दम आगे न बढ़ाना के गुमराही के तहय्युर से पहले (सरगर्दानियां देखकर) ठहर जाना, हौलनाक मरहलों में वारिद हो जाने से बेहतर है नेकियों का हुक़्म देते रहना ताके उसके अहल में शुमार हो और बुराइयों से अपने हाथ और ज़बान की ताक़त से मना करते रहना और बुराई करने वालों से अपने इमकान भर दूर रहना, राहे खुदा में जेहाद का हक़ अदा कर देना और खबरदार इस राह में किसी मलामतगार की मलामत की परवाह न करना, हक़ की खातिर जहां भी हो सख़्तियों में कूद पड़ना और दीन का इल्म हासिल करना, अपने नफ़्स को नाखुशगवार हालात में सब्र का आदी बना देना और याद रखना के बेहतरीन अखलाक़ हक़ की राह में सब्र करना है, अपने तमाम उमूर में परवरदिगार की तरफ़ रूजू करना के इस तरह एक महफूज़तरीन पनाहगाह का सहारा लोगे और बेहतरीन मुहाफ़िज़ की पनाह में रहोगे, परवरदिगार से सवाल करने में मुखलिस रहना के अता करना और महरूम कर देना उसी के हाथ में है, मालिक से मुसलसल तलबे ख़ैर करते रहना और मेरी वसीयत पर ग़ौर करते रहना, इससे पहलू बचाकर गुज़र न जाना के बेहतरीन कलाम वही है जो फ़ायदेमन्द हो और याद रखो के जिस इल्म में फ़ायदा न हो उसमें कोई ख़ैर नहीं है और जो इल्म सीखने के लायक़ न हो उसमें कोई फ़ायदा नहीं है।

फ़रज़न्द! मैंने देखा के अब मेरा सिन बहुत ज़्यादा हो चुका है और मुसलसल कमज़ोर होता जा रहा हूँ लेहाज़ा मैंने फ़ौरन वसीयत लिख दी और इन मज़ामीन को दर्ज कर दिया के कहीं ऐसा न हो के मेरे दिल की बात तुम्हारे हवाले करने से पहले मुझे मौत आ जाए या जिस्म के नुक़्स की तरह राय को कमज़ोर तसव्वुर किया जाने लगे या वसीयत से पहले ही ख्वाहिशात के

ग़लबे और दुनिया के फ़ितने तुम तक न पहुंच जाएं के तुम भड़क उठने वाले मुंहजोर ऊंट की तरह हो जाओ क्योंकि कमसिन का दिल उस खाली ज़मीन के मानिन्द होता है जिसमें जो बीज डाला जाता है उसे कुबूल कर लेती है,

लेहाज़ा क़बूल इसके के तुम्हारा दिल सख़्त हो जाए और तुम्हारा ज़ेहन दूसरी बातों में लग जाए मैंने तालीम देने के लिये क़दम उठाया ताके तुम अक़ले सलीम के ज़रिये उन चीज़ों के कुबूल करने के लिये आम़ादा हो जाओ के जिनकी आज़माइश और तजुर्बे की ज़हमत से तजुर्बेकारों ने तुम्हें बचा लिया है इस तरह तुम तलाश की ज़हमत से मुस्तग़नी और तजुर्बे की कुलफ़तों से आसूदा हो जाओगे और तजुर्बे व इल्म की वह बातें (बेताब व मशक्कत) तुम तक पहुंच रही हैं के जिन पर हम मुत्तेलाअ हुए और फिर वह चीज़ें भी उजागर होकर तुम्हारे सामने आ रही हैं के जिन में से कुछ मुमकिन है, हमारी नज़रों से ओझल हो गई हों, ऐ फ़रज़न्द! अगरचे मैंने इतनी उम्र नहीं पाई जितनी अगले लोगों की हुआ करती थीं फिर भी मैंने उनकी कारगुज़ारियों को देखा, उनके हालात व वाक़ेआत में ग़ौर किया और उनके छोड़े हुए निशानात में सैर व सयाहत की यहां तक के गोया मैं भी उन्हीं में का एक हो चुका हूँ।

बल्कि उन सबके हालात व मालूमात जो मुझे तक पहुंच गए हैं उनकी वजह से ऐसा है के गोया मैंने उनके अक्वल से लेकर आख़िर तक के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी है, चुनान्चे मैंने साफ़ को गन्दे और नफ़े को नुक़सान से अलग करके पहचान लिया है और अब सबका निचोड़ तुम्हारे लिये मख़सूस कर रहा हूँ और मैंने ख़ूबियों को चुन चुन कर तुम्हारे लिये समेट दिया है और बे-मानी चीज़ों को तुमसे जुदा रखा है और चूँके मुझे तुम्हारी हर बात का उतना ही ख़याल है जितना शफ़ीक़ बाप को होना चाहिये और तुम्हारी एख़लाकी तरबीयत भी पेशे नज़र है। लेहाज़ा

मुनासिब समझा है के यह तालीम व तरबीयत इस हालत में हो के तुम नौ उम्र और बिसाते दहर पर ताजा वारिद हो और तुम्हारी नीयत खरी और नफ़स पाकीज़ा है और मैंने चाहा था के पहले किताबे खुदा एहकाम शरा और हलाल व हराम की तालीम दूँ और उसके अलावा दूसरी चीज़ों का रूख करूँ लेकिन यह अन्देशा पैदा हुआ के कहीं वह चीज़ें जिनमें लोगों के अक्राएद व मज़हबी खयालात में इख़तेलाफ़ है तुम पर उसी तरह मुश्तबा न हो जाएं जैसे उन पर मुश्तबा हो गई हैं, बावजूद यक इन ग़लत अक्राएद का तज़क़िरा तुमसे मुझे नापसन्द था मगर इस पहलू को मज़बूत कर देना तुम्हारे लिये मुझे बेहतर मालूम हुआ, इससे के तुम्हें ऐसी सूरते हाल के सिपुर्द कर दूँ जिसमें मुझे तुम्हारे लिये हलाकत व तबाही का ख़तरा है और मैं उम्मीद करता हूँ के अल्लाह तुम्हें हिदायत की तौफ़ीक़ देगा और सही रास्ते की राहनुमाई करेगा, इन वजह से तुम्हें यह वसीयत नामा लिखता हूँ।

बेटा याद रखो के मेरी इस वसीयत से जिन चीज़ों की तुम्हें पाबन्दी करना है उनमें सबसे ज़्यादा मेरी नज़र में जिस चीज़ की अहमियत है वह अल्लाह का तक़वा है और यह के जो फ़राएज़ अल्लाह की तरफ़ से तुम पर आएद हैं उन पर इक्तेफ़ा करो और जिस राह पर तुम्हारे आबाओ अजदाद और तुम्हारे घराने के अफ़राद चलते रहे हैं उसी पर चलते रहो क्योंकि जिस तरह तुम अपने लिये नज़र व फ़िक्र कर सकते हो उन्होंने उस नज़र व फ़िक्र में कोई कसर उठा न रखी थी, मगर इन्तेहाई ग़ौर व फ़िक्र ने भी उनको उसी नतीजे पर पहुंचाया, के जो उन्हें अपने फ़राएज़ मालूम हों, उन पर इक्तेफ़ा करें और ग़ौर मुताल्लुक चीज़ों से क़दम रोक लें लेकिन अगर तुम्हारा नफ़स इसके लिये तैयार न हो के बग़ैर ज़ाती तहक़ीक़ से इल्म हासिल किये हुए जिस तरह उन्होंने हासिल किया था, इन बातों को कुबूल करे तो बहरहाल यह लाज़िम है के तुम्हारे तलब का अन्दाज़ सीखने और समझने का हो, न शुबहात में फान्द पड़ने और

बहस व नज़ाअ में उलझने का और इस फ़िक्र व नज़र को शुरू करने से पहले अल्लाह से मदद के ख़्वास्तगार हो, और उससे तौफ़ीक़ व ताईद की दुआ करो, और हर उस वहम के शाएबे से अपना दामन बचाओ के तुम्हें शुबह में डाल दे या गुमराही में छोड़ दे, और फिर अगर तुम्हें इत्मीनान हो जाए के तुम्हारा दिल साफ़ और ख़ाशा (असर लेने की सलाहियत वाला) हो गया है और तुम्हारी राय ताम व कामिल हो गई है और तुम्हारे पास सिर्फ़ यही एक फ़िक्र रह गई है (तुम्हारा ज़ौक व शौक़ एक नुक़्ते पर जम गया है) तो जिन बातों को मैंने वाज़ेह किया है उनमें ग़ौर व फ़िक्र करना वरना अगर हस्बे मन्शा फ़िक्र व नज़र का फ़राग़ (आसूदगी) हासिल नहीं हुआ है तो याद रखो के इस तरह सिर्फ़ शबकोर ऊंटनी की तरह हाथ पैर मारते रहोगे; और अन्धेरे में भटकते रहोगे और दीन का तलबगार वह नहीं है जो अन्धेरो में हाथ पांव मारे और बातों को मख़लूत कर दे, इससे तो ठहर जाना ही बेहतर है।

फ़रज़न्द! मेरी वसीयत को समझो और यह जान लो के जो मौत का मालिक है वही ज़िन्दगी का मालिक है और जो ख़ालिक है वही मौत देने वाला है और जो फ़ना करने वाला है वही दोबारा वापस लाने वाला है और जो मुब्तिला करने वाला है वही आफ़ियत देने वाला है और यह दुनिया इसी हालत में मुस्तकर रह सकती है जिसमें मालिक ने करार दिया है यानी नेमत, आज़माइश, आख़िरत की जज़ा या वह बात जो तुम नहीं जानते हो, अब अगर इसमें से कोई बात समझ में न आए तो उसे अपनी जेहालत पर महमूल करना के तुम इब्तिदा में जब पैदा हुए हो तो जाहिल ही पैदा हुए हो, बाद में इल्म हासिल किया है और इसी बिना पर मजहूलात की तादाद कसीर है जिसमें इन्सानी राय मुतहय्यरा रह जाती है (अभी कितनी ही ऐसी चीज़ें हैं के जिनसे तुम बेख़बर हो के उनमें पहले तुम्हारा ज़ेहन परेशान होता है) और निगाह बहक जाती है और बाद में सही हकीक़त नज़र आती है, लेहाज़ा उस मालिक से वाबस्ता रहो जिसने पैदा

किया है, रोज़ी दी है और मोतदिल बनाया है, उसी की इबादत करो, उसी की तरफ़ तवज्जो करो और उसी से डरते रहो, बेटा! यह याद रखो के तुम्हें खुदा के बारे में इस तरह की खबरें कोई नहीं दे सकता है जिस तरह रसूले अकरम (स0) ने दी हैं। लेहाज़ा उनको बखुशी अपना पेशवा और राहे निजात का क़ाएद तस्लीम करो, मैंने तुम्हारी नसीहत में कोई कमी नहीं की है और न तुम कोशिश के बावजूद अपने बारे में इतना सोच सकते हो जितना मैंने देख लिया है।

फ़रज़न्द! याद रखो अगर खुदा के लिये कोई शरीक भी होता तो उसके भी रसूल आते और उसकी भी सल्तनत और हुकूमत के भी आसार दिखाई देते और इसके अफ़आल व सिफ़ात का भी कुछ पता होता, लेकिन ऐसा कुछ नहीं है लेहाज़ा खुदा एक है जैसा के उसने खुद बयान किया है, उसके मुल्क में उससे कोई टकराने वाला नहीं है और न उसके लिये किसी तरह का ज़वाल है। वह औलियत की हुदू के बग़ैर सबसे अक्वल है और किसी इन्तेहा के बग़ैर सबसे आख़िर तक रहने वाला है। वह इस बात से अज़ीमतर है के उसकी रूबूबियत का असबाते फ़िक्र व नज़र के अहाते से किया जाए। अगर तुमने इस हकीकत को पहचान लिया है तो इस तरह अमल करो जिस तरह तुम जैसे मामूली हैसियत, क़लील ताक़त, कसीर आजिज़ी और परवरदिगार की तरफ़ इताअत की तलब, इताब के ख़ौफ़ और नाराज़गी के अन्देशे में हाजत रखने वाले क्या करते हैं, उसने जिस चीज़ का हुक्म दिया है वह बेहतरीन है और जिससे मना किया है वह बदतरीन है।

फ़रज़न्द! मैंने तुम्हें दुनिया, उसके हालात, तसरूफ़ात, ज़वाल और इन्तेक़ाल सबके बारे में बाख़बर कर दिया है और आख़िरत और उसमें साहेबाने ईमान के लिये मुहैया नेमतों का भी पता

बता दिया है और दोनों के लिये मिसालें बयान कर दी हैं ताके तुम इबरत हासिल कर सको और इससे होशियार रहो।

याद रखो के जिसने दुनिया को बखूबी पहचान लिया है उसकी मिसाल उस मुसाफिर क्रौम जैसी है जिसका कहतज़दा मन्ज़िल से दिल उचाट हो जाए और वह किसी सरसब्ज़ व शादाब इलाके का इरादा करे और ज़हमते राह, फिराके अहबाब, दुश्वारी सफ़र, बदमज़गिए तआम वग़ैरा जैसी तमाम मुसीबतें बरदाश्त कर ले ताके वसीअ घर और करार की मन्ज़िल तक पहुंच जाए के ऐसे लोग उन तमाम बातों में किसी तकलीफ़ का एहसास नहीं करते और न इस राह में खर्च को नुकसान तसव्वुर करते हैं और उनकी नज़र में इससे ज़्यादा महबूब कोई शै नहीं है जो उन्हें मन्ज़िल से करीबतर कर दे और अपने मरकज़ तक पहुंचा दे।

और इस दुनिया से धोका खा जाने वालों की मिसाल उस क्रौम की है जो सरसब्ज़ व शादाब मक़ाम पर रहे और वहां से दिल उचट जाए तो कहत ज़दा इलाके की तरफ़ चली जाए के इसकी नज़र में क़दीम हालात के छट जाने से ज़्यादा नागवार और दुश्वारगुज़ार कोई शै नहीं है के अब जिस मन्ज़िल पर वारिद हुए हैं और जहां तक पहुंचे हैं वह किसी क़ीमत पर इख्तेयार करने के काबिल नहीं है।

बेटा! देखो अपने और ग़ैर के दरम्यान मीज़ान अपने नफ़स को करार दो और दूसरे के लिये वही पसन्द करो जो अपने लिये पसन्द कर सकते हो और इसके लिये भी वह बात नापसन्द करो जो अपने लिये पसन्द नहीं करते हो, किसी पर जुल्म न करना के अपने ऊपर जुल्म पसन्द नहीं करते हो और हर एक के साथ नेकी करना जिस तरह चाहते हो के सब तुम्हारे साथ नेक बरताव करें और जिस चीज़ को दूसरे से बुरा समझते हो उसे अपने लिये भी बुरा ही

तसव्वुर करना, लोगों की उस बात से राजी हो जाना जिससे अपनी बात से लोगों को राजी करना चाहते हो, बिला इल्म कोई बात ज़बान से न निकालना अगरचे तुम्हारा इल्म बहुत कम है और किसी के बारे में वह बात न कहना जो अपने बारे में पसन्द न करते हो।

याद रखो के खुदपसन्दी राहे सवाब के खिलाफ़ और अक्लों की बीमारी है लेहाज़ा अपनी कोशिश तेज़तर करो और अपने माल को दूसरों के लिये ज़खीरा न बनाओ और अगर दरम्यानी रास्ते की हिदायत मिल जाए तो अपने रब के सामने सबसे ज़्यादा खुजूअ व खुशूअ से पेश आना।

और याद रखो के तुम्हारे सामने वह रास्ता है जिसकी मसाफ़त बईद और मशक्कत शदीद है इसमें तुम बेहतरीन ज़ादे राह की तलाश और बक़द्रे ज़रूरत ज़ादे राह की फ़राहमी से बेनियाज़ हो सकते हो अलबत्ता बोझ हलका रखो और अपनी ताक़त से ज़्यादा अपनी पुश्त पर बोझ मत लादो के यह कर्राबारी एक वबाल बन जाए और फिर जब कोई फ़कीर मिल जाए और तुम्हारे ज़ादे राह को क़यामत तक पहुंचा सकता हो और कल वक़ते ज़रूरत मुकम्मल तरीके से तुम्हारे हवाले कर सकता हो तो उसे ग़नीमत समझो और माल उसी के हवाले कर दो क्योंकि हो सकता है के फिर तुम ऐसे शख्स को ढूंढो और न पाओ और जो तुम्हारी दौलतमन्दी की हालत में तुमसे क़र्ज़ मांग रहा है उस वादे पर के तुम्हारी तंगदस्ती के वक़्त अदा कर देगा तो उसे ग़नीमत जानो।

याद रखो! तुम्हारे सामने एक दुश्वारगुज़ार खाई है जिसमें हलका फुलका आदमी गरांबार आदमी से कहीं अच्छी हालत में होगा और सुस्त रफ़्तार तेज़ कदम दौड़ने वाले की बनिस्बत बुरी

हालत में होगा और इस राह में ला मुहाला तुम्हारी मन्ज़िल जन्नत होगी या दोज़ख। लेहाज़ा उतरने से पहले जगह मुन्तखब कर लो और पड़ाव डालने से पहले इस जगह को ठीक ठाक कर लो, क्यूंके मौत के बाद खुशनुदी हासिल करने का मौका न होगा और न दुनिया की तरफ़ पलटने की कोई सूरत होगी। यकीन रखो के जिसके कब्ज़े में कुदरत में आसमान व ज़मीन के खज़ाने हैं उसने तुम्हें सवाल करने की इजाज़त दे दखी है और कुबूल करने का ज़िम्मा लिया है और हुक्म दिया है के तुम मांगो के वह दे, रहम की दरख्वास्त करो ताके वह रहम करे, उसने अपने ऊपर तुम्हारे दरम्यान दरबान खड़े नहीं किये जो तुम्हें रोकते हों न तुम्हें उस पर मजबूर किया है के तुम किसी को इसके यहां सिफारिश के लिये लाओ तब ही काम हो और तुमने गुनाह किये हों तो उसने तुम्हारे लिये तौबा की गुन्जाइश खत्म नहीं की है, न सज़ा देने में जल्दी की है और न तौबा व अनाबत के बाद वह कभी ताना देता है (के तुमने पहले यह किया था, वह किया था) न ऐसे मौके पर उसने तुम्हें रूसवा किया के जहां तुम्हें रूसवा ही होना चाहिये था और न उसने तौबा के कुबूल करने में (कड़ी शर्तें लगाकर) तुम्हारे साथ सख्तगीरी की है, न गुनाह के बारे में तुमसे सख्ती के साथ जिरह करता है और न अपनी रहमत से मायूस करता है बल्कि उसने गुनाह से किनाराकशी को भी एक नेकी करार दिया है और बुराई एक हो तो उसे एक (बुराई) और नेकी एक हो तो उसे दस (नेकियों) के बराबर ठहराया है, उसने तौबा का दरवाज़ा खोल रखा है जब भी उसे पुकारो वह तुम्हारी सुनता है और जब भी राज़ व नियाज़ करते हुए उससे कुछ कहो वह जान लेता है। तुम उसी से मुरादें मांगते हो और उसी के सामने दिल के भेद खोलते हो, उसी से अपने दुख दर्द का रोना रोते हो और मुसीबतों से निकालने की इल्तिजा करते हो और अपने कामों में मदद मांगते हो और उसकी रहमत के खज़ानों से वह चीज़ें तलब करते हो जिनके देने पर और कोई कुदरत नहीं रखता, जैसे उम्रों में दराज़ी, जिस्मानी सेहत व तवानाई और रिज़क में वुसअत और इस पर उसने तुम्हारे हाथ में अपने खज़ानों के

खोलने वाली कुन्जियां दे दी हैं इस तरह के तुम्हें अपनी बारगाह में सवाल करने का तरीका बताया, इस तरह जब तुम चाहो दुआ के जरिये उसकी नेमत के दरवाजों को खुलवा लो, उसकी रहमत के झालों को बरसा लो, हाँ बाज़ औकात कुबूलियत में देर हो तो उससे नाउम्मीद न हो, इसलिये के अतिया नीयत के मुताबिक़ होता है और अकसर कुबूलियत में इसलिये देर की जाती है के साएल के अज़ में इज़ाफ़ा हो, और उम्मीदवार को अतिये और ज़्यादा मिलें और कभी यह भी होता है के तुम एक चीज़ मांगते हो और वह हासिल नहीं होती मगर दुनिया या आखिरत में इससे बेहतर चीज़ें तुम्हें मिल जाती हैं या तुम्हारे किसी बेहतर मफ़ाद के पेशे नज़र तुम्हें इससे महरूम कर दिया जाता है इसलिये के तुम कभी ऐसी चीज़ें भी तलब कर लेते हो के अगर तुम्हें दे दी जाएं तो तुम्हारा दीन तबाह हो जाए। लेहाज़ा तुम्हें बस वह चीज़ तलब करना चाहिये जिसका जमाल पाएदार हो और जिसका वबाल तुम्हारे सर न पड़ने वाला हो, रहा दुनिया का माल तो न यह तुम्हारे लिये रहेगा और न तुम उसके लिये रहोगे।

याद रखो! तुम आखिरत के लिये पैदा हुए हो न के दुनिया के लिये, फ़ना के लिये खल्क हुए हो न बक्का के लिये, मौत के लिये बने हो न हयात के लिये, तुम एक ऐसी मन्ज़िल में हो जिसका कोई ठीक नहीं है और एक ऐसे घर में हो जो आखिरत का साज़ो सामान मुहैय्या करने के लिये है और सिर्फ़ मन्ज़िले आखिरत की गुज़रगाह है। तुम वह हो जिसका मौत पीछा कये हुए है जिससे कोई भागने वाला बच नहीं सकता है और उसके हाथ से निकल नहीं सकता है, वह बहरहाल उसे पा लेगी। लेहाज़ा उसकी तरफ़ से होशियार हो के वह तुम्हें किसी बुरे हाल में पकड़ ले और तुम ख़ाली तौबा के लिये सोचते ही रह जाओ और वह तुम्हारे और तौबा के दरम्यान हाएल हो जाए के इस तरह गोया तुमने अपने नफ़स को हलाक कर दिया।

फ़रज़न्द! मौत को बराबर याद करते रहो और इन हालात को याद करते रहो जिन पर अचानक वारिद होना है और जहां तक मौत के बाद जाना है ताके वह तुम्हारे पास आए तो तुम एहतियाती सामान कर चुके हो और अपनी ताक़त को मज़बूत बना चुके हो और वह अचानक आकर तुम पर क़ब्ज़ा न कर ले और खबरदार अहले दुनिया को दुनिया की तरफ़ झुकते और इस पर मरते देख कर तुम धोके में न आ जाना के परवरदिगार तुम्हें इसके बारे में बता चुका है और वह खुद भी अपने मसाएब सुना चुकी है और अपनी बुराइयों को वाज़ेह कर चुकी है। दुनियादार अफ़राद सिर्फ़ भौंकने वाले कुत्ते और फाउण्डेशन खाने वाले दरिन्दे हैं जहां एक-दूसरे पर भौंकता है और ताक़त वाला कमज़ोर को खा जाता है और बड़ा छोटे को कुचल डालता है, यह सब जानवर हैं जिनमें बाज़ बन्धे हुए हैं और बाज़ आवारा, जिन्होंने अपनी अक़लें गुम कर दी हैं और नामालूम रास्ते पर चल पड़े हैं गोया दुश्वार गुज़ार वादियों में मुसीबतों में चरने वाले हैं जहां न कोई चरवाहा है हो सीधे रास्ते पर लगा सके और न कोई चराने वाला है जो उन्हें चरा सके। दुनिया ने इन्हें गुमराही के रास्ते पर डाल दिया है और इनकी बसारत को मिनाराए हिदायत के मुक़ाबले में सल्ब कर लिया है और वह हैरत के आलम में सरगर्दा हैं और नेमतों में डूबे हुए हैं, दुनिया को अपना माबूद बना लिया है और वह उनसे खेल रही है और वह इससे खेल रहे हैं और सबने आखिरत को यकसर भुला दिया है।

ठहरो! अन्धेरे को छटने दो, ऐसा महसूस होगा जैसे काफ़िले आखिरत की मन्ज़िल में उतर चुके हैं और करीब है के तेज़ रफ़्तार अफ़राद अगले लोगों से मुलहक़ हो जाएं।

फ़रज़न्द! याद रखो के जो शब व रोज़ की सवारी पर सवार है वह गोया सरगर्मे सफ़र है चाहे ठहरा ही क्यों न रहे और मसाफ़त क़ता कर रहा है चाहे इत्मीनान से मुक़ीम ही क्यों न रहे। यह

बात यक्रीन के साथ समझ लो के तुम न हर उम्मीद को पा सकते हो और न अजल से आगे जा सकते हो, तुम अगले लोगों के रास्ते ही पर चल रहे हो लेहाजा तलब में नर्म रफ्तारी से काम लो और कस्बे माश में मयानारवी इख्तेयार करो, वरना बहुत सी तलब इन्सान को माल की महरूमि तक पहुंचा देती है और हर तलब करने वाला कामयाब भी नहीं होता है और न हर एतदाल से काम लेने वाला महरूम ही होता है, अपने नफ़स को हर तरह की पस्ती से बलन्दतर रखो चाहे वह पस्ती पसन्दीदा चीज़ो तक पहुंचा ही क्यों न दे इसलिये के जो इज़्जते नफ़स दे दोगे उसका कोई बदल नहीं मिल सकता और खबरदार किसी के गुलाम न बन जाना जबके परवरदिगार ने भी आज़ाद करार दिया है। देखो उस चीज़ में कोई ख़ैर नहीं है जो शर के ज़रिये हासिल हो और वह आसानी आसानी नहीं है जो दुश्वारी के रास्ते से मिले। (((-बेहतरीन फ़लसफ़ाए हयात और बलीगतरीन मोएज़ा है अगर इन्सान फ़िक्रे सलीम और अक्ले मुस्तकीम रखता हो, हर गुज़रने वाला दिन और हर बीत जाने वाली रात इन्सान की ज़िन्दगी में से एक हिस्सा कम कर देती है और इस तरह इन्सान मुसलसल सरगर्मे सफ़र है अगरचे मकानी एतबार से अपनी जगह पर मुक़ीम है और हरकत भी नहीं कर रहा है, हरकत सिर्फ़ मकान ही में नहीं होती है, ज़मान में भी होती है और यही हरकत इन्सान को सरहदे मौत तक ले जाती है-)))

खबरदार लालच की सवारियां तेज़ रफ्तारी दिखलाकर तुम्हें हलाकत के चश्मों पर न वारिद कर दें और अगर मुमकिन हो के तुम्हारे और खुदा के दरम्यान कोई साहबे नेमत न आने पाए तो ऐसा ही करो के तुम्हें तुम्हारा हिस्सा बहरहाल मिलने वाला है और अपना नसीब बहरहाल लेने वाले हो और अल्लाह की तरफ़ से थोड़ा भी मखलूकात के बहुत से ज़्यादा बेहतर होता है। अगरचे सब अल्लाह ही की तरफ़ से होता है।

खामोशी से पैदा होने वाली कोताही की तलाफ़ी कर लेना गुफ़्तगू से होने वाले नुक़सान के तदारूक से आसानतर है, बरतन के अन्दर का सामान मुंह बन्द करके महफ़ूज़ किया जाता है और अपने हाथ की दौलत का महफ़ूज़ कर लेना दूसरे के हाथ की नेमत के तलब करने से ज़्यादा बेहतर है। मायूसी की तल्ख़ी को बरदाश्त करना लोगों के सामने हाथ फैलाने से बेहतर है और पाकदामनी के साथ मेहनत मशक्कत करना फ़िस्क़ व फ़ुज़ूर के साथ मालदारी से बेहतर है।

हर इन्सान अपने राज़ को दूसरों से ज़्यादा महफ़ूज़ रख सकता है और बहुत से लोग हैं जो उस अम्र के लिये दौड़ रहे हैं जो उनके लिये नुक़सानदेह है। ज़्यादा बात करने वाला बकवास करने लगता है और ग़ौर व फ़िक्क़ करने वाला बसीर हो जाता है। अहले ख़ैर के साथ रहो ताके उन्हीं में शुमार हो और अहले शर से अलग रहो ताके उनसे अलग हिसाब किये जाओ। बदतरीन इनआम माले हराम है और बदतरीन जुल्म कमज़ोर आदमी पर जुल्म है। नर्मी नामुनासिब हो तो सख़्ती ही मुनासिब है। कभी कभी दवा मर्ज़ बन जाती है और मर्ज़ दवा और कभी कभी ग़ैर मुखलिस भी नसीहत की बात कर देता है और कभी-कभी मुखलिस भी ख़यानत से काम ले लेता है। देखो ख़बरदार, ख़्वाहिशात पर एतमाद न करना के यह अहमकों का सरमाया हैं अक्लमन्दी तजुर्बात के महफ़ूज़ रखने में है और बेहतरीन तजुर्बा वही है जिससे नसीहत हासिल हो, फ़ुरसत से फ़ायदा उठाओ क़ब्ल इसके के रन्ज व अन्दोह का सामना करना पड़े, हर तलबगार मतलूब को हासिल भी नहीं करता है और हर ग़ायब पलट कर भी नहीं आता है।

फ़साद की एक किस्म ज़ादे राह का ज़ाया कर देना और आक़ेबत को बरबाद कर देना भी है, हर अम्र की एक आक़ेबत है और अनक़रीब वह तुम्हें मिल जाएगा जो तुम्हारे लिये मुक़द्दर हुआ है। तिजारत करने वाला वही होता है जो माल को ख़तरे में डाल सके, कभी थोड़ा माल ज़्यादा

(तमाले फ़रावां) से ज़्यादा बाबरकत होता है। उस मददगार में कोई ख़ैर नहीं है जो ज़लील हो और वह दोस्त बेकार है जो बदनाम हो। ज़माने के साथ सहूलत का बरताव करो जब तक इसका ऊंट काबू में रहे और किसी चीज़ को उससे ज़्यादा की उम्मीद में ख़तरे में मत डालो, ख़बरदार कहीं दुश्मनी और अनाद की सवारी तुमसे मुंहज़ोरी न करने लगे।

अपने नफ़्स को अपने भाई के बारे में क़तअ ताल्लुक के मुक़ाबले में ताल्लुकात, आराज़ के मुक़ाबले में मेहरबानी, कंजूसी के मुक़ाबले में अता, (जब वह दोस्ती तोड़े तो तुम उसे जोड़ो, वह मुंह फेर ले तो तुम आगे बढ़ो और लुत्फ़ व मेहरबानी से पेश आओ, वह तुम्हारे लिये कन्जूसी करे तो तुम उस पर खर्च करो), दूरी के मुक़ाबले में कुरबत, शिद्दत के मुक़ाबले में नर्मी और जुर्म के मौक़े पर माज़ेरत के लिये आम़ादा करो गोया के तुम उसके बन्दे हो और उसने तुम पर कोई एहसान किया है और ख़बरदार एहसान को भी बेमहल न करार देना और न किसी न अहल के साथ एहसान करना, अपने दुश्मन के दोस्त को अपना दोस्त न बनाना के तुम अपने दोस्त के दुश्मन हो जाओ और अपने भाई को मुख़लिसाना नसीहत करते रहना चाहे उसे अच्छी लगें या बुरी, गुस्से को पी जाओ के मैंने अन्जामकार के एतबार से इससे ज़्यादा शीरीं कोई घूंट नहीं देखा है और न आक़ेबत के लेहाज़ से लज़ीज़तर, और जो तुम्हारे साथ सख़्ती करे उसके लिये नरम हो जाओ शायद कभी वह भी नरम हो जाए, अपने दुश्मन के साथ एहसान करो के इसमें दो में से एक कामयाबी और शीरींतरीन कामयाबी है और अगर अपने भाई से क़तअ ताल्लुक करना चाहते हो तो अपने नफ़्स में इतनी गुंजाइश रखो के अगर उसे किसी दिन वापसी का खयाल पैदा हो तो वापस आ सके।

जो तुम्हारे बारे में अच्छा खयाल रखे उसके खयाल को ग़लत न होने देना, बाहेमी रवाबित की बिना पर किसी भाई के हक़ को ज़ाया न करना के जिसके हक़ को ज़ाया कर दिया फिर वह वाक़ेअन भाई नहीं है और देखो तुम्हारे घरवाले तुम्हारी वजह से बदबख़्त न होने पाएं और जो तुमसे किनाराकश होना चाहते हैं उसके पीछे न लगे रहो, तुम्हारा कोई भाई क़तअ ताल्लुक़ात में तुम पर बाज़ी न ले जाए और तुम ताल्लुक़ात मज़बूत कर लो और ख़बरदार बुराई करने में नेकी करने से ज़्यादा ताक़त का मुज़ाहिरा न करना और किसी ज़ालिम के जुल्म को बहुत बड़ा तसव्वुर न करना के वह अपने को नुक़सान पहुंचा रहा है और तुम्हें फ़ायदा पहुंचा रहा है और जो तुम्हें फ़ायदा पहुंचाए उसकी जज़ा यह नहीं है के तुम उसके साथ बुराई करो।

और फ़रज़न्द!! याद रखो के रिज़क़ की दो किस्में हैं, एक रिज़क़ वह है जिसे तुम तलाश कर रहे हो और एक रिज़क़ वह है जो तुमको तलाश कर रहा है के अगर ततुम उस तक न जाओगे तो वह खुद तुम तक आ जाएगा। ज़रूरत के वक़्त खुजूअ व खुशू का इज़हार किस क़द्र ज़लीलतरीन बात है और बे नियाज़ी के आलम में बदसलूकी किस क़द्र क़बीह हरकत है। इस दुनिया में तुम्हारा हिस्सा इतना ही है जिससे अपनी आक़ेबत का इन्तेज़ाम कर सको, और किसी चीज़ के हाथ से निकल जाने पर परेशानी का इज़हार करना है तो हर उस चीज़ पर भी फ़रयाद करो जो तुम तक नहीं पहुंची है। जो कुछ हो चुका है उसके ज़रिये इसका पता लगाओ जो होने वाला है के मामलात तमाम के तमाम एक ही जैसे हैं और ख़बरदार उन लोगों में न हो जाओ जिन पर उस वक़्त तक नसीहत असरअन्दाज़ नहीं होती है जब तक पूरी तरह तकलीफ़ न पहुंचाई जाए इसलिये के इन्साने आक़िल अदब से नसीहत हासिल करता है और जानवर मारपीट से सीधा होता है,, दुनिया में वारिद होने वाले हुमूम व आलाम को सब्र के अज़ाएम और यक़ीन के हुस्न के ज़रिये रद कर दो, याद रखो के जिसने भी एतदाल को छोड़ा वह मुनहरिफ़ हो गया,

साथी एक तरह का शरीके नसब होता है और दोस्त वह है जो गीबत में भी सच्चा दोस्त रहे। ख्वाहिश अन्धपन की शरीक कार होती है। बहुत से दूर वाले ऐसे होते हैं जो करीब वालों से करीबतर होते हैं और बहुत से करीब वाले दूर वालों से ज़्यादा दूरतर होते हैं।

(((-इस मसले का ताल्लुक दुनिया में इखलाकी बरताव से है जहां ज़ालिमों को इस्लामी इखलाकात से आगाह किया जाता है और कभी लश्करे माविया पर बन्दिश आब को रोक दिया जाना जाता है और कभी इब्ने मुलजिम को सेराब कर दिया जाता है। वरना अगर दीन व मज़हब खतरे में पड़ जाए तो मज़हब से ज़्यादा अज़ीज़तर कोई शै नहीं है और ज़ालिमों से जेहाद भी वाजिब हो जाता है। इसमें कोई शक नहीं है के इन्सान की ज़िन्दगी में बेशुमार ऐसे मौके आते हैं जहां यह एहसास पैदा होता है के जैसे इन्सान रिज़क की तलाश में नहीं है बल्कि रिज़क इन्सान को तलाश कर रहा है और इन्सान जहां जहां जा रहा है उसका रिज़क उसके साथ जा रहा है। और परवरदिगार ने ऐसे वाक़ेआत का इन्तेज़ाम इसीलिये किया है के इन्सान को इसकी रज़ाकियतत और ईफ़ाए वादा का यक़ीन हो जाए और वह रिज़क की राह में इज़ज़ते नफ़स या दारे आखिरत को पहुंचने के लिये तैयार न हो-)))

ग़रीब वह है जिसका कोई दोस्त न हो, जो हक़ से आगे बढ़ जाए उसके रास्ते तंग हो जाते हैं और जो अपनी हैसियत पर कायम रहता है उसकी इज़ज़त बाकी रह जाती है तुम्हारे हाथों में मज़बूत तरीन वसीला तुम्हारा और खुदा का रिश्ता है, और जो तुम्हारी परवाह न करे वही तुम्हारा दुश्मन है। कभी कभी मायूसी भी कामयाबी बन जाती है जब हर्स व लालच मूजिबे हलाकत हो, हर ऐब ज़ाहिर नहीं हुआ करता है और न हर फुरसत का मौक़ा बार-बार मिला करता है, कभी कभी ऐसा भी होता है के आंखों वाला रास्ते से भटक जाता है और अन्धा सीधे

रास्ते को पा लेता है, बुराई को पसे पुश्त डालते रहो के जब भी चाहो उसकी तरफ़ बढ़ सकते हो। जाहिल से क़तअ ताल्लुक़ आक़िल से ताल्लुकात के बराबर है, जो ज़माने की तरफ़ से मुतमईन हो जाता है ज़माना उससे ख़यानत करता है और जो इसे बड़ा समझता है उसे ज़लील कर देता है हर तीरअन्दाज़ का तीर निशाने पर नहीं बैठता है जब हाकिम बदल जाता है तो ज़माना बदल जाता है, रफ़ीक़ सफ़र के बारे में रास्ते पर चलने से पहले दरयाफ़्त करो और हमसाये के बारे में अपने घर से पहले ख़बरगीरी करो, ख़बरदार ऐसी कोई बात न करना जो मज़हकाख़ेज़ हो चाहे दूसरों ही की तरफ़ से नक़ल की जाए।

ख़बरदार औरतों से मशविरा न करना के उनकी राय कमज़ोर और उनका इरादा सुस्त होता है, उन्हें परदे में रखकर उनकी निगाहों को ताक़ झांक से महफूज़ रखो के परदे की सख़्ती उनकी इज़ज़त व आबरू को बाकी रखने वाली है और उनका घर से निकल जाना ग़ैर मोतबर अफ़राद के अपने घर में दाख़िल करने से ज़्यादा ख़तरनाक नहीं है, अगर मुमकिन हो के वह तुम्हारे अलावा किसी को न पहचानें तो ऐसा ही करो और ख़बरदार उन्हें उनके ज़ाती मसाएल से ज़्यादा इख़्तेयारात न दो इसलिये के औरत एक फूल है और हाकिम व मुतसर्फ़ नहीं है। उसके पास व लेहाज़ को उसकी ज़ात से आगे न बढ़ाओ और उसमें दूसरों की सिफ़ारिश का हौसला न पैदा होने दो, देखो ख़बरदार ग़ैरत के मवाक़े के अलावा ग़ैरत का इज़हार मत करना के इस तरह अच्छी औरत भी बुराई के रास्ते पर चली जाएगी और बेऐब भी मशकूक हो जाती है।

अपने हर ख़ादिम के लिये एक अमल मुक़र्रर कर दो जिसका मुहासेबा कर सको के यह बात एक दूसरे के हवाले करने से कहीं ज़्यादा बेहतर है। अपने क़बीले का एहतेराम करो के यही तुम्हारे लिये परवाज़ का मरतबा रखते हैं और यही तुम्हारी असल हैं जिनकी तरफ़ तुम्हारी

बाज़गशत है और तुम्हारे हाथ हैं जिनके ज़रिये हमला कर सकते हो। अपने दीन व दुनिया को परवरदिगार के हवाले कर दो और उससे दुआ करो के तुम्हारे हक़ में दुनिया व आखिरत में बेहतरीन फैसला करे, वस्सलाम। (((-इस कलाम में मुख्तलिफ़ अहतेमालात पाए जाते हैं -- एक एहतेमाल यह है के उस दूर के हालात की तरफ़ इशारा है जब औरतें 99 फ़ीसदी जाहिल हुआ करती थीं और ज़ाहिर है के पढ़े लिखे इन्सान का किसी जाहिल से मशिवरा करना नादानी के अलावा कुछ नहीं है। दूसरा एहतेमाल यह है के इसमें औरत की जज़्बाती फ़ितरत की तरफ़ इशारा है के इस मशविरे में जज़्बात की फ़रमानी का खतरा ज़्यादा है लेहाज़ा अगर कोई औरत इस नुक़्स से बलन्दतर हो जाए तो इससे मशिवरा करने में कोई हर्ज नहीं है। तीसरा एहतेमाल यह है के इसमें उन मखसूस औरतों की तरफ़ इशारा हो जिनकी राय पर अमल करने से आलमे इस्लाम का एक बड़ा हिस्सा तबाही के घाट उतर गया है और आज तक उसी तबाही के असरात देखे जा रहे हैं।-)))

32-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)

तुमने लोगों की एक बड़ी जमाअत को हलाक कर दिया है के उन्हें अपनी गुमराही से धोके में रखा है और अपने समन्दर की मौजों के हवाले कर दिया है जहां तारीकियां उन्हें ढांपे हुए हैं और शुबहात के थपेड़े उन्हें तहो बाला कर रहे हैं नतीजा यह हुआ के वह राहे हक से हट गए और उलटे पांव पलट गए और पीठ फेरकर चलते बने और अपने हसब व नसब पर भरोसा कर बैठे अलावा उन चन्द अहले बसीरत के जो वापस आ गए और उन्होंने तुम्हें पहचानने के बाद छोड़ दिया और तुम्हारी हिमायत से भाग कर अल्लाह की तरफ आ गए जबके तुमने उन्हें दुश्वारियों में मुब्तिला कर दिया था और राहे एतदाल से हटा दिया था, लेहाजा ऐ माविया, अपने बारे में खुदा से डरो और शैतान से जान छुड़ाओ के यह दुनिया बहरहाल तुमसे अलग होने वाली है और आखिरत बहुत करीब है- वस्सलाम

33- आपका मकतूबे गिरामी (मक्के के गवर्नर कसम बिन अब्बास के नाम)

अम्माबाद! मेरे मगरिबी इलाके के जासूस ने मुझे लिख कर इत्तेला दी है के मौसमे हज के लिये शाम की तरफ से कुछ ऐसे लोगों को भेजा गया है जो दिलों के अन्धे, कानों के बहरे और आंखों के महरूमे ज़िया हैं, यह हक को बातिल से मुश्तबा करने वाले हैं और खालिक की नाफरमानी करके मखलूक को खुश करने वाले हैं इनका काम दीन के ज़रिये दुनिया को दोहना है

और यह नेक किरदार, परहेज़गार अफ़राद की आख़िरत को दुनिया के ज़रिये ख़रीदने वाले हैं जबके ख़ैर उसका हिस्सा है जो ख़ैर का काम करे और शर उसके हिस्से में आता है जो शर का अमल करता है। देखो अपने मनसबी फ़राएज़ के सिलसिले में एक तजुर्बेकार, पुख़्ताकार, मुख़लिस, होशियार इन्सान की तरह क़याम करना जो अपने हाकिम का ताबेअ और अपने इमाम का इताअतगुज़ार हो और ख़बरदार कोई ऐसा काम न करना जिसकी माज़ेरत करना पड़े और राहत व आराम में मग़रूर न हो जाना और न शिदत के मवाके पर कमज़ोरी का मुज़ाहेरा करना, वस्सलाम

34-आपका मकतूबे गिरामी

(मोहम्मद बिन अबीबकर के नाम, जब यह इत्तेलाअ मिली के वह अपनी माज़ूली और मालिके अशतर के तक्रूर से रंजीदा हैं और फिर मालिके अशतर मिस्र पहुंचने से पहले इन्तेकाल भी कर गए)

अम्माबाद! मुझे मालिके अशतर के मिस्र की तरफ़ भेजने के बारे में तुम्हारी बदली की इत्तेलाअ मिली है। (((-तबरी का बयान है के हत्तात मजाशई एक जमाअत के साथ माविया के दरबार में वारिद हुआ माविया ने सबको एक एक लाख इनाम दिया और हत्तात को सत्तर हज़ार तो उसने एतराज़ किया, माविया ने कहा के मैंने इनसे इनका दीन ख़रीदा है, हत्तात ने कहा के तो मुझसे भी ख़रीद लीजिये? यह सुनना था के माविया ने एक लाख पूरा कर दिया। अब्दुल्लाह बिन अब्बास के भाई थे और मक्के पर हज़रत के गवर्नर थे जो हज़रत की शहादत तक अपने ओहदे पर फ़ाएज़ रहे और उसके बाद माविया के दौर में समरकन्द में क़त्ल कर दिये गए। मोहम्मद बिन अबीबकर जनाबे असमा बिनते उमैस के फ़रज़न्द थे जिन्होंने पहले हज़रत जाफ़रे

तय्यार से अक्द किया और उनसे जनाबे अब्दुल्लाह बिन जाफ़र पैदा हुए। इसके बाद अबूबक्र से अक्द किया जिससे मोहम्मद की विलादत हुई और आखिर में मौलाए कायनात (अ0) से अक्द किया जिससे यहया पैदा हुए और इस तरह मोहम्मद अबूबक्र के फ़रज़न्द और हज़रत के परवरदा थे। उन्हें मिस्र का गवर्नर बनाया, इसके बाद माविया और अम्र व आस के खतरे के पेशे नज़र उनकी जगह मालिके अशतर का तक्रूर किया लेकिन माविया ने उन्हें रास्ते ही में ज़हर दिलवा दिया और इस तरह मोहम्मद अपने ओहदे पर बाकी रह गए लेकिन उन्हें माज़ूली से जो सदमा हुआ था उसके तदारूक में हज़रत ने यह खत इरसाल फ़रमाया।-)))

हालांके मैंने यह काम इसलिये नहीं किया के तुम्हें काम में कमज़ोर पाया था या तुमसे ज़्यादा मेहनत का मुतालेबा करना चाहा था बल्कि अगर मैंने तुमसे तुम्हारे ज़ेरे असर इक्तेदार को लिया भी था तो तुम्हें ऐसा काम देना चाहता था जो तुम्हारे लिये मशक्कत के एतबार से आसान हो और तुम्हें पसन्द भी हो।

जिस शख्स को मैंने मिस्र का गवर्नर करार दिया था वह मेरा मर्द मुखलिस और मेरे दुश्मन के लिये सख्त किस्म का दुश्मन था। खुदा उस पर रहमत नाज़िल करे जिसने अपने दिन पूरे कर लिये और अपनी मौत से मुलाकात कर ली। हम उससे बहरहाल राज़ी हैं, अल्लाह उसे अपनी रिज़ा इनायत फ़रमाए और उसके सवाब को मुज़ाएफ़ कर दे। अब तुम दुश्मन के मुकाबले में निकल पड़ो और अपनी बसीरत पर चल पड़ो जो तुमसे जंग करे उससे जंग करने के लिये कमर को कस लो और दुश्मन राहे खुदा की दावत दे दो। इसके बाद अल्लाह से मुसलसल मदद मांगते रहो के वही तुम्हारे लिये हर मुहिम में काफ़ी है और वही हर नाज़िल होने वाली मुसीबत में मदद करने वाला है। इन्शाअल्लाह।

35-आपका मकतूबे गिरामी (अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम -

मोहम्मद बिन अबीबक्र की शहादत के बाद)

अम्माबाद! देखो मिस्र पर दुश्मन का कब्ज़ा हो गया है और मोहम्मद बिन अबीबक्र शहीद हो गए हैं (खुदा उन पर रहमत नाज़िल करे) मैं उनकी मुसीबत का अज़्र खुदा से चाहता हूँ के वह मेरे मुखलिस फ़रज़न्द और मेहनतकश गवर्नर थे। मेरी तेग़े बर्ान और मेरे दिफ़ाई सुतून, मैंने लोगों को उनसे मुलहक़ हो जाने पर आम़ादा किया था और उन्हें हुक़म दिया था के जंग से पहले उनकी मदद को पहुंच जाएं और उन्हें ख़ुफिया और एलानिया हर तरह दावते अमल दी थी और बार-बार आवाज़ दी थी लेकिन बाज़ अफ़राद बादिले नख्वास्ता आए और बाज़ ने झूटे बहाने कर दिये, कुछ तो मेरे हुक़म को नज़र अन्दाज़ करके घर ही में बैठे रह गए, अब मैं परवरदिगार से दुआ करता हूँ के मुझे उनकी तरफ़ से जल्द कशाइशे अम्र इनायत फ़रमा दे के खुदा की क़सम अगर मुझे दुश्मन से मुलाक़ात करके वक़ते शहादत की आरज़ू न होती और मैंने अपने नफ़्स को मौत के लिये आम़ादा न कर लिया होता तो मैं हरगिज़ यह पसन्द न करता के उन लोगों के साथ एक दिन भी दुश्मन से मुक़ाबला करूँ या खुद उन लोगों से मुलाक़ात करूँ।

36- आपका मकतूबे गिरामी (अपने भाई अक़ील के नाम जिसमें अपने बाज़ लशक़रों का ज़िक्र फ़रमाया है और यह दर हक़ीक़त अक़ील के मकतूब का जवाब है)

पस मैंने उसकी तरफ़ मुसलमानों का एक लशक़रे अज़ीम रवाना कर दिया और जब उसे इस अम्र की इत्तेलाअ मिली तो उसने दामन समेट कर फ़रार इख़तेयार किया और शरमिंदा होकर पीछे हट गया तो हमारे लशकर ने उसे रास्ते में जा लिया जबके सूरज डूबने के करीब था, नतीजा यह हुआ के दोनों में एक मुख़्तसर झड़प हुई और एक साअत न गुज़रने पाई थी के उसने भाग कर निजात हासिल कर ली जबके उसे गले से पकड़ा जा चुका था और चन्द सांसों के अलावा कुछ बाक़ी न रह गया था। (((-मसऊदी ने मेरूजुल ज़हब में सन 35 हिजरी के हवादिस में इस वाक़ेए को नक़ल किया है के “माविया ने अम्र व इब्नुलआस की सरक़र्दगी में 4 हज़ार का लशकर मिस्र की तरफ़ रवाना किया और इसमें माविया बिन ख़दीज जैसे और दीगर अफ़राद को भी शामिल कर दिया, मुक़ामे मसनात पर मोहम्मद बिन अबीबक्र ने इस लशकर का मुक़ाबला किया लेकिन असहाब की बेवफ़ाई की बिना पर मैदान छोड़ना पड़ा। इसके बाद दोबारा मिस्र के इलाक़े में रन पड़ा और आख़िर में मोहम्मद बिन अबीबक्र गिरफ़्तार कर लिया गया और उन्हें जीते जी एक गधे की खाल में रखकर नज़रे आतिश कर दिया गया, जिसका हज़रत को बेहद सदमा हुआ और आपने इस वाक़ेए की इत्तेलाअ बसरा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अब्बास को की और अपने मुक़म्मल जज़बात का इज़हार फ़रमा दिया यहां तक के अहले इराक़ की बेवफ़ाई की बुनियाद पर आरजूए मौत तक का तज़क़िरा फ़रमा दिया के गोया ऐसे अफ़राद की

शकल भी नहीं देखना चाहते हैं जो राहे खुदा में जेहाद करना न जानते हों और यह मौलाए कायनात का दर्से अमल हर दौर के लिये है के जिस क़ौम में जज़बए कुरबानी नहीं है, अली अ0 न उन्हें देखना पसन्द करते हैं और न उन्हें अपने शियों में शामिल करना चाहते हैं।-)))

इस तरह बड़ी मुश्किल से उसने जान बचाई लेहाज़ा अब कुरैश और गुमराही में इनकी तेज़रफ़्तारी और तफ़रिके में इनकी गर्दिश और ज़लालत में इनकी मुंहज़ोरी का ज़िक्र छोड़ दो के इन लोगों ने मुझसे जंग पर वैसे ही इत्तेफ़ाक़ कर लिया है जिस तरह रसूले अकरम (स0) से जंग पर इत्तेफ़ाक़ किया था, अब अल्लाह ही कुरैश को इनके किये का बदला दे के इन्होंने मेरी कराबत का रिश्ता तोड़ दिया और मुझसे मेरे मांजाए की हुकूमत सल्ब कर ली।

और यह जो तुमने जंग के बारे में मेरी राय दरयाफ़्त की है तो मेरी राय यही है के जिन लोगों ने जंग को हलाल बना रखा है उनसे जंग करता रहूं यहां तक के मालिक की बारगाह में हाज़िर हो जाऊँ। मेरे गिर्द लोगों का इजतेमाअ मेरी इज़ज़त में इज़ाफ़ा नहीं कर सकता है और न उनका मुतफ़र्रिक़ हो जाना मेरी वहशत में इज़ाफ़ा कर सकता है और मेरे बरादर अगर तमाम लोग भी मेरा साथ छोड़ दे तो आप मुझे कमज़ोर और खौफ़ज़दा न पाएंगे और न जुल्म का इकरार करने वाला, कमज़ोर और किसी काएद के हाथ में आसानी से ज़माम पकड़ा देने वाला और किसी सवार के लिये सवारी की सहूलत देने वाला पाएंगे बल्कि मेरी वही सूरतेहाल होगी जिसके बारे में क़बीलए बनी सलीम वाले ने कहा है “अगर तू मेरी हाल के बारे में दरयाफ़्त कर रही है तो समझ ले के मैं ज़माने के मुश्किलात में सब्र करने वाला और मुस्तहक़म इरादे वाला हूँ, मेरे लिये नाक़ाबिले बरदाश्त है के मुझे परेशान हाल देखा जाए और दुश्मन ताने दे या दोस्त इस सूरते हाल से रंजीदा हो जाए।”

37- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)

ऐ सुबहान अल्लाह! तू नई नई ख्वाहिशात और ज़हमत में डालने वाली हैरत व सरगर्दानी से किस कद्र चिपका हुआ है जबके तूने हकाएक को बरबाद कर दिया है और दलाएल को ठुकरा दिया है जो अल्लाह को मतलूब और बन्दों पर उसकी हुज्जत हैं। (((-मौलाए कायनात (अ0) ने सरकारे दो आलम (स0) को “इब्ने उम्मी’ के लफ़्ज़ से याद फ़रमाया है इसलिये केसरकारे दो आलम (स0) मुसलसल आपकी वालदा माजिदा जनाबे फ़ातिमा बिन्ते असद को अपनी माँ के लफ़्ज़ से याद फ़रमाया करते थे “ इस मक़ाम पर आपने अपनी ज़ात को “इब्ने अबीक’ कह कर याद किया है और भाई नहीं कहा है ताके जनाबे अक़ील इस नुक्ते की तरफ़ मुतवज्जो हो जाएं के हम और आप एक ऐसे बाप के फ़रज़न्द हैं जिनकी ज़िन्दगी में ज़िल्लत के कुबूल करने और जुल्म व सितम के सामने घुटने टेक देने का कोई तसव्वुर नहीं था तो आज मेरे बारे में क्या सोचना है और जेहादे राहे खुदा के बारे में मेरी राय क्या दरयाफ़्त करता है, जब मेरा बाप उसके बाप के मुकाबले में हमेशा जेहाद करता रहा तो मुझे माविया के मुकाबले में हमेशा जेहाद करने में क्या तकल्लुफ़ हो सकता है आखिरकार वह अबूसुफ़ियान का बेटा है और मैं अबूतालिब का फ़रज़न्द हूँ। इसी के साथ आपने इस हकीकत का भी एलान कर दिया के मुकाबला करने वाले दो तरह के होते हैं बाज़ का एतमाद लशक़रों और सिपाहियों पर होता है और बाज़ का एतमाद ज़ाते परवरदिगार पर होता है, लशक़रों पर एतमाद करने वाले पीछे हट सकते हैं लेकिन ज़ाते वाजिब पर एतमाद करने वाले मैदान से क़दम पीछे नहीं हटा सकते हैं न उनका खुदा किसी के मुकाबले में कमज़ोर हो सकता है और न वह किसी क़िल्लत व कसरत से मरऊब हो सकते हैं।-))) रह गया तुम्हारा उस्मान और उनके कातिलों के बारे में झगड़ना तो इसका

मुख्तसर जवाब यह है के तुमने उस्मान की मदद उस वक़्त की है जब मदद में तुम्हारा फ़ायदा था और उस वक़्त लावारिस छोड़ दिया जब मदद में इनका फ़ायदा था- वस्सलाम

38-आपका मकतूबे गिरामी (मालिके अशतर की विलायत के मौक़े पर अहले मिस्र के नाम)

बन्दए खुदा! अमीरूल मोमेनीन अली (अ0) की तरफ़ से उस क़ौम के नाम जिसने खुदा के लिये अपने ग़ज़ब का इज़हार किया जब उसकी ज़मीन में इसकी मासियत की गई और उसके हक़ को बरबाद किया गया। जुल्म ने हर नेक व बदकार और मुक़ीम व मुसाफ़िर पर अपने शामियाने तान दिये और न कोई नेकी रह गई जिसके ज़ेरे साया आराम लिया जा सके और न कोई ऐसी बुराई रह गई जिससे लोग परहेज़ करते।

अम्माबाद! मैंने तुम्हारी तरफ़ बन्दगाने खुदा में से एक ऐसे बन्दे को भेजा है जो ख़ौफ़ के दिनों में सोता नहीं है और दहशत के औकात में दुश्मनों से ख़ौफ़ज़दा नहीं होता है और फ़ाजिरों के लिये आग की गर्मी से ज़्यादा शदीदतर है और इसका नाम मालिक बिन अशतर मज़हजी है लेहाज़ा तुम लोग उसकी बात सुनो और उसके अना व अम्र की इताअत करो जो मुताबिके हक़ हैं के वह अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है जिसकी तलवार कुन्द नहीं होती है और जिसका वार उचट नहीं सकता है, वह अगर कूच करने का हुक्म दे तो निकल खड़े हो और अगर ठहरने के लिये कहे तो फ़ौरन ठहर जाओ इसलिये के वह मेरे अम्र के बग़ैर न आगे बढ़ सकता है और न पीछे हट सकता है। न हमला कर सकता है और न पीछे हट सकता है। मैंने उसके

मामले में तुम्हें अपने ऊपर मुकद्दम कर दिया है और अपने पास से जुदा कर दिया है के वह तुम्हारा मुखलिस साबित होगा और तुम्हारे दुश्मन के मुकाबले में इन्तेहाई सख्तगीर होगा।

39-आपका मकतूबे गिरामी (अम इब्ने आस के नाम)

तूने अपने दीन को एक ऐसे शख्स की दुनिया का ताबे बना दिया है जिसकी गुमराही वाज़ेह है और उसका परदाए उयूब चाक हो चुका है, वह शरीफ़ इन्सान को अपनी बज़्म में बिठाकर ऐबदार और अक़लमन्द को अपनी मसाहेबत से अहमक़ बना देता है, तूने उसके नक़शे क़दम पर क़दम जमाए हैं (((-इब्ने अबेल हदीद ने बिलाज़री के हवाले से नक़ल किया है के उस्मान के मुहासरे के दौर में माविया ने शाम से एक फ़ौज यज़ीद बिन असद क़सरी की सरक़र्दगी में रवाना की और उसे हिदायत देदी के मदीने के बाहर मुक़ाम जी ख़शब में मुक़ीम रहें और किसी भी सूरत में मेरे हुक़म के बग़ैर मदीने में दाख़िल न हों चुनांचे फ़ौज उसी मुक़ाम पर हालात का जाएज़ा लेती रही और क़त्ले उस्मान के बाद वापस शाम बुला ली गई, जिसका खुला हुआ मफ़हूम यह था के अगर इन्केलाबी जमाअत कामयाब न हो सके तो इस फ़ौज की मदद से उस्मान का ख़ात्मा करा दिया जाए और उसके बाद खूने उस्मान का हंगामा खड़ा करके अली (अ0) से ख़िलाफ़त सल्ब कर ली जाए। हकीक़ते अम्र यह है के आज भी दुनिया में उस शामी सियासत का सिक्का चल रहा है और इक़तेदार की ख़ातिर अपने ही अफ़राद का ख़ात्मा किया जा रहा है ताके अपने जराएम की सफ़ाई दी जा सके और दुश्मन के ख़िलाफ़ जंग छेड़ने का जवाज़ पैदा किया जा सके।

अफ़सोस के आलमे इस्लाम ने यह लक़ब ख़ालिद बिन अलवलीद को दे दिया है जिसने जनाबे मालिक बिन नवीरा को बेगुनाह क़त्ल करके उसी रात उनकी ज़ौजा से ताल्लुकात कायम कर

लिये और इस पर हज़रत उमर तक ने अपनी बराहमी का इज़हार किया लेकिन हज़रत अबूबक्र ने सियासी मसालेह के तहत उन्हें “सैफुल्लाह” करार देकर इतने संगीन जुर्म से बरी कर दिया- इन्नल्लाह)))

और उसके बचे खुचे की जुस्तजू की है जिस तरह के कुत्ता शेर के पीछे लग जाता है के उसके पन्जों की पनाह में रहता है और उस वक़्त का मुन्तज़िर रहता है जब शेर अपने शिकार का बचा खुचा फेंक दे और वह उसे खा ले, तुमने तो अपनी दुनिया और आखिरत दोनों को गंवा दिया है, हालांके अगर हक़ की राह पर रहे होते जब भी यह मुद्दा हासिल हो सकता था। बहरहाल अब खुदा ने मुझे तुम पर और अबू सुफ़ियान के बेटे पर काबू दे दिया तो मैं तुम्हारे हरकात का सही बदला दे दूंगा और अगर तुम बच कर निकल गए और मेरे बाद तक बाक़ी रह गए तो तुम्हारा आइन्दा दौर तुम्हारे लिये सख़्त तरीन होगा। वस्सलाम

40-आपका मकतूबे गिरामी (बाज़ गवर्नरो के नाम)

अम्माबाद! मुझे तुम्हारे बारे में एक बात की इत्तेलाअ मिली है, अगर तुमने ऐसा किया है तो अपने परवरदिगार को नाराज़ किया है। अपने इमाम की नाफ़रमानी की है और अपनी अमानतदारी को भी रूसवा किया है। मुझे यह ख़बर मिली है के तुमने बैतुलमाल की ज़मीन को साफ़ कर दिया है और जो कुछ ज़ेरे क़दम था उस पर क़ब्ज़ा कर लिया है और जो कुछ हाथों में था उसे धा गए हो लेहाज़ा फ़ौरन अपना हिसाब भेज दो और यह याद रखो के अल्लाह का हिसाब लोगों के हिसाब से ज़्यादा सख़्त है- वस्सलाम।

41- आपका मकतूबे गिरामी (बाज़ गवर्नरो के नाम)

अम्माबाद, मैंने तुमको अपनी अमानत में शरीककार बनाया था और ज़ाहिर व बातिन में अपना करार दिया था और हमदर्दी और मददगारी और अमानतदारी के एतबार से मेरे घरवालों में तुमसे ज़्यादा मोतबर कोई नहीं था, लेकिन जब तुमने देखा के ज़माना तुम्हारे इब्ने उम पर हमलावर है और दुश्मन आमादाए जंग है और लोगों की अमानत रूसवा हो रही है और उम्मत बेराह और लावारिस हो गई है तो तुमने भी अपने इब्ने उम से मुंह मोड़ लिया और जुदा होने वालों के साथ मुझसे जुदा हो गए और साथ छोड़ने वालों के साथ अलग हो गए और खयानतकारों के साथ खाइन हो गए, न अपने इब्ने उम का साथ दिया और न अमानतदारी का खयाल किया, गोया के तुमने अपने जेहाद से खुदा का इरादा भी नहीं किया था।

(((-यह बात तो वाज़ेह है के हज़रत ने यह खत अपने किसी चचाज़ाद भाई के नाम लिखा है लेकिन उससे कौन मुराद है? इसमें शदीद इख्तेलाफ़ पाया जाता है, बाज़ हज़रात का खयाल है के अब्दुल्लाह बिन अब्बास मुराद हैं वह बसरा के गवर्नर थे लेकिन जब मिस्र में मोहम्मद बिन अबीबक्र का हश्र देख लिया तो बैतुलमाल का सारा माल लेकर मक्के चले गए और वहीं ज़िन्दगी गुज़ारने लगे जिस पर हज़रत ने अपनी शदीद नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और इब्ने अब्बास के तमाम कारनामों पर खते नस्ख खींच दिया और बाज़ हज़रात का कहना है के इब्ने अब्बास जैसे ज़ब्र अलामता और मुफ़स्सिरे कुरान के बारे में इस तरह के किरदार का इमकान नहीं है लेहाज़ा इससे मुराद उनके भाई अब्दुल्लाह बिन अब्बास हैं जो यमन में हज़रत के गवर्नर थे लेकिन बाज़ हज़रात ने इस पर भी एतराज़ किया है के यमन के हालात में इनकी खयानतकारी का कोई तज़क़िरा नहीं है तो एक भाई को बचाने के लिये दूसरे को निशानाए रूस्तम क्यों

बनाया जा रहा है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास लाख आलिम व फ़ाज़िल व मुफ़स्सिरे कुरान क्यों न हों, इमामे मासूम नहीं हैं और बाज़ मामलात में इमाम या मुकम्मल पैरो इमाम के अलावा कोई साबित क़दम नहीं रह सकता है चाहे मर्दे आमी हो या मुफ़स्सिरे कुरान!-))))

और गोया तुम्हारे पास परवरदिगार की तरफ़ से कोई हुज्जत नहीं थी और गोया के तुम इस उम्मत को धोका देकर उसकी दुनिया पर कब्ज़ा करना चाहते थे और तुम्हारी नीयत थी के इनकी ग़फ़लत से फ़ायदा उठाकर उनके अमवाल पर कब्ज़ा कर लें। चुनान्चे जैसे ही उम्मत से खयानत करने की ताक़त पैदा हो गई तुमने तेज़ी से हमला कर दिया और फ़ौरन कूद पड़े और इन तमाम अमवाल को उचक लिया जो यतीमों और बेवाओं के लिये महफूज़ किये गये थे जैसे कोई तेज़ रफ़्तार भेड़िया शिकस्ता या ज़ख्मी बकरियों पर हमला कर देता है, फिर तुम उन अमवाल को हेजाज़ की तरफ़ उठा ले गए और इस हरकत से बेहद मुमतईन और खुश थे और इसके लेने में किसी गुनाह का एहसास भी न था जैसे (खुदा तुम्हारे दुश्मनों का बुरा करे) अपने घर की तरफ़ अपने मां बाप की मीरास का माल ला रहे हो। ऐ सुबहान अल्लाह, क्या तुम्हारा आखिरत पर ईमान ही नहीं है और क्या रोज़े क़यामत के शदीद हिसाब का खौफ़ भी खत्म हो गया है, ऐ वह शख्स जो कल हमारे नज़दीक साहेबाने अक़ल में शुमार होता था, तुम्हारे यह खाना पीना किस तरह गवारा होता है जबके तुम्हें मालूम है के तुम माले हराम खा रहे हो और हराम ही पी रहे हो और फिर अयताम (यतीमों) मसाकीन, मोमेनीन और मुजाहेदीन जिन्हें अल्लाह ने यह माल दिया है और जिनके ज़रिये उन शहरों का तहफ़फ़ूज़ किया है, उनके अमवाल से कनीज़ें ख़रीद रहे हो और शादियां रचा रहे हो।

खुदारा, खुदा से डरो और उन लोगों के अमवाल वापस कर दो के अगर ऐसा न करोगे और खुदा ने कभी तुम पर इख्तेयार दे दिया तो तुम्हारे बारे में वह फैसला करूंगा जो मुझे माजूर बना सके और तुम्हारा खातेमा इसी तलवार से करूंगा जिसके मारे हुए का कोई ठिकाना जहन्नुम के अलावा नहीं है।

खुदा की कसम, अगर यही काम हसन (अ0) व हुसैन (अ0) ने किया होता तो उनके लिये भी मेरे पास किसी नर्मी का इमकान नहीं था और न वह मेरे इरादे पर काबू पा सकते थे जब तक के उनसे हक हासिल न कर लूँ और उनके जुल्म के आसार को मिटा न दूँ।

खुदाए रब्बुल आलमीन की कसम मेरे लिये यह बात हरगिज़ खुशकुन नहीं थी अगर यह सारे अमवाल मेरे लिये हलाल होते और मैं बाद वालों के लिये मीरास बनाकर छोड़ जाता, ज़रा होश में आओ के अब तुम ज़िन्दगी की आखिरी हदों तक पहुंच चुके हो और गोया के ज़ेरे खाक दफ़न हो चुके हो और तुम पर तुम्हारे आमाल पेश कर दिये गए हैं। इस मन्ज़िल पर जहां ज़ालिम हसरत से आवाज़ देंगे, और ज़िन्दगी बरबाद करने वाले वापसी की आरजू कर रहे होंगे और छुटकारे का कोई इमकान न होगा। (((-हज़रत अली (अ0) के मुजाहिदात के इम्तियाज़ात में से एक इम्तियाज़ यह भी है के जिसकी तलवार आप पर चल जाए वह भी जहन्नमी है और जिस पर आपकी तलवार चल जाए वह भी जहन्नमी है इसलिये के आप इमामे मासूम और यदुल्लाह हैं और इमामे मासूम से किसी ग़लती का इमकान नहीं है और अल्लाह का हाथ किसी बेगुनाह और बेख़ता पर नहीं उठ सकता है। काश मौलाए कायनात के मुकाबले में आने वाले जमल व सिफ़फ़ीन के फ़ौजी या सरबराह इस हकीकत से बाख़बर होते और उन्हें इस नुकते का होश रह जाता तो कभी नफ़से पैगम्बर (स0) से मुकाबला करने की हिम्मत न करते। यह किसी ज़ाती इम्तियाज़ का एलान नहीं है, यही बात परवरदिगार ने पैगम्बर (स0) से कही के तुम शिर्क

इख्तेयार कर लगे तो तुम्हारे आमाल भी बरबाद कर दिये जाएंगे और यही बात पैगम्बरे इस्लाम (स0) ने अपनी दुख्तरे नेक अख्तर के बारे में फ़रमाई थी और यही बात मौलाए कायनात (अ0) ने इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ0) के बारे में फ़रमाई है, गोया के यह एक सही इस्लामी किरदार है जो सिर्फ़ उन्हीं बन्दगाने खुदा में पाया जाता है जो मशीयते इलाही के तर्जुमान और एहकामे इलाही की तमसील हैं वरना इस तरह के किरदार का पेश करना हर इन्सान के बस का काम नहीं है।-)))

42-आपका मकतूबे गिरामी

(बहरीन के गवर्नर अम्र बिन अबी सलमा मखजूमी के नाम जिन्हें माज़ूल करके नोमान बिन अजलान अज़ज़रकी को मोअय्यन किया था)

अम्माबाद! मैंने नोमान बिन अजलान अज़ज़रकी को बहरीन का गवर्नर बना दिया है और तुम्हें उससे बेदखल कर दिया है लेकिन न इसमें तुम्हारी कोई बुराई है और न मलामत, तुमने हुकूमत का काम बहुत ठीक तरीके से चलाया है और अमानत को अदा कर दिया है लेकिन अब वापस चले आओ न तुम्हारे बारे में कोई बदगुमानी है न मलामत, न इल्ज़ाम है न गुनाह, असल में मेरा इरादा शाम के ज़ालिमों से मुक़ाबला करने का है लेहाज़ा मैं चाहता हूँ के तुम मेरे साथ रहो के मैं तुम जैसे अफ़राद से दुश्मन से जंग करने और सुतूने दीम कायम करने में मदद लेना चाहता हूँ, इन्शाअल्लाह।

43-आपका मकतूबे गिरामी (मुस्क़ला बिन हबीरा अलशीबानी के नाम

जो अर्द शीर ख़ुरह में आपके गवर्नर थे)

मुझे तुम्हारे बारे में एक ख़बर मिली जो अगर वाक़ेअन सही है तो तुमने अपने परवरदिगार को नाराज़ किया है और अपने इमाम की नाफ़रमानी की है, ख़बर यह है के मुसलमानों के माले ग़नीमत को जिसे उनके नैज़ों और घोड़ों ने जमा किया है और जिसकी राह में इनका खून बहाया

गया है, अपनी क़ौम के उन बटुओं में तक़सीम कर रहे हो जो तुम्हारे हवाख्वाह हैं। कसम उस ज़ात की जिसने दाने को शिगाफ़ता किया है और जानदारों को पैदा किया है। अगर यह बातसही है तो तुम मेरी नज़रों में इन्तेहाई ज़लील हो गए हो और तुम्हारे आमाल का पल्ला हल्का हो जाएगा, लेहाज़ा ख़बरदार अपने रब के हुक्क़ को मामूली मत समझना और अपने दीन को बरबाद करके दुनिया आरास्ता करने की फ़िक्र न करना के तुम्हारा शुमार उन लोगों में हो जाए जिनके आमाल में ख़सारे के अलावा कुछ नहीं है।

याद रखो! जो मुसलमान तुम्हारे पास या मेरे पास हैं उन सबका हिस्सा उस माले ग़नीमत एक ही जैसा है और इसी ऐतबार से वह मेरे पास वारिद होते हैं और अपना हक़ लेकर चले जाते हैं।

44-आपका मक़तूबे गिरामी

(ज़ियाद बिन अबिया के नाम जब आपको ख़बर मिली के माविया उसे अपने नसब में शामिल करके धोका देना चाहता है)

मुझे मालूम हुआ है के माविया ने तुम्हें खत लिखकर तुम्हारी अक़ल को फ़िसलाना चाहा है और तुम्हारी धार को कुन्द बनाने का इरादा कर लिया है, लेहाज़ा ख़बरदार होशियार रहना, यह शैतान है जो इन्सान के पास आगे, पीछे, दाहिने बायें हर तरफ़ से आता है ताके उसे गाफ़िल पाकर उस पर टूट पड़े और ग़फलत की हालत में उसकी अक़ल सल्ब कर ले। (((-अमीरूल मोमेनीन (अ0) का उसूले हूकूमत था के गवर्नरो पर हमेशा कड़ी निगाह रखते थे और उनके तसर्रूफ़ात की निगारानी किया करते थे और जहां किसी ने हुदूदे इस्लामिया से तजावुज़ किया,

फ़ौरन तम्बीही खत तहरीर फ़रमा दिया करते थे और यही वह तजेर् अमल था जिसकी बिना पर बहुत से अफ़राद टूट कर माविया के साथ चले गए और दीन व दुनिया दोनों को बरबाद कर लिया, हबीरह उन्हीं अफ़राद में था और जब हज़रत ने उसके तसरूफ़ात पर तन्कीद फ़रमाई तो मुनहरिफ़ होकर शाम चला गया और माविया से मुलहक़ हो गया लेकिन आपका किरदार शाम के अन्धेरे में चमकता रहा और आज तक दुनिया को इस्लाम की रौशनी दिखला रहा है।-)))

वाक़ेया यह है के अबू सुफ़ियान ने अम्र बिन अलखत्ताब के ज़माने में एक बेसमझी बूझी बात कह दी थी जो शैतानी वसवसों में से एक वसवसे की हैसियत रखती थी जिससे न कोई नसब साबित होता है और न किसी मीरास का इसतेहकाक़ पैदा होता है और इससे तमस्सुक करने वाला एक बिन बुलाया शराबी है जिसे धक्के देकर निकाल दिया जाए या प्याला है जो जीने फ़रस में लटका दिया जाए और इधर-उधर ढलकता रहे। सय्यद रज़ी- इस ख़त को पढ़ने के बाद ज़ियाद ने कहा के रब्बे काबा की क़सम अली (अ0) ने उस अम्र की गवाही दे दी और यह बात उसके दिल से लगी रही यहां तक के माविया ने उसके भाई होने का इदआ कर दिया। वाग़ल उस शख़्स को कहा जाता है जो बज़मे शराब में बिन बुलाए दाख़िल हो जाए और धक्के देकर निकाल दिया जाए। और नूत मजबेज़ब वह प्याला वगैरा है जो मुसाफ़िर के सामान से बान्ध कर लटका दिया जाता है और वह मुसलसल इधर उधर ढलकता रहता है।

45-आपका मक़तूबे गिरामी

(अपने बसरा के गवर्नर उस्मान बिन हुनैफ़ के नाम जब आपको इत्तेलाअ मिली के वह एक बड़ी दावत में शरीक हुए हैं)

अम्माबाद! इब्ने हुनैफ़! मुझे यह खबर मिली है के बसरा के बाज़ जवानों ने तुमको एक दावत में बुलाया था जिसमें तरह-तरह के खुशगवार खाने थे और तुम्हारी तरफ़ बड़े-बड़े प्याले बढ़ाए जा रहे थे और तुम तेज़ी से वहां पहुंच गए थे। मुझे तो यह गुमान भी नहीं था के तुम ऐसी क़ौम की दावत में शिरकत करोगे जिसके ग़रीबों पर जुल्म हो रहा हो और जिसके दौलतमन्द मदओ किये जाते हों, देखो जो लुकमे चबाते हो उसे देख लिया करो और अगर उसकी हकीकत मुश्तबा हो तो उसे फेंक दिया करो और जिसके बारे में यकीन हो के पाकीज़ा है उसी को इस्तेमाल किया करो। याद रखो! के हर मामूम का एक इमाम होता है जिसकी वह इक्तेदा करता है और उसी को नूरे इल्म से कस्बे ज़िया करता है और तुम्हारे इमाम ने तो इस दुनिया में सिर्फ़ दो बोसीदा कपड़ों और दो रोटियों पर गुज़ारा किया है। मुझे मालूम है के तुम लोग ऐसा नहीं कर सकते हो लेकिन कम से कम अपनी एहतियात, कोशिश, उफ़फ़त और सलामत रवी से मेरी मदद करो, खुदा की क़सम मैंने तुम्हारी दुनिया से न कोई सोना जमा किया है और न उस माल व मताअ में से कोई ज़खीरा इकट्ठा किया है और न इन बोसीदा कपड़ों के बदले कोई और मामूली कपड़ा मुहय्या किया है। (((-उस्मान बिन हुनैफ़ अनसार के कबीलए औस की एक नुमायां शख़िसयत थे और यही वजह है के जब ख़िलाफ़ते दोम में ईराक़ के वाली की तलाश हुई तो सबने बिलाइत्तेफ़ाक़ उस्मान बिन हुनैफ़ का नाम लिया और उन्हें अर्जे इराक़ की पैमाइश और इसके खेराज की तअय्युन का ज़िम्मेदार बना दिया गया। अमीरूलमोमेनीन (अ0) ने अपने दौरै हुकूमत में उन्हें बसरा का वाली बना दिया था और वह तल्हा व जुबैर के वारिद होने तक बराबर मसरूफ़े अमल रहे और इसके बाद उन लोगों ने सारे हालात ख़राब कर दिये और बाला आख़िर हज़रत की शहादत के बाद कूफ़े मुन्तक़िल हो गए और वहीं इन्तेक़ाल फ़रमाया। उस्मान के किरदार में किसी तरह के शक व शुब्हे की गुन्जाइश नहीं है लेकिन अमीरूल मोमेनीन (अ0) का इस्लामी निज़ामे अमल यह था के हुक्काम को अवाम के हालात को निगाह में रख कर ज़िन्दगी

गुजारनी चाहिये और किसी हाकिम की ज़िन्दगी को अवाम के हालात से बालातर नहीं होनी चाहिये जिस तरह के हज़रत ने खुद अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी है और मामूली लिबास व ग़िज़ा पर पूरा दौरे हुक्मत गुज़ार दिया है।-)))

और न एक बालिशत पर कब्ज़ा किया है और न एक बीमार जानवर से ज़्यादा ग़िज़ा हासिल किया है। यह दुनिया मेरी निगाह में कड़वी छाल से भी ज़्यादा हकीर और बेकीमत है, हां हमारे हाथों में उस आसमान के नीचे सिर्फ़ एक फ़िदक था मगर उस पर भी एक क़ौम ने अपनी लालच का मुज़ाहिरा किया और दूसरी क़ौम ने उसके जाने की परवाह न की और बहरहाल बेहतरीन फ़ैसला करने वाला परवरदिगार है और वैसे भी मुझे फ़िदक या ग़ैरे फ़िदक से क्या लेना देना है जबके नफ़्स की मन्ज़िल असली कल के दिन क़ब्र है जहां की तारीकी में तमाम आसार मुन्कता हो जाएंगे और कोई ख़बर न आएगी, यह एक ऐसा गढ़ा है जिसकी वुसअत ज़्यादा भी कर दी जाए और खोदने वाला उसे वसीअ भी बना दे तो बाला आखिर पत्थर और ढेले उसे तंग बना देंगे और तह ब तह मिट्टी उसके शिगाफ़ को बन्द कर देगी। मैं तो अपने नफ़्स को तक़वा की तरबियत दे रहा हूँ ताके अज़ीम तरीन ख़ौफ़ के दिन मुतमइन होकर मैदान में आए और फिसलने के मुक़ामात पर साबित क़दम रहे। मैं अगर चाहता तो इस ख़ालिस शहद, बेहतरीन साफ़ शुदा गन्दुम और रेशमी कपड़ों के रास्ते भी पैदा कर सकता था लेकिन ख़ुदा न करे के मुझ पर ख़्वाहिशात का ग़लबा हो जाए और मुझे हिर्स व लालच अच्छे खानों के इख़तेयार करने की तरफ़ खींच कर ले जाएं जबके मुमकिन है के हेजाज़ या यमामा में ऐसे अफ़राद भी हों जिनके लिये एक रोटी का सहारा न हुआ और शिकम सेरी का कोई सामान न हो। भला यह कैसे हो सकता है के मैं शिकम सेर होकर सो जाऊं और मेरी इतराफ़ भूके पेट और प्यासे जिगर तड़प्

रहे हों। क्या मैं शाएर के शेर का मिस्टाक हो सकता हूँ—” तेरी बीमारी के लिये यही काफी है के तू पेट भर कर सो जाए और तेरे इतराफ वह जिगर भी हों जो सूखे चमड़े को भी तरस रहे हों”

के न मेरा नफ़स इस बात से मुतमईन हो सकता है के मुझे “अमीरूल मोमेनीन” कहा जाए और मैं ज़माने के नाखुशगवार हालात में मोमेनीन का शरीके हाल न बनूँ और मामूली ग़िज़ा के इस्तेमाल में उनके वास्ते नमूना न पेश कर सकूँ। मैं इसलिये तो नहीं पैदा किया गया हूँ के मुझे बेहतरीन ग़िज़ाओं का खाना मशगूल कर ले और मैं जानवरों के मानिन्द हो जाऊँ के वह बन्धे होते हैं तो उनका कुल मक़सद चारा होता है और आज़ाद होते हैं तो कुल मशगला इधर-उधर चरना होता है जहां घास फूस से अपना पेट भर लेते हैं और उन्हें इस बात की फ़िक्र भी नहीं होती है के उनका मक़सद क्या है, क्या मैं आज़ाद छोड़ दिया गया हूँ, या मुझे बेकार आज़ाद कर दिया गया है या मक़सद यह है के मैं गुमराही की रस्सी में आन्ध कर खींचा जाऊँ। (((-आज दुनिया के ज़ोहद व तक़वा का बेशतर हिस्सा मजबूरियों की पैदावार है और इन्सान को जब दुनिया हासिल नहीं होती है तो वह दीन के ज़ेरे साया पनाह ले लेता है और ज़िक्रे आखिरतत से अपने नफ़स को बहलाता है लेकिन अमीरूल मोमेनीन (अ0) का किरदार इससे बिल्कुल मुख्तलिफ़ है, आपके हाथों में दुनिया व आखिरत का इख़तेयार था, आपके बाजूओं में ज़ोरे ख़ैबर शिकमी और आपकी उंगलियों में कूवते रद्वे शम्स थी लेकिन इसके बावजूद फ़ाक़े कर रहे थे ताके इस्लाम में रियासत और हुकूमत ऐश परस्ती का ज़रिया न बन जाए और एहकाम अपनी सहूलियत का एहसास करें और अपनी ज़िन्दगी को गुरबा के मेयार पर गुज़ारें ताके इनका दिल न टूटने पाए और इनके नफ़स में गुरूर न पैदा होने पाए, मगर अफ़सोस के दुनिया से यह तसव्वुर यकसर ग़ायब हो गया और रियासत व हुकूमत सिर्फ़ राहत व आराम और अय्याशी व ऐश परस्ती का वसीला बन कर रह गई। इन हालात की जुज़ी इस्लाह गुलामाने अली (अ0) के

इस्लामी निज़ाम से हो सकती है और कुल इस्लाह फ़रज़न्दग अली (अ0) के जुहूर से हो सकती है। इसके अलावा बनी उमय्या और बनी अब्बास पर नाज़ करने वाले सलातीन इन हालात की इस्लाह नहीं कर सकते हैं। इन्सान और जानवर का नुक़तए इम्म्तेयाज़ यही है के जानवर के यहाँ खाना और चारा मक़सदे हयात है और इन्सान के यहाँ यह अशया वसीलाए हयात हैं, लेहाज़ा इन्सान जब तक मक़सदे हयात और बन्दगीए परवरदिगार का तहफ़ुज़ करता रहेगा इन्सान रहेगा और जिस दिन इस नुक़ते से गाफ़िल हो जाएगा उसका शुमार हैवानात में हो जाएगा।-)))

या भटकने की जगह पर मुंह उठाए फिरता रहूँ, गोया मैं देख रहा हूँ के तुम में से बाज़ लोग यह कह रहे हैं के जब अबूतालिब के फ़रज़न्द की गिज़ा ऐसी मामूली है तो उन्हें ज़ोफ़ ने दुश्मनों से जंग करने और बहादुरों के साथ मैदान में उतरने से बिठा दिया होगा। तो यह याद रखना के जंगल के दरख़्तों की लकड़ी ज़्यादा मज़बूत होती है और तरो ताज़ा दरख़्तों की छाल कमज़ोर होती है। सहराई झाड़ का ईन्धन ज़्यादा भड़कता भी है और इसके शोले देर में बुझते भी हैं। मेरा रिश्ता रसूले अकरम (स0) से वही है जो नूर का रिश्ता नूर से होता है या हाथ का रिश्ता बाज़ुओं से होता है। खुदा की क़सम अगर तमाम अरब मुझसे जंग करने पर इत्तेफ़ाक़ कर लें तो भी मैं मैदान से मुंह नहीं फेर सकता और अगर मुझे ज़रा भी मौक़ा मिल जाए तो मैं इनकी गर्दन उड़ा दूंगा और इस बात की कोशिश करूंगा के ज़मीन को इस उलटी खोपड़ी और बेहंगम डील-डौल वाले से पाक कर दूँ ताके खलियान के दानों में से कंकर पत्थर निकल जाएं। (इस खुतबे का आखिरी हिस्सा) ऐ दुनिया मुझसे दूर हो जा, मैंने तेरी बाग़डोर तेरे ही कान्धे पर डाल दी है और तेरे चंगुल से बाहर आ चुका हूँ और तेरे जाल से निकल चुका हूँ और तेरे फिसलने के मुक़ामात की तरफ़ जाने से भी परहेज़ करता हूँ। कहाँ हैं वह लोग जिनको तूने अपनी हंसी मज़ाक़ की

बातों से लुभा लिया था और कहां हैं वह कौमैं जिनको अपनी ज़ीनत व आराइश से मुब्तिलाए फ़ितना कर दिया था, देखो अब वह सब क़ब्रों में रहन हो चुके हैं और लहद में दुबके पड़े हुए हैं। खुदा की क़सम अगर तू कोई देखने वाली शै और महसूस होने वाला ढांचा होती तो मैं तेरे ऊपर ज़रूर हद जारी करता के तूने अल्लाह के बन्दों को आरजूओं के सहारे धोका दिया है और कौमों को गुमराही के गढ़े में डाल दिया है, बादशाहों को बरबादी के हवाले कर दिया है और उन्हें बलाओं की मन्ज़िल पर उतार दिया है जहां न कोई वारिद होने वाला है और न सादिर होने वाला। अफ़सोस! जिसने भी तेरी लगज़िश गाहों पर क़दम रखा वह फिसल गया और जो तेरी मौजों पर सवार हुआ वह गर्क हो गया, बस जिसने तेरे फन्दों से किनाराकशी इख्तेयार की उसको तौफ़ीक़ हासिल हो गई, तुझसे बचने वाला इस बात की परवाह नहीं करता है के मन्ज़िल किस क़द्र तंग हो गई है। इसलिये के दुनिया इसकी निगाह में सिर्फ़ एक दिन के बराबर है जिसके एख्तेताम का वक़्त हो चुका है। (((-बाज़ अफ़राद का खयाल है के इन्सानी ज़िन्दगी में ताक़त का सरचश्मा इसकी गिज़ा होती है और इन्सान की गिज़ा जिस क़द्र लज़ीज़ और खुश ज़ायका होगी इन्सान उसी क़द्र हिम्मत और ताक़त वाला होगा हालांके यह बात बिल्कुल ग़लत और महमिल है। ताक़त का ताल्लुक़ लज़ज़त व ज़ायके से नहीं है, कूवते नफ़स और हिम्मते क़ल्ब से और इससे बालातर ताईदे परवरदिगार से के दस्ते कुदरत से सेराब होने वाला सहराई दरख़्त ज़्यादा मज़बूत होता है और इमकानात के अन्दर तरबियत पाने वाले अशजार इन्तेहाई कमज़ोर होते हैं के दस्ते बशर वह ताक़त नहीं पैदा कर सकता है जो दस्ते कुदरत से पैदा होती है। लफ़ज़ों में यह बात बहुत आसान है लेकिन सजी सजाई दुनिया को तीन मरतबा तलाक़ देकर अपने से जुदा कर देना सिर्फ़ नफ़से पैग़म्बर (स0) का कारनामा है और उम्मत के बस का काम नहीं है। यह काम वही अन्जाम दे सकता है जो नफ़स के चंगुल से आज़ाद हो, ख्वाहिशात के

फन्दों में गिरफ्तार न हो और हर तरह की ज़ीनत व आराइश को अपनी निगाहों से गिरा चुका हो।-)))

तू मुझसे दूर हो जा, मैं तेरे कब्जे में आने वाला नहीं हूँ के तू मुझे ज़लील कर सके और न अपनी ज़माम तेरे हाथ में देने वाला हूँ के जिधर चाहे खींच सके, मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूँ, और इस कसम में मशीयते खुदा के अलावा किसी सूरत को मुस्तशना नहीं करता। मैं इस नफ़्स को ऐसी तरबीयत दूंगा के एक रोटी पर भी खुश रहे अगर वह बतौर तआम और नमक बतौर अदाम मिल जाए और मैं अपनी आंखों के सोने को ऐसा बना दूंगा जैसे वह चश्मा जिसका पानी तकरीबन खुश्क हो चुका हो और सारे आंसू बह गए हों, क्या यह मुमकिन है जिस तरह जानवर चारा खाकर बैठ जाते हैं और बकरियां घास से सेर होकर अपने बाड़े में लेट जाती हैं उसी तरह अली (अ0) भी अपने पास का खाना खाकर सो जाए, उसकी आंखें फूट जाएं जो एक तवील ज़माना गुज़ारने के बाद आवारा जानवर और चराए हुए हैवानात की पैरवी करने लगे। खुशा नसीब उस नफ़्स के लिये जो अपने रब के फ़र्ज़ को अदा कर दे और सख्तियों के आलम में सब्र से काम ले, रातों को अपनी आंखों को खुला रखे यहां तक के नीन्द का ग़लबा होने लगे तो ज़मीन को बिस्तर बना ले और हाथों को तकिया, इन लोगों के दरम्यान जिनकी आंखों को खौफ़े महशर ने बेदार रखा है और जिन के पहलू बिस्तरों से अलग रहे हैं उनके होंटों पर ज़िक्रे खुदा के ज़मज़मे रहे हैं और उनके तूले अस्तग़फ़ार से गुनाहों के बादल छट गए हैं यही वह लोग हैं जो अल्लाह के ग़िरोह में हैं और याद रखो के अल्लाह का ग़िरोह ही कामयाब होने वाला है। इब्ने हनीफ़! अल्लाह से डरो, और तुम्हारी यह रोटियां तुम्हें हिर्स व लालच से रोके रहें ताके आतिशे जहन्नमसे आज़ादी हासिल कर सको।

(((-कहां दुनिया में ऐसा कोई इन्सान है जो साहबे जाहो जलाल, इक़तेदार व बैतुलमाल हो, दुनिया में उसका सिक्का चल रहा हो और आलमे इस्लाम के ज़रे नगीं हो और इसके बाद या तो रातों को बेदारी और इबादते इलाही में गुज़ार दे या सोने का इरादा करे तो ख़ाक का बिस्तर और हाथ का तकिया बना ले, सलातीने ज़माना और हुक्कामे मुस्लेमीन तो इस सूरते हाल का तसव्वुर भी नहीं कर सकते हैं। इस किरदार के पैदा करने का क्या सवाल पैदा होता है।

वाज़ेह रहे के यह मौलाए कायनात की शख़्सी ज़िन्दगी का नक्शा नहीं है, यह हाकिमे इस्लामी और खलीफ़तुल्लाह का मन्सबी किरदार है जिसे अवामी मफ़ादात और इस्लामी मुक़द्देरात का ज़िम्मेदार बनाया जाता है। इसके किरदार को ऐसा होना चाहिये और इसकी ज़िन्दगी में इसी किस्म की सादगी दरकार है, इन्सान के नफ़से कुद्सी के पैदा करने का अज़म मोहकम करे वरना न इस्लामी तख़्त व इक़तेदार को छोड़कर जुल्म व सितम की बिसात पर ज़िन्दगी गुज़ार दे और अपने को आलमे इस्लाम का हाकिम कहने और इरादा न करे वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह-)))

46-आपका मक़तूबे गिरामी (बाज़ गवर्नर के नाम)

अम्माबाद! तुम उन लोगों में हो जिनसे मैं दीन के क़याम के लिये मदद लेता हूँ और गुनहगारों की नखवत को तोड़ देता हूँ और सरहदों के खतरात की हिफ़ाज़त करता हूँ लेहाज़ा अपने अहम उमूर में अल्लाह से मदद तलब करना और अपनी शिद्दत में थोड़ी नर्मी भी शामिल कर लेना, जहां तक नर्मी मुनासिब हो नर्मी ही से काम लेना और जहां सख़्ती के अलावा कोई चाराए कार न हो वहां सख़्ती ही करना, रिआया के साथ तवाज़ो से पेश आना और कुशादारवी

का बरताव करना, अपना रवैया नर्म रखना और नज़र भर के देखने या कनखियों से देखने में भी बराबर का सुलूक करना और इशारा व सलाम में भी मसावात से काम लेना ताके बड़े लोग तुम्हारी नाइन्साफ़ी से उम्मीद न लगा बैठे और कमज़ोर अफ़राद तुम्हारे इन्साफ़ से मायूस न हो जाएं। वस्सलाम

47- आपकी वसीयत (इमाम हसन (अ0) और इमाम हुसैन (अ0) से- इब्ने मुलजिम की तलवार से ज़ख़मी होने के बाद)

मैं तुम दोनों को यह वसीयत करता हूं के तक्रवाए इलाही इख़तेयार किये रहना और ख़बरदार दुनिया लाख तुम्हें चाहे उससे दिल न लगाना और न उसकी किसी शै से महरूम हो जाने पर अफ़सोस करना, हमेशा हर्फ़े हक़ कहना और हमेशा आख़िरत के लिये अमल करना और देखो ज़ालिम के दुश्मन रहना और मज़लूम के साथ रहना। मैं तुम दोनों को और अपने तमाम अहल व अयाल को और जहां तक मेरा यह पैग़ाम पहुंचे, सब को वसीयत करता हूं के तक्रवाए इलाही इख़तेयार करें, अपने उमूर को मुनज़ज़म रखें, अपने दरम्यान ताल्लुकात को सुधारे रखें के मैंने अपने जद्दे बुजुर्गवार से सुना है के आपस के मामलात को सुलझाकर रखना आम नमाज़ और रोज़े से भी बेहतर है। देखो यतीमों के बारे में अल्लाह से डरते रहना और उनके फ़ाकों की नौबत न आजाए और वह तुम्हारी निगाहों के सामने बरबाद न हो जाएं और देखो हमसाये के बारे में अल्लाह से डरते रहना के उनके बारे में तुम्हारे पैग़म्बर (स0) की वसीयत है और आप (स0) बराबर उनके बारे में नसीहत फ़रमाते रहते थे यहां तक के हमने ख़याल किया के शायद आप वारिस भी बनाने वाले हैं। (((- यह इस बात की अलामत है के इस्लाम का बुनियादी मक़सद

मुआशरे की इस्लाह समाज की तन्ज़ीम और उम्मत के मामलात की तरतीब है और नमाज़ रोज़े को भी दर हकीकत इसका एक ज़रिया बनाया गया है वरना परवरदिगार किसी की इबादत और बन्दगी का मोहताज नहीं है और इसका तमामतर मक़सद यह है के इन्सान पेश परवरदिगार अपने को हकीर व फ़कीर समझे और इसमें यह एहसास पैदा हो के में भी तमाम बन्दगाने खुदा में से एक बन्दा हूँ और जब सब एक ही खुदा के बन्दे हैं और उसी की बारगाह में जाने वाले हैं तो आपस के तफ़रिक्के का जवाज़ क्या है और यह तफ़रिका कब तक बरकरार रहेगा। बालाआखिर को एक दिन उसकी बारगाह में एक दूसरे का सामना करना है। इसके बाद अगर कोई शख्स इस जज़्बे से महरूम हो जाए और शैतान उसके दिल व दिमाग़ पर मुसल्लत हो जाए तो दूसरे अफ़राद का फ़र्ज़ है के इस्लामी क़दम उठाएं और मुआशरे में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ की फ़िज़ा कायम करें के यह मक़सदे इलाही की तकमील और इरतेकाए बशरीयत की बेहतरीन अलामत है, नमाज़ रोज़ा इन्सान के ज़ाती आमाल हैं, और समाज के फ़साद से आंखें बन्द करके ज़ाती आमाल की कोई हैसियत नहीं रह जाती है। वरना अल्लाह के मासूम बन्दे कभी घर से बाहर ही न निकलते और हमेशा सजदए परवरदिगार ही में पड़े रहते।-)))

देखो! अल्लाह से डरो कुरआन के बारे में के इस पर अमल करने में दूसरे लोग तुमसे आगे न निकल जाएं और अल्लाह से डरो नमाज़ के बारे में के वह तुम्हारी दीन का सुतून है। और अल्लाह से डरो अपने परवरदिगार के घर के बारे में के जब तक ज़िन्दा रहो उसे ख़ाली न होने दो के अगर उसे छोड़ दिया गया तो तुम देखने के लाएक भी न रह जाओगे। और अल्लाह से डरो अपने जान और माल और ज़बान से जेहाद के बारे में और आपस में एक दूसरे से ताल्लुकात रखो। एक दूसरे की इमदाद करते रहो और ख़बरदार एक दूसरे से मुंह न फ़ैर लेना, और ताल्लुकात तोड़ न लेना और अम्मे बिल मारुफ़ और नहीं अनिल मुनकिर को नज़र अन्दाज़

न कर देना के तुम पर इशारार की हुकूमत काएम हो जाए और तुम फरयाद भी करो तो उसकी समाअत न हो।

ऐ औलादे अब्दुल मुत्तलिब! खबरदार मैं यह न देखूं के तुम मुसलमानों का खून बहाना शुरू कर दो सिर्फ इस नारे पर के “अमीरूल मोमेनीन (अ0) मारे गए हैं” मेरे बदले में मेरे कातिल के अलावा किसी को क़त्ल नहीं किया जा सकता है।

देखो अगर मैं इस ज़रबत से जानबर न हो सका तो एक ज़रबत का जवाब एक ही ज़रबत है और देखो मेरे कातिल के जिस्म के टुकड़े न करना के मैंने खुद सरकारे दो आलम (स0) से सुना है के खबरदार काटने वाले कुत्ते के भी हाथ पैर न काटना। (((- कौन दुनिया में ऐसा शरीफुन्नफ़स और बलन्द किरदार है जो क़ानून की सरबलन्दी के लिये अपने नफ़स का मवाज़ना अपने दुश्मन से करे और यह एलान कर दे के अगरचे मुझे मालिक ने नफ़सुल्लाह और नफ़से पैग़म्बर (स0) करार दिया है और मेरे नफ़स के मुकाबले में कायनात के जुमला नफ़सों की कोई हैसियत नहीं है लेकिन जहां तक इस दुनिया में क़सास का ताल्लुक है मेरा नफ़स भी एक ही नफ़स शुमार किया जाएगा और मेरे दुश्मन को भी एक ही ज़र्ब लगाई जाएगी ताके दुनिया को यह एहसास पैदा हो जाए के मज़हब की तरजुमानी के लिये बलन्द किरदार की ज़रूरत होती है और समाज में खूरेज़ी और फ़साद के रोकने का वाक़ई रास्ता क्या होता है, यही वह अफ़राद हैं जो ख़िलाफ़ते इलाहिया के हक़दार हैं और उन्हीं के किरदार से इस हक़ीक़त की वज़ाहत होती है के इन्सानियत का काम फ़साद और खूरेज़ी नहीं है बल्कि इन्सान इस सरज़मीन पर फ़साद और खूरेज़ी की रोक थाम के लिये पैदा किया गया है और इसका मन्सब वाक़ई ख़िलाफ़ते इलाहिया है।)))

48- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)

बेशक बगावत और दरोगा गोई इन्सान को दीन और दुनिया दोनों में ज़लील कर देती है और इसके ऐब को नुक्ताए चीनी करने वाले के सामने वाज़ेह कर देती है। मुझे मालूम है के तू इस चीज़ को हासिल नहीं कर सकता है जिसके न मिलने का फैसला किया जा चुका है के बहुत सी क्रौमों ने हक़ के बग़ैर मक़सद को हासिल करना चाहा और अल्लाह को गवाह बनाया तो अल्लाह ने उनके झूठ को वाज़ेह कर दिया (((-आपने माविया को होशियार करना चाहा है के यह खूने उस्मान का मुतालबा कोई नया नहीं है, तुझसे पहले अहले जमल यह काम कर चुके हैं और उनका झूठ वाज़ेह हो चुका है, और वह दुनिया व आखिरत की रूसवाई मोल ले चुके हैं, अब तुझे दोबारा ज़लील व ख़वार होने का शौक़ क्यों पैदा हुआ है, तेरा रास्ता रूसवाई और ज़िल्लत के सिवा कुछ नहीं है-))) उस दिन से डरो जिस दिन ख़ुशी सिर्फ़ उसी का हिस्सा होगी जिसने अपने अमल के अन्जाम को बेहतर बना लिया है और निदामत उसके लिये होगी जिसने अपनी मेहार शैतान के इख़तेयार में दे दी और उसे खींचकर नहीं रखा। तुमने मुझे कुरानी फैसले की दावत दी है हालांके तुम उसके अहल नहीं थी और मैंने भी तुम्हारी आवाज़ पर लब्बैक नहीं कही है बल्कि कुरान के हुक़म पर लब्बैक कही है।

49- आपका मकतूबे गिरामी (माविया ही के नाम)

अम्माबाद! दुनिया आखिरत से रूगरदानी कर देने वाली है और इसका साथी जब भी कोई चीज़ पा लेता है तो इसके लिये हिर्स के दूसरे दरवाज़े खोल देती है और वह कभी कोई चीज़

हासिल करके उससे बेनियाज़ नहीं हो सकता है जिसको हासिल नहीं कर सका है, हालांके उन सबके बाद जो कुछ जमा किया है उससे अलग होना है और जो कुछ बन्दोबस्त किया है उसे तोड़ देना है और तू अगर गुज़िश्ता लोगों से ज़रा भी इबरत हासिल करता तो बाकी ज़िन्दगी को महफूज़ कर सकता था। वस्सलाम

50- आपका मकतूबे गिरामी (लशकर के सरदारो के नाम)

बन्दए खुदा, अमीरूल मोमेनीन अली बिन अबीतालिब (अ0) की तरफ़ से सरहदों के मुहाफ़िज़ों के नाम, याद रखना के वाली पर क़ौम का हक़ यह है के उसने जिस बरतरी को पा लिया है या जिस फ़ारिगुल बाली की मन्ज़िल तक पहुंच गया है उसकी बिना पर क़ौम के साथ अपने रवैये में तबदीली न पैदा करे और अल्लाह ने जो नेमत उसे अता की है उसकी बिना पर बन्दगाने खुदा से ज़्यादा करीबतर हो जाए और अपने भाइयों पर ज़्यादा ही मेहरबानी करे।

याद रखो मुझ पर तुम्हारा एक हक़ यह भी है के जंग के अलावा किसी मौक़े पर किसी राज़ को छिपाकर न रखूँ और हुक्मे शरीअत के अलावा किसी मसले में तुम से मशविरा करने से पहलूतही न करूँ, न तुम्हारे किसी हक़ को उसकी जगह से पीछे हटाऊँ और न किसी मामले को आखिरी हद तक पहुंचाए बग़ैर दम लूँ और तुम सब मेरे नज़दीक हक़ के मामले में बराबर हो, इसके बाद जब मैं इन हुक्क़ को अदा करूंगा तो तुम पर अल्लाह के लिये शुक्र और मेरे लिये इताअत वाजिब हो जाएगी और यह लाज़िम होगा के मेरी दावत से पीछे न हटो और किसी इस्लाह में कोताही न करो, हक़ तक पहुंचने के लिये सख़्तरियों में कूद पड़ो के तुम इन मामलात में सीधे न रहे तो मेरी नज़र में तुम से टेढ़े हो जाने वाले से ज़्यादा कोई हक़ीर व ज़लील न होगा उसके बाद मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा और मेरे पास कोई रिआयतत न पाएगा, तो अपने ज़ेरे

निगरानी अम्मा से यही अहद व पैमान लो और अपनी तरफ से उन्हें वह हुकूक अता करो जिनसे परवरदिगार तुम्हारे उमूर की इस्लाह कर सके, वस्सलाम।

(((-यह इस्लामी कानून का सबसे बड़ा इम्तियाज़ है के इस्लाम हक लेने से पहले हक अदा करने की बात करता है और किसी शख्स को उस वक़्त तक साहबे हक नहीं करार देता है जब तक वह दूसरों के हुकूक अदा न कर दे और यह साबित न कर दे के वह खुद भी बन्दए खुदा है और एहकामे इलाहिया का एहतेराम करना जानता है, इसके बगैर हुकूक का मुतालेबा करना बशर को मालिक से आगे बढ़ा देने के मुरादिफ़ है के अपने वास्ते मालिके कायनात भी काबिले इताअत नहीं है और दूसरों के वास्ते अपनी ज़ात भी काबिले इताअत है, यह फिरऔनियत और नमरूदियत की वह क्रिस्म है जो दौरे कदीम के फ़राअना में भी नहीं देखी गई और आज के हर फिरऔन में पाई जा रही है, कल फिरऔन अपने को फ़राएज़ से बालातर समझता था और आज वाले फ़राएज़ को फ़राएज़ समझते हैं और इसके बाद भी अदा करने की फ़िक्र नहीं करते हैं।-)))

51-आपका मकतूबे गिरामी (टैक्स वसूल करने वालों के नाम)

बन्दए खुदा, अमीरूल मोमेनीन अली (अ0) की तरफ़ से खेराज वसूल करने वालों की तरफ़

अम्माबाद! जो शख्स अपने अन्जामकार से नहीं डरता है वह अपने नफ़स की हिफ़ाज़त का सामान भी फ़राहम नहीं करता है, याद रखो तुम्हारे फ़राएज़ बहुत मुख्तसर हैं और उनका सवाब बहुत ज़्यादा है और अगर परवरदिगार ने बगावत और जुल्म से रोकने के बाद उस पर अज़ाब भी न रखा होता तो उससे परहेज़ करने का सवाब ही इतना ज़्यादा था के उसके तर्क करने में कोई शख्स माज़ूर नहीं हो सकता था, लेहाज़ा लोगों के साथ इन्साफ़ करो, उनके ज़रूरियात के

लिये सब्र व तहम्मूल से काम लो के तुम रिआया के खज़ानेदार, उम्मत के नुमाइन्दे और आइम्मा के सफ़ीर हो, खबरदार किसी शख्स को उसकी ज़रूरत से रोक न देना और उसके मतलूब की राह में रूकावट न पैदा करना और ख़ेराज वसूल करने के लिये उसके सरदी या गर्मी के कपड़े न बेच डालना और न उस जानवर या गुलाम पर क़ब्ज़ा कर लेना जो उसके काम आता है और किसी को पैसे की ख़ातिर मारने न लगाना और किसी मुसलमान या काफ़िर ज़मी के माल को हाथ न लगाना मगर यह के उसके पास कोई ऐसा घोड़ा या असलहा हो जिसे दुश्मनाने इस्लाम को देना चाहता है तो किसी मुसलमान के लिये यह मुनासिब नहीं है के यह अशयाअ दुश्मनाने इस्लाम के हाथों में छोड़ दे और वह इस्लाम पर ग़ालिब आ जाएं। देखो किसी नसीहत को बचाकर न रखना, न लशकर के साथ अच्छे बरताव में कमी करना और न रिआया की इमदाद में और न दीने खुदा को क़ौत पहुंचाने में, अल्लाह की राह में उसके तमाम फ़राएज़ को अदा कर देना के उसने हमारे और तुम्हारे साथ जो एहसान किया है उसका तक्राज़ा यह है के हम उसके शुक्र की कोशिश करें और जहां तक मुमकिन हो उसके दीन की मदद करें के क़ौत भी तो बालाआख़िर खुदाए अज़ीम का अतिया है।

52-आपका मकतूबे गिरामी (शहरो के गर्वनरो के नाम- नमाज़ के बारे में)

अम्माबाद- ज़ोहर की नमाज़ उस वक़्त तक अदा कर देना जब आफ़ताब का साया बकरियों के बाड़े की दीवार के बराबर हो जाए और अस्त्र की नमाज़ उस वक़्त तक पढ़ा देना जब आफ़ताब रौशन और सफ़ेद रहे और दिन में इतना वक़्त बाकी रह जाए जब मुसाफ़िर दो फ़रसख़ जा सकता हो। मगरिब उस वक़्त अदा करना जब रोज़ेदार इफ़्तार करता है और हाजी अरफ़ात से कूच करता है और इशा उस वक़्त पढ़ना जब शफ़क़ छिप जाए और एक तिहाई रात न गुज़रने पाए, सुबह की नमाज़ उस वक़्त अदा करना जब आदमी अपने साथी के चेहरे को पहचान सके। इनके साथ नमाज़ पढ़ो कमज़ोरतरीन आदमी का लेहाज़ रखकर, और ख़बरदार इनके लिये सब्र आज़मा न बन जाओ। (((-वाज़ेह रहे के यह ख़त रूसा शहर के नाम लिखा गया है और उनके लिये नमाज़े जमाअत के औक़ात मुअय्यन किये गये हैं, इसका असल नमाज़ से कोई ताल्लुक नहीं है, अस्ल नमाज़ के औक़ात सूरे इसरा में बयान कर दिये गये हैं यानी ज़वाले आफ़ताब, तारीकीए शब और फ़ज़ और उन्हीं तीन औक़ात में पांच नमाज़ों को अदा हो जाना है।, जिसमें तकदीम देना ख़ैर नमाज़ी के इख़तेयार में है के फ़ज़ के एक डेढ़ घन्टे में दो रकअत कब अदा करेगा या ज़ोहर व अस्त्र के छः घन्टे में आठ रकअत किस वक़्त अदा करेगा या तारीकीए शब के बाद सात रकत मगरिब व इशा कब पढ़ेगा, सरकारी जमाअत में इस तरह की आज़ादी मुमकिन नहीं है, इसका वक़्त मुअय्यन होना ज़रूरी है ताके लोग नमाज़ में शिरकत कर सकें, लेहाज़ा हज़रत ने इस दौर के हालात पेशे नज़र एक वक़्त मुअय्यन कर दिया, वरना आज के ज़माने में

दो फ़रसख़ रास्ता पांच मिनट में तय होता है जो क़तअन इस मक़तूबे गिरामी में मक़सूद नहीं है-)))

53-आपका मक़तूबे गिरामी

(जिसे मालिक बिन अशतर नग़मी के नाम तहरीर फ़रमाया है, उस वक़्त जब उन्हें मोहम्मद बिन अबीबक्र के हालात के ख़राब हो जाने के बाद मिस्र और उसके एतराफ़ का गवर्नर मुक़रर फ़रमाया और यह अहदनामा हज़रत के तमाम सरकारी ख़ुतूत में सबसे ज़्यादा मुफ़स्सिल और महासिन कलाम का जामा है)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम

यह वह क़ुरान है जो बन्दए ख़ुदा, अमीरूल मोमेनीन अली (अ0) ने मालिक बिन अशतर नग़मी के नाम लिखा है जब उन्हें ख़ेराज जमा करने, दुश्मन से जेहाद करने, हालात की इस्लाह करने और शहरों की आबादकारी के लिये मिस्र का गवर्नर करार देकर रवाना किया।

सबसे पहला अम्र यह है के अल्लाह से डरो, उसकी इताअत को इख़तेयार करो और जिन फ़राएज़ व सुन्ना का अपनी किताब में हुक़म दिया गया है उनका इत्तेबाअ करो के कोई शख़्स उनके इत्तेबाअ के बग़ैर नेक बख़्त नहीं हो सकता है और कोई शख़्स उनके इन्कार और बरबादी के बग़ैर बदबख़्त नहीं करार दिया जा सकता है, अपने दिल, हाथ और ज़बान से दीने ख़ुदा की मदद करते रहना के ख़ुदाए “इज़ज़समहू” ने यह ज़िम्मेदारी ली है के अपने मददगारों की मदद करेगा और अपने दीन की हिमायत करने वालों को इज़ज़त व शरफ़ इनायत करेगा।

दूसरा हुकम यह है के अपने नफ़स के ख्वाहिशात को कुचल दो और उसे मुंह ज़ोरियों से रोके रहो के नफ़स बुराइयों का हुकम देने वाला है जब तक परवरदिगार का रहम शामिल न हो जाए इसके बाद मालिक यह याद रखना के मैंने तुमको ऐसे इलाके की तरफ़ भेजा है जहां अद्ल व जुल्म की मुख्तलिफ़ हुकूमतें गुज़र चुकी हैं और लोग तुम्हारे मामलात को इस नज़र से देख रहे हैं जिस नज़र से तुम उनके आमाल को देख रहे थे और तुम्हारे बारे में वही कहेंगे जो तुम दूसरों के बारे में कह रहे थे, नेक किरदार बन्दों की शिनाख्त इस ज़िक्रे ख़ैर से होती है जो उनके लिये लोगों की ज़बानों पर जारी होता है लेहाज़ा तुम्हारा महबूबतरीन ज़खीराए अमले स्वालेह को होना चाहिये, ख्वाहिशात को रोक कर रखो और जो चीज़ हलाल न हो उसके बारे में नफ़स को सर्फ़ करने से कंजूसी करो के यही कंजूसी इसके हक़ में इन्साफ़ है चाहे उसे अच्छा लगे या बुरा, रिआया के साथ मेहरबानी और मोहब्बतत व रहमत को अपने दिल का शोआर बना लो और खबरदार इनके हक़ में फाड़ खाने वाले दरिन्दे के मिस्ल न हो जाना के उन्हें खा जाने ही को गनीमत समझने लगो। के मखलूकाते खुदा की दो किस्में हैं, बाज़ तुम्हारे दीनी भाई हैं और बाज़ खिलकत में तुम्हारे जैसे बशर हैं जिनसे लरिज़िशें भी हो जाती हैं और उन्हें खताओं का सामना भी करना पड़ता है और जान बूझकर या धोके से उनसे गलतियां भी हो जाती हैं। लेहाज़ा उन्हें वैसे ही माफ़ कर देना जिस तरह तुम चाहते हो के परवरदिगार तुम्हारी गलतियों से दरगुज़र करे के तुम उनसे बालातर हो और तुम्हारा वलीए अम्र तुमसे बालातर है और परवरदिगार तुम्हारे वाली से भी बालातर है और उसने तुमसे उनके मामलात की अन्जामदही का मुतालबा किया है और उसे तुम्हारे लिये ज़रियाए आजमाइश बना दिया है और खबरदार अपने नफ़स को अल्लाह के मुक़ाबले पर न उतार देना। (((-यह इस्लामी निज़ाम का इम्तेयाज़ी नुक्ता है के इस निज़ाम में मज़हबी तास्सुब से काम नहीं लिया जाता है बल्कि हर शख्स को बराबर के हुकूक दिये जाते

हैं। मुसलमान का एहतेराम उसके इस्लाम की बिना पर होता है और गैर मुस्लिम के बारे में इन्सानी हुक्क का तहफ़ुज़ किया जाता है और उन हुक्क में बुनियादी नुक्ता यह है के हाकिम हर ग़लती का मवाखेज़ा न करे बल्कि उन्हें इन्सान समझ कर उनकी ग़लतियों को बरदाश्त करे और उनकी ख़ताओं से दरगुज़र करे और यह ख़याल रखे के मज़हब का एक मुस्तक़िल निज़ाम है “रहम करो ताके तुम पर रहम किया जाए” अगर इन्सान अपने से कमज़ोर अफ़राद पर रहम नहीं करता है तो उसे ज़ब्वार समावात व अर्ज़ से तवक्क़ो नहीं करनी चाहिये, कुदरत का अटल क़ानून है के तुम अपने से कमज़ोर पर रहम करो ताके परवरदिगार तुम पर रहम करे और तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ कर दे जिस पर तुम्हारी आक़ेबत और बख़्शिश का दारोमदार है-)))

इसलिये के लोगों में बहरहाल कमज़ोरियां पाई जाती हैं और उनकी परदापोशी की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी वाली पर है लेहाज़ा ख़बरदार जो ऐब तुम्हारे सामने नहीं है उसका इन्केशाफ़ न करना, तुम्हारी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ उयूब की इस्लाह कर देना है और ग़ायबात का फ़ैसला करने वाला परवरदिगार है जहां तक मुमकिन हो लोगों के उन तमाम उयूब की परदा पोशी करते रहो जिन अपने उयूब की परदापोशी की परवरदिगार से तमन्ना करते हो, लोगों की तरफ़ से कीना की कर गिरह को खोल दो और दुश्मनी की हर रस्सी को काट दो और जो बात तुम्हारे लिये वाज़ेह न हो उससे अन्जान बन जाओ और हर चुग़लख़ोर की तस्दीक़ में उजलत से काम न लो के चुग़लख़ोर हमेशा ख़यानततकार होता है चाहे वह मुखलेसीन ही के भेस में क्यों न आए।

(मशावेरत) देखो अपने मशविरे में किसी कंजूसी को शामिल न करना के वह तुमको फ़ज़ल व करम के रास्ते से हटा देगा और फ़क्र व फ़ाके का ख़ौफ़ दिलाता रहेगा और इसी तरह बुज़दिल से मशविरा न करना के वसह हर मामले में कमज़ोर बना देगा, और हरीस से भी मशविरा न

करना के वह ज़ालिमाना तरीके से माल जमा करने को भी तुम्हारी निगाहों में आरास्ता कर देगा, यह कंजूसी, बुजदिली और लालच अगरचे अलग-अलग जज़्बात व ख़साएल हैं लेकिन इन सबका क़द्रे मुश्तर्क परवरदिगार से सूए ज़न है जिसके बाद इन खसलतों का ज़हूर होता है।

(वोज़रात): और देखो तुम्हारे वज़ीरो में सबसे ज़्यादा बदतर वह है जो तुमसे पहले अशरार का वज़ीर रह चुका हो और उनके गुनाहों में शरीक रह चुका हो, लेहाज़ा ख़बरदार! ऐसे अफ़राद को अपने ख़्वास में शामिल न करना के यह ज़ालिमों के मददगार और ख़यानत कारों के भाई बन्द हैं और तुम्हें इनके बदले बेहतरीन अफ़राद मिल सकते हैं जिनके पास उन्हीं की जैसी अक़ल और कारकर्दगी हो और उनके जैसे गुनाहों के बोझ और ख़ताओं के अम्बार न हों, न उन्होंने किसी ज़ालिम की उसके जुल्म में मदद की हो और न किसी गुनाहगार का उसके गुनाह में साथ दिया हो, यह वह लोग हैं जिनका बोझ तुम्हारे लिये हल्का होगा और यह तुम्हारे बेहतरीन मददगार होंगे और तुम्हारी तरफ़ मोहब्बत का झुकाव भी रखते होंगे और अग़यार से मुहब्बत भी न रखते होंगे। उन्हीं को अपने मख़सूस जलसों में अपना मुसाहब करार देना और फिर उनमें भी सबसे ज़्यादा हैसियत उसे देना जो हक़ के हर्फ़े तल्ख़ को कहने की ज़्यादा हिम्मत रखता हो और तुम्हारे किसी ऐसे अमल में तुम्हारा साथ न दे जिसे परवरदिगार अपने औलिया के लिये न पसन्द करता हो चाहे वह तुम्हारी ख़्वाहिशात से कितनी ज़्यादा मेल क्यों न खाती हो।

मसाहेबत: अपना करीबी राबेता अहले तक़्वा और अहले सदाक़त से रखना और उन्हें भी इस अम्र की तरबीयत देना के बिला सबब तुम्हारी तारीफ़ न करें और किसी ऐसे बेबुनियाद अमल का गुरूर न पैदा करारें जो तुमने अन्जाम न दिया हो के ज़्यादा तारीफ़ से गुरूर पैदा होता है और गुरुरे इन्सान को सरकशी से करीबतर बना देता है।

देखो खबरदार! नेक किरदार और बदकिरदार तुम्हारे नज़दीक एक जैसे न होने पाएं के इस तरह नेक किरदारों में नेकी से बददिली पैदा होगी और बदकिरदारों में बदकिरदारी का हौसला पैदा होगा। हर शख्स के साथ वैसा ही बरताव करना जिसके काबिल उसने अपने को बनाया है और याद रखना के हाकिम में जनता से हुस्ने ज़न की उसी क़द्र तवक्को करनी चाहिये जिस क़द्र उनके साथ एहसान किया है और उनके बोझ को हलका बनाया है और उनको किसी ऐसे काम पर मजबूर नहीं किया है जो उनके इमकान में न हो, लेहाज़ा तुम्हारा बरताव इस सिलसिले में ऐसा ही होना चाहिये जिससे तुम जनता से ज़्यादा से ज़्यादा हुस्ने ज़न पैदा कर सको के यह हुस्ने ज़न बहुत सी अन्दरूनी ज़हमतों को खत्म कर देता है और तुम्हारे हुस्ने ज़न का भी सबसे ज़्यादा हक़दार वह है जिसके साथ तुमने बेहतरीन सलूक किया है। (((-इन बातों में ज़िन्दगी के मुखतलिफ़ हिस्सों के बारे में हिदायत का ज़िक्र किया गया है और इस नुक्ते की तरफ़ तवज्जो दिलाई गई है के हाकिम को ज़िन्दगी के किसी भी हिस्से से गाफ़िल नहीं होना चाहिये और किसी मोक़े पर भी कोई ऐसा क़दम नहीं उठाना चाहिये जो हुकूमत को तबाह व बरबाद कर दे और आम जनता के फ़ायदे को ग़फलत की नज़र करके उन्हें जुल्म व सितम का निशाना बना दे-)))

सबसे ज़्यादा बदज़नी का हक़दार वह है जिस का बरताव तुम्हारे साथ ख़राब रहा हो, देखो किसी ऐसी नेक सुन्नत को मत तोड़ देना जिस पर इस उम्मत के बुजुर्गों ने अमल किया है और उसी के ज़रिये समाज में उलफ़त कायम होती है और जनता के हालात की इस्लाह हुई है और किसी ऐसी सुन्नत को ईजाद न करना जो गुज़िश्ता सुन्नतों के हक़ में नुक़सानदेह हो के इस तरह अज़्र उसके लिये होगा जिसने सुन्नत को ईजाद किया है और गुनाह तुम्हारी गर्दन पर होगा के तुमने उसे तोड़ दिया है।

ओलमा के साथ इल्मी मुबाहेसे और हुकमा के साथ सन्जीदा बहस जारी रखना उन मसाएल के बारे में जिनसे इलाके के काम की इस्लाह होती है और काम कायम रहते हैं जिनसे गुज़िश्ता अफ़राद के हालात की इस्लाह हुई है। और याद रखो के जनता के बहुत से तबक़ात होते हैं जिनमें किसी की इस्लाह दूसरे के बग़ैर नहीं हो सकती है और कोई दूसरे से मुस्तग़नी नहीं हो सकता है। उन्हीं में अल्लाह के लशकर के सिपाही हैं और उन्हीं में आम व खास काम के कातिब हैं उन्हीं में अदालत से फ़ैसले करने वाले हैं और उन्हीं में इन्साफ़ और नमी कायम करने वाले गवर्नर हैं उन्हीं में मुसलमान अहले ख़ेराज और काफ़िर अहले ज़िम्मा हैं और उन्हीं में तिजारत और सनअत (तिजारत पेशा व अहले हरफ़ा) वाले अफ़राद हैं और फिर उन्हीं में फ़ोकरा और मसाकीन का पस्त तरीन तबक़ा भी शामिल है और सबके लिये परवरदिगार ने एक हिस्सा मुअय्यन कर दिया है। और अपनी किताब के फ़राएज़ या अपने पैग़म्बर की सुन्नत में इसकी हदें कायम कर दी हैं और यह वह अहद है जो हमारे पास महफूज़ है। फ़ौजी दस्ते बहुक़मे ख़ुदा से जनता के मुहाफ़िज़ और वालियों की ज़ीनत हैं, उन्हीं से दीन की इज़ज़त है और यही अम्न व अमान के वसाएल हैं। रईयत का (नज़्म व नस्क़) काम का क़याम उनके बग़ैर नहीं हो सकता है और यह दस्ते भी कायम नहीं रह सकते हैं। जब ततक़ वह ख़ेराज न निकाल दिया जाए जिसके ज़रिये से दुश्मन से ज़ेहाद की ताक़त फ़राहम होती है और जिसपर हालात की इस्लाह में एतमाद किया जाता है और वही इनके हालात के दुरुस्त करने का ज़रिया है और इसके बाद इन दोनों सनफ़ों (तबक़ों) का क़याम काज़ियों आमिलों और कातिबों के तबक़े के बग़ैर नहीं हो सकता है के यह सब अहद व पैमान को मुस्तहक़म बनाते हैं मामूली और ग़ैर मामूली मामलात में उनपर एतमाद किया जाता है, इसके बाद उन सबका क़याम सौदागरों और सनअतकारों पर होता है के वह वसाएले हयात को फ़राहम करते हैं, बाज़ारों को कायम रखते हैं और लोगों की ज़रूरत का

सामान उनकी ज़हमत के बगैर फ़राहम कर देते हैं। इसके बाद फ़ोकरा व मसाकीन का पस्त तबक़ा है जो मदद का हक़दार है और अल्लाह के यहां हर एक के लिये सामाने हयात मुक़रर है और हर तबक़े का वाली पर इतनी मिकदार में हक़ है जिससे इसके अम्र की इस्लाह हो सके और वाली इस फ़रीज़े से ओहदा बरआ नहीं हो सकता है जब तक इन मसाएल का एहतेमाम न करे और अल्लाह से मदद तलब न करे और अपने नफ़्स को हुक़क़ की अदाएगी और इस राह के ख़फ़ीफ़ व सकील पर सब्र करने के लिये आमादा न करे लेहाज़ा लशकर का सरदार उसे करार देना जो अल्लाह, रसूल और इमाम का सबसे ज़्यादा मुखलिस, सबसे ज़्यादा पाकदामन और सबसे ज़्यादा बरदाश्त करने वाला हो। (((-इस मुक़ाम पर अमीरूलमोमेनीन (अ0) ने समाज को 9 हिस्सों पर तकसीम किया है और सबके खुसूसियात, फ़राएज़, अहमियत और ज़िम्मेदारियों का तज़क़िरा फ़रमाया है और यह वाज़ेह कर दिया है के एक काम दूसरे के बगैर नहीं हो सकता है लेहाज़ा हर एक का फ़र्ज़ है के दूसरे की मदद करे ताके समाज की मुकम्मल इस्लाह हो सके और मुआशरा चैन और सुकून की ज़िन्दगी जी सके वरना इसके बगैर समाज तबाह व बरबाद हो जाएगा और इसकी ज़िम्मेदारी तमाम तबक़ात पर यकसां तौर पर आयद होगी।-)))

फ़ौज़ का सरदार उसको बनाना जो अपने अल्लाह का और अपने रसूल (स0) का और तुम्हारे इमाम का सबसे ज़्यादा ख़ैरख्वाह हो सबसे ज़्यादा पाक दामन हो, और बुर्दबारी में नुमायां हो, जल्द गुस्से में न आ जाता हो, उज़्र माज़ेरत पर मुतमइन हो जाता हो, कमज़ोरों पर रहम खाता हो और ताक़तवरों के सामने अकड़ जाता हो न बदखोई उसे जोश में ले आती हो और न पस्त हिम्मती उसे बिठा देती हो, फिर ऐसा होना चाहिये के तुम बलन्द खानदान, नेक घराने और उमदा रिवायात रखने वालों और हिम्मत व शुजाअत और जूद व सखावत के मालिकों से अपना रब्त व ज़ब्त बढ़ाओ क्योंकि यही लोग बुजुर्गियों का सरमाया और नेकियों का सरचश्मा होते हैं

फिर उनके हालात की इस तरह देख भाल करना, जिस तरह माँ बाप अपनी औलाद की देखभाल करते हैं, अगर उनके साथ कोई ऐसा सलूक करो के जो उनकी तक़वीयत का सबब हो तो उसे बड़ा न समझना और अपने किसी मामूली सुलूक को भी ग़ैर अहम न समझ लेना (के उसे छोड़ बैठो) क्योंकि इस हुस्ने सुलूक से उनकी ख़ैरख्वाही का जज़्बा उभरेगा और हुस्ने एतमाद में इज़ाफ़ा होगा और इस ख़याल से के तुमने उनकी बड़ी ज़रूरतों को पूरा कर दिया है, कहीं उनकी छोटी ज़रूरतों से आंख बन्द न कर लेना, क्योंकि यह छोटी क्रिस्म की मेहरबानी की बात भी अपनी जगह फ़ायदाबख़्श होती है और वह बड़ी ज़रूरतें अपनी जगह अहमियत रखती हैं और फ़ौजी सरदारों में तुम्हारे यहां वह बुलन्द मन्ज़िलत समझा जाए, जो फ़ौजियों की एआनत में बराबर का हिस्सा लेता हो और अपने रूप्ये पैसे से इतना सलूक करता हो जिससे उनका और उनके पीछे रह जाने वाले बाल-बच्चों का बख़ूबी गुज़ारा हो सकता हो। ताके वह सारी फ़िक्रों से बेफ़िक्र होकर पूरी यकसूई के साथ दुश्मन से जेहाद करें इसलिये के फ़ौजी सरदारों के साथ तुम्हारा मेहरबानी से पेश आना इनके दिलों को तुम्हारी तरफ़ मोड़ देगा।

हुकमरानों के लिये सबसे बड़ी आंखों की ठण्डक इसमें है के शहरों में अद्ल व इन्साफ़ बरकरार रहे और जनता की मोहब्बत ज़ाहिर होती रहे और उनकी मोहब्बत उसी वक़्त ज़ाहिर हुआ करती है के जब उनके दिलों में मैल न हो, और उनकी ख़ैर ख्वाही उसी सूरत में साबित होती है के ववह अपने हुकमरानों के गिर्द हिफ़ाज़त के लिये घेरा डाले रहें। इनका इक्तेदार सर पड़ा बोझ न समझें और न उनकी हुकूमत के खात्मे के लिये घड़ियां गिनें, लेहाज़ा उनकी उम्मीदों में वुसअत व कशाइश रखना, उन्हें अच्छे लफ़ज़ों से सराहते रहना और उनमें के अच्छी कारकर्दगी दिखाने वालों के कारनामों का तज़क़िरा करते रहना, इसलिये के इनके अच्छे कारनामों का ज़िक्र बहादुरों को जोश में ले आता है और पस्त हिम्मतों को उभारता है, इन्शाअल्लाह जो

शख्स जिस कारनामे को अन्जाम दे उसे पहचानते रहना और एक का कारनामा दूसरे की तरफ मन्सूब न कर देना और उसकी हुस्ने कारकर्दगी का सिला देने में कमी न करना और कभी ऐसा न करना के किसी शख्स की बलन्दी व रफअत की वजह से उसके मामूली काम को बढ़ा समझ लो और किसी के बड़े काम को उसके खुद पस्त होने की वजह से मामूली करार दे लो। जब ऐसी मुश्किलें तुम्हें पेश आएं के जिनका हल न हो सके और ऐसे मुआमलात के जो मुश्तबा हो जाएं तो उनमें अल्लाह और रसूल (स0) की तरफ रूजू करो क्योंकि खुदा ने जिन लोगों को हिदायत करना चाही है उनके लिये फरमाया है - “ऐ ईमान दारों अल्लाह की इताअत करो, और उसके रसूल (स0) की और उनकी जो तुम में साहेबाने अम्र हों” तो अल्लाह की तरफ रूजू करने का मतलब यह है के उसकी किताब की मोहकम आयतों पर अमल किया जाए और रसूल की तरफ रूजू करने का मतलब यह है कि आपके उन मुत्तफिक अलिया इरशादात पर अमल किया जाए जिनमें कोई इख्तेलाफ नहीं (मकसद उनकी सुन्नत की तरफ पलटाना है, जो उम्मत को जमा करने वाली हो तफरिका डालने वाली न हो)।

क़ज़ावत: फिर उसके बाद तुम खुद भी उनके फ़ैसलों की निगरानी करते रहना और उनके अताया में इतनी वुसअत पैदा कर देना के उनकी ज़रूरत खत्म हो जाए और फिर लोगों के मोहताज न रह जाएं उन्हें अपने पास ऐसा मरतबा और मुक़ाम अता करना जिसकी तुम्हारे ख्वास भी लालच न करते हों के इस तरह वह लोगों के ज़रर पहुंचाने से महफूज़ हो जाएंगे। मगर इस मामले पर भी गहरी निगाह रखना के यह दीन बहुत दिनों अशरार के हाथों में कैदी रह चुका है जहां ख्वाहिशात की बुनियाद पर काम होता था और मकसद सिर्फ दुनिया तलबी था।

उम्माल: इसके बाद अपने आमिलों के मामलात पर भी निगाह रखना और उन्हें इम्तेहान के बाद काम सिपुर्द करना और खबरदार ताल्लुकात या जानिबदारी की बिना पर ओहदा न दे देना के यह बातें जुल्म और खयानत के असरात में शामिल हैं और देखो इनमें भी जो मुखलिस और गैरतमन्द हों उनको तलाश करना जो अच्छे घराने के अफ़राद हों और उनके इस्लाम में साबिक जज़्बात रह चुके हों के ऐसे लोग खुश इखलाक और बेदाग़ इज़्जत वाले होते हैं, इनके अन्दर फ़िज़ूल खर्ची की लालच कम होती है और यह अन्जामकार पर ज़्यादा नज़र रखते हैं। इसके बाद इनके भी तमाम एखराजात का इन्तेज़ाम कर देना के इससे उन्हें अपने नफ़स की इस्लाह का भी मौक़ा मिलता है और दूसरों के अमवाल पर कब्ज़ा करने से भी बेनियाज़ हो जाते हैं और फिर तुम्हारे अम्र की मुखालेफ़त करें या अमानत में रखना पैदा करें तो उन पर हुज्जत तमाम हो जाती है। इसके बाद उन गवर्नरो के आमाल की भी तफ़तीश करते रहना और निहायत मोतबर किस्म के अहले सिद्क व सफ़ा को उन पर जासूसी के लिये मुकर्रर कर देना के यह तर्ज़ अमल (((-इस मुक़ाम पर काज़ियों के हस्बेज़ैल सिफ़ात का तज़क़िरा किया गया है-

1. खुद हाकिम की निगाह में कज़ावत करने के काबिल हो।
2. तमाम जनता से अफ़ज़लीयत की बुनियाद पर मुन्तख़ब किया गया हो।
3. मसाएल में उलझ न जाता हो बल्कि साहेबे नज़र व स्तमबात हो।
4. फ़रीक़ैन के झगड़ों पर गुस्सा न करता हो।
5. ग़लती हो जाए तो उस पर अकड़ता न हो।
6. लालची न हो।
7. मुआमलात की मुकम्मल तहक़ीक़ करता हो और काहेली का शिकार न हो।
8. शुबहात के मौक़े पर जल्दबाज़ी से काम न लेता हो बल्कि दीगर मुकर्ररा क़वानीन की बुनियाद पर फ़ैसला करता हो।

9. दलाएल को कुबूल करने वाला हो।
10. फरीकैन की तरफ मराजअ करने से उकताता न हो बल्कि पूरी बहस सुनने की सलाहियत रखता हो।
11. तहक्रीकातत में बेपनाह कूवते सब्र व तहम्मूल का मालिक हो।
12. बात वाजेह हो जाए तो कतई फैसला करने में तकल्लुफ न करता हो।
13. तारीफ से मगरूर न होता हो ।
14. लोगों के उभारने से किसी तरफ झुकाव न पैदा करता हो।-)))

उन्हें अमानतदारी के इस्तेमाल पर और जनता के साथ नमी के बरताव पर आमादा करेगा और देखो अपने मददगारों से भी अपने को बचाकर रखना के अगर उनमें कोई एक भी खयानत की तरफ हाथ बढ़ाए और तुम्हारे जासूस मुत्तफिका तौर पर यह खबर दें तो इस शहादत को काफ़ी समझ लेना और इसे जिस्मानी एतबार से भी सज़ा देना और जो माल हासिल किया है उसे छीन भी लेना और समाज में ज़िल्लत के मक़ाम पर रख कर खयानतकारी के मुजरिम की हैसियत से रू शिनास कराना और जंग व रूसवाई का तौक उसके गले में डाल देना।

खेराज: खेराज और मालगुज़ारी के बारे में वह तरीका इख्तेयार करो जो मालगुज़ारों के हक़ में ज़्यादा मुनासिब हो के खेराज और अहले खेराज के सलाह ही में सारे तुम्हारे सारे मुआशरे की सलाह है और किसी के हालात की इस्लाह खेराज की इस्लाह के बग़ैर नहीं हो सकती है, लोग सबके सब इसी खेराज के भरोसे ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, खेराज में तुम्हारी नज़र माल जमा करने से ज़्यादा ज़मीन की आबादकारी पर होनी चाहिये के माल की जमाआवरी ज़मीन की आबादकारी के बग़ैर मुमकिन नहीं है और जिसने आबादकारी के बग़ैर मालगुज़ारी का मुतालेबा किया उसने

शहरों को बरबाद कर दिया और बन्दों को तबाह कर दिया और उसकी हुकूमत चन्द दिनों से ज्यादा कायम नहीं रह सकती है। इसके बाद अगर लोग गरांबारी, आफते नागहानी, नहरों की खुशकी, बारिश की कमी, ज़मीन की गरकाबी की बिना पर तबाही और खुशकी की बिना पर बरबादी की कोई फरियाद करें तो उनके खेराज में इस कद्र तखफ़ीफ़ कर देना के उनके काम की इस्लाह हो सके और हखबरदार यह तखफ़ीफ़ तुम्हारे नफ़स पर गरां न गुज़रे इसलिये के तखफ़ीफ़ और सहूलत एक ज़खीरा है जिसका असर शहरों की आबादी और हुक्काम की ज़ेब व जीनत की शक़ल में तुम्हारी ही तरफ़ वापस आएगा और इसके अलावा तुम्हें बेहतरीन तारीफ़ भी हासिल होगी और अद्ल व इन्साफ़ के फैल जाने से मसरत भी हासिल होगी, फिर उनकी राहत व रफ़ाहियत और अद्ल व इन्साफ़, नरमी व सहूलत की बिना पर जो एतमाद हासिल किया है उससे एक इन्सानी ताक़त भी हासिल होगी जो बवक़ते ज़रूरत काम आ सकती है। इसलिये के बसा औकात ऐसे हालात पेश आ जाते हैं के जिसमें एतमाद व हुस्ने ज़न के क़द्रदान पर एतमाद करो तो निहायत खुशी से मुसीबत को बरदाश्त कर लेते हैं और इसका सबब ज़मीनों की आबादकारी ही होता है। ज़मीनों की बरबादी अहले ज़मीन की तंगदस्ती से पैदा होती है और तंगदस्ती का सबब हुक्काम के नफ़स का जमाआवरी की तरफ़ रूझान होता है और उनकी यह बदज़नी होती है के हुकूमत बाक़ी रहने वाली नहीं है और वह दूसरे लोगों के हालात से इबरत हासिल नहीं करते हैं।

कातिब: इसके बाद अपने मुन्शियों के हालात पर नज़र रखना और अपने काम को बेहतरीन अफ़राद के हवाले करना और फिर वह खुतूत जिनमें रमूज़े (राज़) सलतनत और इसरारे ममलेकत हों उन अफ़राद के हवाले करना जो बेहतरीन अखलाक़ व किरदार के मालिक हों और इज़ज़त पाकर अकड़ न जाते हों के एक दिन लोगों के सामने तुम्हारी मुखालेफ़त की जराअत

पैदा कर लें और ग़फ़लत की बिना पर लेन-देन के मामलात में तुम्हारे अमाल के खुतूत के पेश करने (((‘-यह इस्लामी निज़ाम का नुक्तए इम्तेयाज़ है के इसने ज़मीनों पर टैक्स ज़रूर रखा है के पैदावार में अगर एक हिस्सा मालिके ज़मीन की मेहनत और आबादकारी का है तो एक हिस्सा मालिके कायनातत के करम का भी है जिसने ज़मीन में पैदावार की सलाहियत दी है और वह पूरी कायनात का मालिक है वह अपने हिस्से को पूरे समाज पर तक़सीम करना चाहता है और उसे निज़ाम की तक़मील का बुनियादी अनासिर करार देना चाहता है, लेकिन इस टैक्स को हाकिम की सवाबदीदा और उसकी ख़्वाहिश पर नहीं रखा है जो दुनिया के तमाम ज़ालिम और अय्याश हुक्काम का तरीक़ाए कार है बल्कि उसे ज़मीन के हालात से वाबस्तता कर दिया है ताके टैक्स और पैदावार में राबेता रहे और मालिकाने ज़मीन के दिलों में हाकिम से हमदर्दी पैदा हो, पुरसूकून हालात में जी लगाकर काशत करें और हादसाती मवाक़े पर ममलेकत के काम आ सकें वरना अगर अवाम में बददिली और बदज़नी पैदा हो गई तो निज़ाम और समाज को बरबादी से बचाने वाला कोई न होगा।-)))

और उनके जवाबात देने में कोताही से काम लेने लगे और तुम्हारे लिये जो अहद व पैमान बान्धें उसे कमज़ोर कर दें और तुम्हारे ख़िलाफ़ साज़बाज़ के तोड़ने में आजिज़ी का मुज़ाहिरा करने लगे देखो यह लोग मामलात में अपने सही मक़ाम से नावाक़िफ़ न हों के अपनी क़द्र व मन्ज़िलत का न पहचानने वाला दूसरे के मुक़ाम व मरतबे से यकीनन ज़्यादा नावाक़िफ़ होगा। इसके बाद उनका तक़रूर भी सिर्फ़ ज़ाती होशियारी, खुश एतमादी और हुस्ने ज़न की बिना पर न करना के अकसर लोग हुक्काम के सामने बनावटी किरदार और बेहतरीन ख़िदमात के ज़रिये अपने को बेहतरीन बनाकर पेश करने की सलाहियत रखते हैं। जबके इसके पसे पुशत न कोई इख़लास होता है और न अमानतदारी पहले इनका इम्तेहान लेना के तुमसे पहले वाले नेक

किरदार हुक्काम के साथ इनका बरताव क्या रहा है फिर जो अवाम में अच्छे असरात रखते हों और अमानतदारी की बुनियाद पर पहचाने जाते हों उन्हीं का तर्कर कर देना के यह इस अम्र की दलील होगा के तुम अपने परवरदिगार के बन्दए मुखलिस और अपने इमाम के वफ़ादार हो अपने जुमला शोबों के लिये एक-एक अफ़सर मुकर्रर कर देना जो बड़े से बड़े काम से मक़हूर न होता हो और कामों की ज़्यादती पर परागन्दा हवास न हो जाता हो, और यह याद रखना के इन मुन्शियों में जो भी ऐब होगा और तुम उससे चश्मपोशी करोगे इसका मवाखेज़ा तुम्हीं से किया जाएगा।

इसके बाद ताजिरोँ और सनअतकारों के बारे में नसीहत हासिल करो और दूसरों को उनके साथ नेक बरताव की नसीहत करो चाहे वह एक मुक़ाम पर काम करने वाले हों या जाबजा गर्दिश करने वाले हों और जिस्मानी मेहनत से रोज़ी कमाने वाले हों। इसलिये के यही अफ़राद मुनाफ़े का मरकबज़ और ज़रूरियाते ज़िन्दगी के मुहैया करने का वसीला होते हैं। यही दूर दराज़ मुक़ामात बरों बहर कोह व मैदान हर जगह से इन ज़रूरियात के फ़राहम करने वाले होते हैं जहां लोगों की रसाई नहीं होती है और जहांतक जाने की लोग हिम्मत नहीं करते हैं, यह वह अमन पसन्द लोग हैं जिनसे फ़साद का खतरा नहीं होता है और वह सुलह व आशती वाले होते हैं जिनसे किसी शोरिश का अन्देशा नहीं होता है।

अपने सामने और दूसरे शहरों में फैले हुए इनके मुआमलात की निगरानी करते रहना और यह खयाल रखना के मैं बहुत से लोगों में इन्तेहाई तंग नज़री और बदतरीन किस्म की कन्जूसी पाई जाती है, यह मुनाफ़े की ज़खीराअन्दोज़ी करते हैं और ऊंचे ऊंचे दाम खुद ही मुअय्यन कर देते हैं जिससे अवाम को नुक़सान होता है और हुक्काम की बदनामी होती है, लोगों को

ज़खीराअन्दोजी से ममना करो के रसूले अकरम (स0) ने इससे मना फ़रमाया है। खरीद व फ़रोख्त में सहूलत ज़रूरी है जहां आदिलाना मीज़ान हो और वह कीमत मुअय्यन हो जिससे खरीदार या बेचने वाले किसी फ़रीक़ पर जुल्म न हो, इसके बाद तुम्हारे मना करने के बावजूद अगर कोई शख्स ज़खीराअन्दोजी करे तो उसे सज़ा दो लेकिन इसमें भी हद से तजावुज़ न होने पाए। (((-बाज़ शारेहीन की नज़र में इस हिस्से का ताल्लुक़ सिर्फ़ किताबत और अनशाए से नहीं है बल्कि हर शोबाए हयात से है जिसकी निगरानी के लिये एक ज़िम्मेदार का होना ज़रूरी है और जिसका इदराक़ अहले सियासत को सैकड़ों साल के बाद हुआ है और हकीमे उम्मत ने चैदह सदी कब्ल इसस नुक्ताए जहानबानी की तरफ़ इशारा कर दिया था। इसमें कोई शक़ नहीं है के तिजारत और सनअत का मुआसेरे की ज़िन्दगी में रीढ़ की हड्डी का काम करते हैं और उन्हीं के ज़रिये मुआशरे की ज़िन्दगी में इस्तेकरार पैदा होता है, यही वजह है के मौलाए कायनात ने इनके बारे में खुसूसी नसीहत फ़रमाई है और उनके मुफ़सेदीन की इस्लाह पर खुसूसी ज़ोर दिया है। ताजिर में बाज़ इम्तेयाज़ी खुसूसियात होते हैं जो दूसरी क़ौमों में नहीं पाए जाते हैं- 1. यह लोग फ़ितरन सुलह पसन्द होते हैं के फ़साद और हंगामे में दुकान के बन्द हो जाने का खतरा होता है 2. इनकी निगाह किसी मालिक और अरबाब पर नहीं होती है बल्कि परवरदिगार से रिज़क़ के तलबगार होते हैं 3. दूर दराज़ के खतरनाक मेवारिद तक सफ़र करने की बिना पर इनसे तबलीगे मज़हब का काम भी लिया जा सकता है जिसके शवाहिद आज सारी दुनिया में पाए जा रहे हैं।-)))

इसके बाद अल्लाह से डरो उस पसमान्दा तबक़े के बारे में जो मसाकीन, मोहताज, फ़ोकरा और माज़ूर अफ़राद का तबक़ा है जिनका कोई सहारा नहीं है इस तबक़े में मांगने वाले भी हैं और ग़ैरतदार भी हैं जिनकी सूरत सवाल है उनके जिस हक़ का अल्लाह ने तुम्हें मुहाफ़िज़

बनाया है उसकी हिफाज़त करो और उनके लिये बैतुलमाल और अर्जे गनीमत के गल्लात में से एक हिस्सा मखसूस कर दो के उनके दूर इक़तादा का भी वही हक़ है जो करीब वालों को है और तुम्हें सबका निगरां बनाया गया है लेहाज़ा खबरदार कहीं गुरुर व तकब्बुर तुम्हें इनकी तरफ़ से गाफ़िल न बना दे के तुम्हें बड़े कामों के मुस्तहक़म कर देने से छोटे कामों की बरबादी से माफ़ न किया जाएगा लेहाज़ा न अपनी तवज्जो को इनकी तरफ़ से हटाना और न गुरुर की बिना पर अपना मुंह मोड़ लेना जिन लोगों की रसाई तुम ततक नहीं है और उन्हें निगाहों न गिरा दिया है और शख़िसयतों ने हक़ीर बना दिया है उनके हालात की देखभाल भी तुम्हारा ही फ़रीज़ा है लेहाज़ा इनके लिये मुतवाज़ेह और खौफ़े खुदा रखने वाले मोतबर अफ़राद को मखसूस कर दो जो तुम तक उनके मामलात को पहुंचाते रहें और तुम ऐसे आमाल अन्जाम देते रहो जिनकी बिना पर रोज़े क़यामत पेशे परवरदिगार माज़ेर कहे जा सको के यही लोग सबसे ज़्यादा इन्साफ़ के मोहताज हैं और फिर हर एक के हुकूक को अदा करने में पेशे परवरदिगार अपने को माज़ूर साबित करो।

और यतीमों और कबीरा सिन बूढ़ों के हालात की भी निगरानी करते रहना के इनका कोई वसीला नहीं है और यह सवाल करने के लिये खड़े भी नहीं होते हैं ज़ाहिर है के इनका खयाल रखना हुक्काम के लिये बड़ा संगीन मसला होता है लेकिन क्या किया जाए हक़ तो सबका सब सकील ही है, अलबत्ता कभी कभी परवरदिगार इसे हल्का करार दे देता है इन अक़वाम के लिये जो आक़ेबत की तलबगार होती हैं और इस राह में अपने नफ़्स को सब्र का खूगर बनाती हैं और खुदा के वादे पर एतमाद का मुज़ाहिरा करती हैं। और देखो साहेबाने ज़रूरत के लिये एक वक़्त मुअय्यन कर दो जिसमें अपने को उनके लिये ख़ाली कर लो और एक उमूमी मजलिस में बैठो उस खुदा के सामने मुतवाज़ेह रहो जिसने पैदा किया है और अपने तमाम निगेहबान पोलिस,

फ़ौज ऐवान व अन्सार सबको दूर बैठा दो ताके बोलने वाला आज़ादी से बोल सके और किसी तरह की लुकनत का शिकार न हो के मैंने रसूले अकरम (स0) से खुद सुना है के आपने बार-बार फ़रमाया है के वह उम्मत पाकीज़ा किरदार नहीं हो सकती है जिसमें कमज़ोर को आज़ादी के साथ ताक़तवर से अपना हक़ लेने का मौक़ा न दिया जाए।”

इसके बाद उनसे बदकलामी या आजिज़ी कलाम का मुज़ाहिरा हो तो उसे बरदाश्त करो और दिले तंगी और गुरुर को दूर रखो ताके खुदा तुम्हारे लिये रहमत के एतराफ़ कुशादा कर दे और इताअत के सवाब को लाज़िम करार दे दे, जिसे जो कुछ दो खुशगवारी के साथ दो और जिसे मना करो उसे ख़ूबसूरती के साथ टाल दो। (((-मक़सद यह नहीं है के हाकिम जलसए आम में लावारिस होकर बैठ जाए और कोई भी मुफ़सिद, ज़ालिम फ़कीर के भेस में आकर उसका खात्मा कर दे, मक़सद सिर्फ़ यह है के पोलिस, फ़ौज मुहाफ़िज़ दरबान लोगों के ज़रूरियात की राह में हाएल न होने पाएं के न उन्हें तुम्हारे पास आने दें और न खुलकर बात करने का मौक़ा दें, चाहे इससे पहले पचास मक़ामात पर तलाशी ली जाए के ग़ोरबा की हाजत रवाई के नाम पर हुक्काम की ज़िन्दगीयों को कुरबान नहीं किया जा सकता है और न मुफ़सेदीन को बेलगाम छोड़ा जा सकता है हाकिम के लिये बुनियादी मसले इसकी शराफ़त, दयानत, अमानतदारी का है इसके बाद इसका मरतबा आम मशविरे से बहरहाल बलन्दतर है और इसकी ज़िन्दगी अवामुन्नास से यकीनन ज़्यादा कीमती है और इसका तहफ़ुज़ अवामुन्नास पर उसी तरह वाजिब है जिस तरह वह खुद इनके मफ़ादात का तहफ़ुज़ कर रहा है।-)))

इसके बाद तुम्हारे मामलात में बाज़ ऐसे मामलात भी हैं जिन्हें खुद बराहे रास्त अन्जाम देना है जैसे हुक्काम के उन मसाएल के जवाबात जिनके जवाबात मोहर्रिर अफ़राद न दे सकें या लोगों के उन ज़रूरियात को पूरा करना जिनके पूरा करने से तुम्हारे मददगार अफ़राद जी चुराते

हों और देखो हर काम को उसी के दिन मुकम्मल कर देना के हर दिन का अपना एक काम होता है इसके बाद अपने और परवरदिगार के रवाबित के लिये बेहतरीन वक़्त का इन्तेखाब करना जो तमाम औकात से अफ़ज़ल और बेहतर हो अगरचे तमाम ही औकात अल्लाह के लिये शुमार हो सकते हैं अगर इन्सान की नीयत सालिम रहे और जनता इसके तुफ़ैल खुशहाल हो जाए।

और तुम्हारे वह आमाल जिन्हें सिर्फ़ अल्लाह के लिये अन्जाम देते हो उनमें से सबसे अहम काम इन फ़राएज़ का क़याम हो जो सिर्फ़ परवरदिगार के लिये होते हैं अपनी जिस्मानी ताक़त में से रात और दिन दोनों वक़्त एक हिस्सा अल्लाह के लिये करार देना और जिस काम के ज़रिये इसकी क़ुरबत चाहते हो उसे मुकम्मल तौर से अन्जाम देना न कोई रखना पड़ने पाए और न कोई नुक़स पैदा हो चाहे बदन काो किसी क़द्र ज़हमत क्यों न हो जाए, और जब लोगों के साथ जमाअत की नमाज़ अदा करो तो न इस तरह पढ़ो के लोग बेज़ार हो जाएं और न इस तरह के नमाज़ बरबाद हो जाए इसलिये के लोगों में बीमार और ज़रूरतमन्द अफ़राद भी होते हैं और मैंने यमन की मुहिम पर जाते हुए हुज़ूरे अकरम (स0) से दरयाफ़्त किया था के नमाज़े जमाअत का अन्दाज़ क्या होना चाहिये तो आपने फ़रमाया था के अपनी जनता से देर तक अलग न रहना के हुक्काम का जनता से पसे पर्दा रहना एक तरह की तंग दिली पैदा करता है और उनके मामलात की इत्तेलाअ नहीं हो पाती है और यह पर्दादारी उन्हें भी उन चीज़ों के जानने से रोक देती है जिनके सामने यह हेजाजात कायम हो गए हैं और इस तरह बड़ी चीज़ छोटी हो जाती है और छोटी चीज़ बड़ी हो जाती है। अच्छा बुरा बन जाता है और बुरा अच्छा बन जाता है और हक़ बातिल से मख़लूत हो जाता है और हाकिम भी बाला आख़िर एक बशर है वह पसे पर्दा काम की इत्तेलाअ नहीं रखता है और न हक़ की पेशानी पर ऐसे निशानात होते हैं

जिनके ज़रिये सिदाकत के इक़साम को ग़लत बयानी से अलग करके पहचाना जा सके। और फिर तुम दो में से एक क़िस्म के ज़रूर होगे, या वह शख्स होगा जिसका नफ़स हक़ की राह में बज़ल व अता पर माएल है तो फिर तुम्हें वाजिब हक़ अता करने की राह में परवरदिगार हाएल करने की क्या ज़रूरत है और करीमों जैसा अमल क्यों नहीं अन्जाम देते हो, या तुम बुखल की बीमारी में मुब्तिला हो गे तो बहुत जल्दी लोग तुमसे मायूस होकर खुद ही अपने हाथ खींच लेंगे और तुम्हें परदा डालने की ज़रूरत ही न पड़ेगी। हालांके लोगों के अकसर ज़रूरियात वह हैं जिनमें तुम्हें किसी तरह की ज़हमत नहीं है जैसे किसी जुल्म की फ़रयाद या किसी मामले में इन्साफ़ का मुतालेबा। (((यह शायद उस अम्र की तरफ़ इशारा है के समाज और अवाम से अलग रहना वाली और हाकिम के ज़रूरियाते ज़िन्दगी में शामिल है वरना इसकी ज़िन्दगी 24 घण्टे अवामुन्नास की नज़र हो गई तो न तन्हाइयों में अपने मालिक से मुनाजात कर सकता है और न खलवतों में अपने अहल व अयाल के हुकूक अदा कर सकता है। परदादारी एक इन्सानी ज़रूरत है जिससे कोई बेनियाज़ नहीं हो सकता है। असल मसला यह है के इस परदादारी को तूल न होने पाए के अवामुन्नास हाकिम की ज़ियारत से महरूम हो जाएं और इसका दीदार सिर्फ़ टेलीवीज़न के पर्दे पर नसीब हो जिससे न को ई फ़रयाद की जा सकती है और न किसी दर्दे दिल का इज़हार किया जा सकता है, ऐसे शख्स को हाकिम बनने का क्या हक़ है जो अवाम के दुख दर्द में शरीक न हो सके और इनकी ज़िन्दगी की तलखियों को महसूस न कर सके, ऐसे शख्स को दरबारे हुकूमत में बैठ कर “अना रब्बोकुमुल आला” का नारा लगाना चाहिये और आखिर में किसी दरया में डूब मरना चाहिये इस्लामी हुकूमत इस तरह की लापरवाही को बरदाश्त नहीं कर सकती है। इसके लिये कूफ़े में बैठकर हज्जाज और यमामा के फ़ोकरा को देखना पड़ता है और इनकी हालत के पेशे नज़र सूखी रोटी खाना पड़ती है-)))

इसके बाद भी खयाल रहे के हर वाली के कुछ मखसूस और राजदार किस्म के अफ़राद होते हैं जिनमें खुदगर्ज़ी दस्ते दराज़ी और मुआमलात में बेइन्साफ़ी पाई जाती है लेहाज़ा खबरदार ऐसे अफ़राद के फ़साद का इलाज इन असबाब के खातमे से करना जिनसे यह हालात पैदा होते हैं। अपने किसी भी हाशियानशीन और कराबतदार को कोई जागीर मत बख़्श देना और उसे तुमसे कोई ऐसी तवक्को न होनी चाहिये के तुम किसी ऐसी ज़मीन पर कब्ज़ा दे दोगे, जिसके सबब आबपाशी या किसी मुशतर्क मामले में शिरकत रखने वाले अफ़राद को नुक़सान पहुंच जाए के अपने मसारिफ़ भी दूसरे के सर डाल दे और इस तरह इस मामले का मज़ा इसके हिस्से में आए और उसकी ज़िम्मेदारी दुनिया और आख़िरत में तुम्हारे ज़िम्मे रहे। और जिस पर कोई हक़ आएद हो उस पर इसके नाफ़िज़ करने की ज़िम्मेदारी डालो चाहे वह तुमसे नज़दीक हो या दूर और इस मसले में अल्लाह की राह में सब्र व तहम्मूल से काम लेना चाहिये इसकी ज़द तुम्हारे कराबतदारों और खास अफ़राद ही पर क्यों न पड़ती हो और इस सिलसिले में तुम्हारे मिज़ाज पर जो बार हो उसे आख़िरत की उम्मीद में बरदाश्त कर लेना के इसका अन्जाम बेहतर होगा।

और अगर कभी जनता को यह खयाल हो जाए के तुमने उन पर जुल्म किया है तो उनके लिये अपने बहाने का इज़हार करो और उसी ज़रिये से उनकी बदगुमानी का इलाज करो के इसमें तुम्हारे नफ़्स की तरबीयत भी है और जनता पर नर्मी का इज़हार भी है और वह उजरख्वाही भी है जिसके ज़रिये तुम जनता को राहे हक़ पर चलाने का मक़सद भी हासिल कर सकते हो। और खबरदार किसी ऐसी दावते सुलह का इन्कार न करना जिसकी तहरीक दुश्मन की तरफ़ से हो और जिसमें मालिक की रज़ामन्दी पाई जाती हो के सुलह के ज़रिये फ़ौजों को क़द्रे सुकून मिल जाता है और तुम्हारे नफ़्स को भी उफ़कार से निजात मिल जाएगी और शहरों में भी अम्न व अमान की फ़िज़ा कायम हो जाएगी, अलबत्ता सुलह के बाद दुश्मन की तरफ़ से मुकम्मल

तौर पर होशियार रहना के कभी कभी वह तुम्हें गाफिल बनाने के लिये तुमसे कुरबत इखतेयार करना चाहता है लेहाजा इस सिलसिले में मुकम्मल होशियारी से काम लेना और किसी हुस्ने ज़न से काम न लेना और अगर अपने और उसके दरम्यान कोई मुआहेदा करना या उसे किसी तरह की पनाह देना तो अपने अहद की पासदारी व वफ़ादारी के ज़रिये करना और अपने ज़िम्मे को अमानतदारी के ज़रिये महफूज़ बनाना और अपने क़ौल व क़रार की राह में अपने नफ़्स को सिपर बना देना के अल्लाह के फ़राएज़ में ईफ़ाए अहद जैसा कोई फ़रीज़ा नहीं है जिस पर तमाम लोग ख़्वाहिशात के इख़तेलाफ़ और उफ़कार के तज़ाद के बावजूद मुत्तहिद हैं और इसका मुशरेकीन ने भी अपने मुआमलात में लेहाज़ रखा है के अहद शिकनी के नतीजे में तबाहियों का अन्दाज़ा कर लिया है तो ख़बरदार तुम अपने अहद व पैमान से ग़दारी न करना और अपने क़ौल व क़रार में ख़यानत से काम न लेना और अपने दुश्मन पर अचानक हमला न कर देना। (((-इसमें कोई शक नहीं है के सुलह एक बेहतरीन तरीक़ाए कार है और कुरान मजीद ने इसे ख़ैर से ताबीर किया है लेकिन इसके मानी यहय नहीं हैं के जो शख्स जिन हालात में जिस तरह की सुलह की दावत दे तुम कुबूल कर लो और उसके बाद मुतमईन होकर बैठ जाओ के ऐसे निज़ाम में हर ज़ालिम अपनी ज़ालिमाना हरकतों ही पर सुलह करना चाहेगा और तुम्हें उसे तस्लीम करना होगा, सुलह की बुनियादी शर्त यह है के उसे रिज़ाए इलाही के मुताबिक़ होना चाहिये और उसकी किसी दिफ़ा को भी मरज़ीए परवरदिगार के ख़िलाफ़ नहीं होना चाहिये जिस तरह के सरकारे दो आलम (स0) की सुलह में देखा गया है के आपने जिस जिस लफ़ज़ और जिस जिस दिफ़ाअ पर सुलह की है सब की सब मुताबिके हकीकत और ऐन मर्ज़ीए परवरदिगार थीं और कोई हर्फ़ ग़लत दरमियान में नहीं था “बिस्मेका अल्लाहुम” भी एक कलमाए सही था, मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह भी एक हर्फ़ हक़ था और दुश्मन के अफ़राद का वापस कर देना भी कोई ग़लत एकदाम नहीं था, इमामे हसन (अ0) मुज्ताबा की सुलह में भी यही तमाम ख़ुसूसियात पाई जाती

हैं जिनका मुशाहिदा सरकारे दो आलम (स0) की सुलह में किया जा चुका है। और यही मौलाए कायनात (अ0) की बुनियादी तालीम और इस्लाम का वाकई हदफ़ और मक़सद है-)))

इसलिये के अल्लाह के मुक़ाबले में जाहिल व बदबख्त के अलावा कोई जराअत नहीं कर सकता है और अल्लाह ने अहद व पैमान को अमन्न व अमान का वसीला करार दिया है जिसे अपनी रहमत से तमाम बन्दों के दरम्यान आम कर दिया है और ऐसी पनाहगाह बना दिया है जिसके दामने हिफ़ाज़त में पनाह लेने वाले पनाह लेते हैं और इसके जवार में मन्ज़िल करने के लिये तेज़ी से क़दम आगे बढ़ाते हैं लेहाज़ा इसमें कोई जालसाज़ी, फ़रेबकारी और मक्कारी न होनी चाहिये और कोई ऐसा मुआहेदा न करना जिसमें तावील की ज़रूरत पड़े और मुआहेदा के पुख़्ता हो जाने के बाद उसके किसी मुबहम लफ़्ज़ से फ़ायदा उठाने की कोशिश न करना और अहदे इलाही में तंगी का एहसास ग़ैर हक़ के साथ वुसअत की जुस्तजू पर आमादा न कर दे के किसी अम की तंगी पर सब्र कर लेना और कशाइश हाल और बेहतरीन आक़ेबत का इन्तेज़ार करना इस ग़दारी से बेहतर है जिसके असरात ख़तरनाक हों और तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से जवाबदेही की मुसीबत घेर ले और दुनिया व आख़िरत दोनों तबाह हो जाएं।

देखो ख़बरदार! नाहक़ ख़ून बहाने से परहेज़ करना के इससे ज़्यादा अज़ाबे इलाही से क़रीबतर और पादाश के एतबार से शदीदतर और नेमतों के ज़वाल, ज़िन्दगी के ख़ात्मे के लिये मुनासिबतर कोई सबब नहीं है और परवरदिगार रोज़े क़यामत अपने फ़ैसले का आगाज़ ख़ूरेज़ियों के मामले से करेगा, लेहाज़ा ख़बरदार अपनी हुकूमत का इस्तेहक़ाम नाहक़ ख़ूरेज़ी के ज़रिये न पैदा करना के यह बात हुकूमत को कमज़ोर और बेजान बना देती है बल्के तबाह करके दूसरों की तरफ़ मुन्तक़िल कर देती है और तुम्हारे पास न ख़ुदा के सामने और न मेरे सामने अमदन

क़त्ल करने का कोई बहाने नहीं है और इसमें जिन्दगी का क़सास भी साबित है अलबत्ता अगर धोके से इस ग़लती में मुब्तिला हो जाओ और तुम्हारा ताज़ियाना तलवार या हाथ सज़ा देने में अपनी हद से आगे बढ़ जाए के कभी कभी घूँसा वगैरा भी क़त्ल का सबब बन जाता है, तो ख़बरदार तुम्हें सलतनत का गुरुर इतना ऊँचा न बना दे के तुम खून के वारिसों को उनका हक्के खूँ बहा भी अदा न करो।

और देखो अपने नफ़स को खुद पसन्दी से भी महफूज़ रखना और अपनी पसन्द पर भरोसा भी न करना और ज़्यादा तारीफ़ का शौक भी न पैदा हो जाए के यह सब बातें शैतान की फ़ुरसत के बेहतरीन वसाएल हैं जिनके ज़रिये वह नेक किरदारों के अमल को ज़ाया और बरबाद कर दिया करता है।

और ख़बरदार जनता पर एहसान भी न जताना और जो सलूक किया है उसे ज़्यादा समझने की कोशिश भी न करना या उनसे कोई वादा करके उसके बाद वादा ख़िलाफ़ी भी न करना के यह तर्ज़ अमल एहसान को बरबाद कर देता है और ज़्यादाती अमल का गुरुर हक़ की नूरानियत को फ़ना कर देता है और वादा ख़िलाफ़ी खुदा और बन्दगाने खुदा दोनों के नज़दीक नाराज़गी का बाएस होती है जैसा के उसने इरशाद फ़रमाया है के “अल्लाह के नज़दीक यह बड़ी नाराज़गी की बात है के तुम कोई बात कहो और फिर उसके मुताबिक़ अमल न करो।” (((-वाज़ेह रहे के दुनिया में हुकूमतों का क़याम तो विरासत, जमहूरियत, असकरी इन्केलाब और ज़ेहानत व फ़रासत तमाम असबाब से हो सकता है लेकिन हुकूमतों में इस्तेहकाम अवाम की खुशी और मुल्क की खुशहाली के बगैर मुमकिन नहीं है और जिन अफ़राद ने यह ख़याल किया के वह अपनी हुकूमतों को ख़ूँरेज़ी के ज़रिये मुस्तहक़म बना सकते हैं उन्होंने जीतेजी अपनी ग़लत फ़हमी का अन्जाम देख लिया और हिटलर जैसे शख़्स को भी खुदकुशी पर आमादा न होना पड़ा,

इसीलिये कहा गया है के मुल्क कुफ़र के साथ तो बाक़ी रह सकता है लेकिन जुल्म के साथ बाक़ी नहीं रह सकता है और इन्सानियत का ख़ून बहाने से बड़ा कोई जुर्म काबिले तसव्वुर नहीं है लेहाज़ा इससे परहेज़ हर साहबे इक्तेदार और साहबे अक़ल व होश का फ़रीज़ा है और ज़माने की गर्दिश के पलटते देर नहीं लगती है-)))

और ख़बरदार वक़्त से पहले कामों जल्दी न करना और वक़्त आजाने के बाद सुस्ती का मुजाहेरा न करना और बात समझ में न आए तो झगड़ा न करना और वाज़ेह हो जाए तो कमज़ोरी का इज़हार न करना हर बात को इसकी जगह रखो और हर अम्र को उसके महल पर करार दो।

देखो जिस चीज़ में तमाम लोग बराबर के शरीक हैं उसे अपने साथ मख़सूस न कर लेना और जो हक़ निगाहों के सामने वाज़ेह हो जाए उसके ग़फ़लत न बरतना के दूसरों के लिये यही तुम्हारी ज़िम्मादारी है और अनक़रीब तमाम काम से परदे उठ जाएंगे और तुमसे मज़लूम का बदला ले लिया जाएगा अपने ग़ज़ब की तेज़ी अपनी सरकशी के जोश अपने हाथ की जुम्बिश और अपनी ज़बान की काट पर काबू रखना और उन तमाम चीज़ों से अपने को इस तरह महफ़ूज़ रखना के जल्दबाज़ी से काम न लेना और सज़ा देने में जल्दी न करना यहांतक के गुस्सा ठहर जाए और अपने ऊपर काबू हासिल हो जाए, और इस अम्र पर भी इख़तेयार उस वक़्त तक हासिल नहीं हो सकता है जब तक परवरदिगार की बारगाह में वापसी का ख़याल ज़्यादा से ज़्यादा न हो जाए।

तुम्हारा फ़रीज़ा यह है के माज़ी में गुज़र जाने वाली आदिलाना हुकूमत और फ़ाज़िलाना सीरत को याद रखो रसूले अकरम (अ0) के आसार और किताबे खुदा के एहकाम को निगाह में रखो और जिस तरह हमें अमल करते देखा है उसी तरह हमारे नक्शे क़दम पर चलो और जो कुछ इस इस अहदनामे में हमने बताया है उस पर अमल करने की कोशिश करो के मैंने तुम्हारे ऊपर अपनी हुज़्जत को मुस्तहक़म कर दिया है ताके जब तुम्हारा नफ़्स ख़्वाहिशात की तरफ़ तेज़ी से बढ़े तो तुम्हारे पास कोई बहाना न रहे, और मैं परवरदिगार की वसीअ रहमत और हर मक़सद के अता करने की अज़ीम कुदरत के वसीले से यह सवाल करता हूँ के मुझे और तुम्हें इन कामों की तौफ़ीक़ दे जिनमें इसकी मर्ज़ी हो और हम दोनों इसकी बारगाह में और बन्दों के सामने बहाना पेश करने के काबिल हो जाएं, बन्दों की बेहतरीन तारीफ़ के हक़दार हों और इलाक़ों में बेहतरीन आसार छोड़ कर जाएं, नेमत की फ़रावानी और इज़ज़त के रोज़ाफ़ज़ों इज़ाफ़े को बरकरार रख सकें और हम दोनों का ख़ात्मा सआदत और शहादत पर हो के हमस ब अल्लाह के लिये हैं और उसी की बारगाह में पलट कर जाने वाले हैं। सलाम हो रसूले खुदा (स0) पर और उनकी तय्यब व ताहिर आल पर और सब पर सलाम बेहिसाब। वस्सलाम

54-आपका मकतूबे गिरामी

(तल्हा व जुबैर के नाम जिसे अम्र बिन अलहुसैन अलखज़ाई के ज़रिये भेजा था और जिसका ज़िक्र अबूजाफ़र इसकाफ़ी ने किताबुल मक़ामात में किया है)

अम्माबाद! अगरचे तुम दोनों छिपा रहे हो लेकिन तुम्हें बहरहाल मालूम है के मैंने खिलाफ़त की ख्वाहिश नहीं की, लोगों ने मुझसे ख्वाहिश की है और मैंने बैअत के लिये एकदाम नहीं किया है। जब तक उन्होंने बैअत करने का इरादा ज़ाहिर नहीं किया है तुम दोनों भी उन्हीं अफ़राद में शामिल हो जिन्होंने मुझे चाहा था और मेरी बैअत की थी और आम लोगो ने भी मेरी बैअत न किसी सल्तनत के रोब दाब से की है और न किसी माल व दुनिया की लालच में की है। (((- अबूजाफ़र इसकाफ़ी मोतजेलह के शूख में शुमार होते थे और उनकी सत्तर तसनीफ़ात थीं जिनमें एक “किताबुल मक़ामात” भी थी, इसी किताब में अमीरूल मोमेनीन (अ0) के इस मकतूबे गिरामी का तज़क़िरा किया है और यह बताया है के हज़रत ने इसे इमरान के ज़रिये भेजा था जो फ़ोक़हाए सहाबा में शुमार होते थे और जंगे ख़ैबर के साल इस्लाम लाए थे और अहदे माविया में इन्तेक़ाल किया था।- इसकाफ़ी जाहज़ के मआसिरों में थे और उन्हें इस्काफ़ की निस्बत से इस्काफ़ी कहा जाता है जो नहरवान और बसरा के दरम्यान एक शहर है)))

पस अगर तुम दोनों ने मेरी बैअत अपनी खुशी से की थी तो अब खुदा की तरफ़ रूजू करो और फ़ौरन तौबा कर लो। और अगर मजबूरन की थी तो तुमने अपने ऊपर मेरा हक़ साबित कर दिया के तुमने इताअत का इज़हार किया था और नाफ़रमानी को दिल में छिपाकर रखा था और

मेरी जान की कसम दोनों इस राजदारी और दिल की बातों को छिपाने में महाजेरीन से ज़्यादा सज़ावार नहीं थे और तुम्हारे लिये बैअत से निकलने और इसके इकरार के बाद इन्कार कर देने से ज़्यादा आसान रोज़े अक्वल ही इसका इन्कार कर देना था, तुम लोगों का एक खयाल यह भी है के मैंने उस्मान को क़त्ल किया है तो मेरे और तुम्हारे दरम्यान वह अहले मदीना मौजूद हैं जिन्होंने हम दोनों से अलाहेदगी इख्तेयार कर ली है, इसके बाद हर शख्स इसी का ज़िम्मेदार है जो उसने ज़िम्मेदारी कुबूल की है। बुजुर्गवारों! मौका ग़नीमत है अपनी राय से बाज़ आ जाओ के आज तो सिर्फ़ जंग व आर का खतरा है लेकिन इसके बाद आर व नार दोनों जमा हो जाएंगे, वस्सलाम।

55-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)

अम्माबाद! ख़ुदाए बुजुर्ग व बरतर ने दुनिया को आखिरत का मुक़दमा करार दिया है और उसे आजमाइश का ज़रिया बनाया है ताके यह वाज़ेह हो जाए के बेहतरीन अमल करने वाला कौन है, हम न इस दुनिया के लिये पैदा किये गये हैं और न हमें इसके लिये दौड़-धूप का हुक्म दिया गया है, हम यहाँ फ़क़त इसलिये रखे गए हैं के हमारा इम्तेहान लिया जाए और अल्लाह ने तुम्हारे ज़रिये हमारा और हमारे ज़रिये तुम्हारा इम्तेहान ले लिया है और एक को दूसरे पर हुज्जत करार दे दिया है लेकिन तुमने तावीले कुरान का सहारा लेकर दुनिया पर धावा बोल दिया और मुझसे ऐसे जुर्म का मुहासेबा कर दिया जिसका न मेरे हाथ से कोई ताल्लुक था और न ज़बान से, सिर्फ़ अहले शाम ने मेरे सर डाल दिया था और तुम्हारे जानने वालों ने जाहिलों को और क़याम करने वालों ने खाना नशीनों को उकसा दिया था लेहाज़ा अब भी ग़नीमत है के अपने नफ़्स के बारे में अल्लाह से डरो और शैतान से अपनी ज़माम छुड़ा लो और आखिरत की

तरफ़ रूख कर लो के वही हमारी और तुम्हारी आखिरी मन्ज़िल है, उस वक़्त से डरो के इस दुनिया में परवरदिगार कोई ऐसी मुसीबत नाज़िल कर दे के असल भी ख़त्म हो जाए और नस्ल का भी ख़ात्मा हो जाए, मैं परवरदिगार की ऐसी क़सम खाकर कहता हूँ जिसके ग़लत होने का इमकान नहीं है के अगर मुक़द्दर ने मुझे और तुम्हें एक मैदान में जमा कर दिया तो मैं उस वक़्त तक मैदान न छोड़ूंगा जब तक मेरे और तुम्हारे दरम्यान फ़ैसला न हो जाए।

56-आपकी वसीयत (जो शरीह बिन हानी को उस वक़्त फ़रमाई जब उन्हें शाम जाने वाले हर अक्वल दस्ते का सरदार मुक़र्रर फ़रमाया)

सुबह व शाम अल्लाह से डरते रहो और अपने नफ़स को इस धोकेबाज़ दुनिया से बचाए रहो और इस पर किसी हाल में एतबार न करना और यह याद रखना के अगर तुमने किसी नागवारी के ख़ौफ़ से अपने नफ़स को बहुत सी पसन्दीदा चीज़ों से न रोका तो ख़्वाहिशात तुमको बहुत से नुक़सानदेह काम तक पहुंचा देंगी लेहाज़ा अपने नफ़स को रोकते टोकते रहो और गुस्से में अपने ग़ैज़ व ग़ज़ब को दबाते और कुचलते रहो।

(((-यह अमीरूलमोमेनीन (अ0) के जलीलुलक़द्द सहाबी थे, अबू मिक़दाद कुन्नीयत थी और आपके साथ तमाम मारेकों में शरीक रहे, यहां तक के हज्जाज के ज़माने में शहीद हुए, हज़रत (अ0) ने उन्हें शाम जाने वाले हर अक्वल दस्ते का अमीर मुक़र्रर किया तो मज़क़ूरा हिदायात से सरफ़राज़ फ़रमाया ताके कोई शख़्स इस्लामी पाबन्दी से आज़ादी का तसक्कुर न कर सके।-)))

57-आपका मकतूबे गिरामी (अहले कूफ़ा के नाम- मदीने से बसरा

रवाना होते वक़्त)

अम्माबाद! मैं कबीले से निकल रहा हूँ या ज़ालिम की हैसियत से या मज़लूम की हैसियत से, या मैंने बगावत की है या मेरे खिलाफ़ बगावत हुई है, मैं तुम्हें खुदा का वास्ता देकर कहता हूँ के जहां तक मेरा यह खत पहुंच जाए तुम सब निकल कर आ जाओ, इसके बाद मुझे नेकी पर पाओ तो मेरी इमदाद करो और ग़लती पर देखो तो मुझे रज़ा के रास्ते पर लगा दो।

58-आपका मकतूबे गिरामी (तमाम शहरों के नाम - जिसमें सिफ़फ़ीन

की हकीक़त का इज़हार किया गया है)

हमारे मामले की इब्तिदा यह है के हम शाम के लशकर के साथ एक मैदान में जमा हुए जब बज़ाहिर दोनों का खुदा एक था, रसूल एक था, पैग़ाम एक था, न हम अपने ईमान व तस्दीक़ में इज़ाफ़े के तलबगार थे, न वह अपने ईमान को बढ़ाना चाहते थे। मामला बिल्कुल एक था सिर्फ़ इख़्तेलाफ़ खूने उस्मान के बारे में था जिससे हम बिल्कुल बरी थे और हमने यह हल पेश किया के जो मक़सद आज नहीं हासिल हो सकता है उसका वक़ती इलाज यह किया जाए के आतिशे जंग को ख़ामोश कर दिया जाए और लोगों के जज़्बात को पुरसूकून बना दिया जाए, इसके बाद जब हुकूमत को इस्तेहकाम हो जाएगा और हालात साज़गार हो जाएंगे तो हम हक़ को उसकी मन्ज़िल तक लाने की ताक़त पैदा कर लेंगे। लेकिन क़ौम का इसरार था के इसका इलाज सिर्फ़ जंग व जेदाल है जिसका नतीजा यह हुआ के जंग ने अपने पांव फेला दिये और जम कर खड़ी

हो गई, शोले भड़क उठे और ठहर गए और क्रौम ने देखा के जंग ने दोनों के दांत काटना शुरू कर दिया है और फ़रीक़ैन में अपने पन्जे गाड़ दिये हैं तो वह मेरी बात मानने पर आमादा हो गए और मैंने भी उनकी बात को मान लिया और तेज़ी से बढ़ कर उनके मुतालबए सुलह को कुबूल कर लिया यहां तक के उन पर हुज्जत वाज़ेह हो गई और हर तरह का उज़र खत्म हो गया। अब इसके बाद कोई इस हक़ पर कायम रह गया तो गोया अपने नफ़स को हलाकत से निकाल लिया वरना इसी गुमराही में पड़ा रह गया तो ऐसा अहद शिकन होगा जिसके दिल पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है और ज़माने के हवादिस उसके सर पर मण्डला रहे हैं। (((-यह इस अम्र की तरफ़ इशारा है के हज़रत ने माविया और उसके साथियों के इस्लाम व ईमान का इकरार नहीं किया है बल्कि सूरतेहाल का तज़क़िरा किया है। हक़ीक़ते अम्र यह है के माविया को खूने उस्मान से कोई दिलचस्पी नहीं थी, वह शाम की हुकूमत और आलमे इस्लाम की खिलाफ़त का तमाअ था लेहाज़ा कोई सन्जीदा गुफ़्तगू कुबूल नहीं कर सकता था, हज़रत ने भी इमामे हुज्जत का हक़ अदा कर दिया और इसके बाद मैदाने जेहाद में क़दम जमा दिये ताके दुनिया पर वाज़ेह हो जाए के जेहादे राहे खुदा फ़रज़न्दे अबूतालिब (अ0) का काम है, अबू सुफ़ियान के बेटे का नहीं है।-)))

59-आपका मकतूबे गिरामी (असवद बिन क़तबा वालीए हलवान के नाम)

अम्माबाद! देखो अगर वाली के ख्वाहिशात मुख्तलिफ़ क्रिस्म के होंगे तो यह बात उसे अक्सर औकात इन्साफ़ से रोक देगी लेकिन तुम्हारी निगाह में तमाम अफ़राद के मामलात को एक जैसा

होना चाहिये के जुल्म कभी अदल का बदल नहीं हो सकता है। जिस चीज़ को दूसरों के लिये बुरा समझते हो उससे खुद भी इजतेनाब करो और अपने नफ़स को उन कामों में लगा दो जिन्हें खुदा ने तुम पर वाजिब किया है और इसके सवाब की उम्मीद रखो और अज़ाब से डरते रहो।

और याद रखो के दुनिया दारे आजमाइश है यहां इन्सान की एक घड़ी भी खाली नहीं जाती है मगर यह के यह बेकारी रोज़े क़यामत हसरत का सबब बन जाती है और तुमको कोई शै हक़ से बेनियाज़ नहीं बना सकती है और तुम्हारे ऊपर सबसे बड़ा हक़ यह है के अपने नफ़स को महफूज़ रखो और अपने इमकान भर जनता का एहतेसाब करते रहो के इस तरह जो फ़ायदा तुम्हें पहुंचेगा वह उससे कहीं ज़्यादा बेहतर होगा जो फ़ायदा लोगो को तुमसे पहुंचेगा, वस्सलाम।

60-आपका मकतूबे गिरामी (उन गवर्नरो के नाम जिनका इलाक़ा फ़ौज के रास्ते में पड़ता था)

बन्दए खुदा अमीरूल मोमेनीन अली (अ0) की तरफ़ से

इन खेराज जमा करने वालों और इलाक़ों के वालियों के नाम जिनके इलाके से लश्करो का गुज़र होता है।

अम्माबाद! मैंने कुछ फ़ौजे रवाना की हैं जो अनकरीब तुम्हारे इलाके से गुज़रने वाली हैं और मैंने उन्हें उन तमाम बातों की नसीहत कर दी है जो उन पर वाजिब हैं के किसी को अज़ीयत न दें और तकलीफ़ को दूर रखें और मैं तुम्हें और तुम्हारे अहले ज़िम्मा को बता देना चाहता हूँ के फ़ौज वाले कोई दस्त दराज़ी करेंगे, तो मैं उनसे बेज़ार रहूंगा मगर यह के कोई शख्स भूक से

मुजतर हो और उसके पास पेट भरने का कोई रास्ता न हो, उसके अलावा कोई ज़ालिमाना अन्दाज़ से हाथ लगाए तो उसको सज़ा देना तुम्हारा फ़र्ज है, लेकिन अपने सरफ़िरों को समझा देना के जिन हालात को मैंने मुस्तशना करार दिया है उनमें कोई शख्स किसी चीज़ को हाथ लगाना चाहे तो उससे मुक़ाबला न न करें और टोकें नहीं, फिर उसके बाद मैं लशकर के अन्दर मौजूद हूँ अपने ऊपर होने वाली ज़्यादातियों और सख्तियों की फ़रयाद मुझसे करो अगर तुम दिफ़ाअ करने के काबिल नहीं हो जब तक अल्लाह की मदद और मेरी इमदाद शामिल न हो, मैं इन्शाअल्लाह अल्लाह की मदद से हालात को बदल दूँगा। (((-इस खत में हज़रत ने दो तरह के मसाएल का तज़क़िरा फ़रमाया है, एक का ताल्लुक लशकर से है और दूसरे का उस इलाके से जहां से लशकर गुज़रने वाला है। लशकरवालों को तवज्जो दिलाई है के खबरदार जनता पर जुल्म न होने पाए के तुम्हारा काम जुल्म व जौर का मुक़ाबला करना है, जुल्म करना नहीं है और रास्ते के अवाम को मुतवज्जो किया है के अगर लशकर में कोई शख्स बर बिनाए इज़तेरार किसी चीज़ को इस्तेमाल कर ले तो खबरदार उसे मना न करना के यह उसका शरई हक़ है और इस्लाम में किसी शख्स को उसके हक़ से महरूम नहीं किया जा सकता है। इसके बाद लशकर की ज़िम्मेदारी है के अगर कोई मसला पेश आ जाए तो मेरी तरफ़ रूजू करे और अवाम की भी ज़िम्मेदारी है के अपने मसाएल की फ़रियाद मेरे पस पेश करें और सारे मुआमलात को खुद तय करने की कोशिश न करें।-)))

61-आपका मकतूबे गिरामी (कुमैल बिन ज़ियाद के नाम जो बैतुलमाल के आमिल थे और उन्होंने फ़ौजे दुश्मन को लूटमार से मना नहीं किया)

अम्माबाद! इन्सान का उस काम को नज़र अन्दाज़ कर देना जिसका ज़िम्मेदार बनाया गया है और उस काम में लग जाना जो उसके फ़राएज़ में शामिल नहीं है एक वाज़ेह कमज़ोरी और तबाहकुन फ़िक्र है। और देखो तुम्हारा अहले क़िरक़िसया पर हमला कर देना और खुद अपनी सरहदों को मोअत्तल छोड़ देना जिनका तुमको ज़िम्मेदार बनाया गया था। इस आलम में के उनका कोई दिफ़ाअ करने वाला और उनसे लश्क़रों को हटाने वाला नहीं था एक इन्तेहाई परागन्दा राय है और इस तरह तुम दोस्तों पर हमला करने वाले दुश्मनों के लिये एक वसीला बन गए जहां न तुम्हारे कान्धे मज़बूत थे और न तुम्हारी कोई हैबत थी, न तुमने दुश्मन का रास्ता रोका और न इसकी शौकत को तोड़ा, न अहले शहर के काम आए और न अपने अमीर के फ़र्ज़ को अन्जाम दिया।

62-आपका मकतूबे गिरामी (अहले मिस्र के नाम, मालिके अशतर के ज़रिये जब उनको मिस्र का गर्नर बनाकर रवाना किया)

अम्माबाद! परवरदिगार ने हज़रत मोहम्मद (स0) को आलमीन के लिये अज़ाबे इलाही से डराने वाला और मुरसलीन के लिये गवाह और निगरां बनाकर भेजा था लेकिन उनके जाने के बाद ही मुसलमानों ने उनकी खिलाफ़त में झगड़ा शुरू कर दिया, खुदा गवाह है के यह बात मेरे खयाल में भी न थी और न मेरे दिल से गुज़री थी के अरब इस मन्सब को उनके अहलेबैत (अ0) से इस तरह मोड़ देंगे और मुझसे इस तरह दूर कर देंगे के मैंने अचानक यह देखा के लोग फ़लाँ शख़्स की बैअत के लिये टूटे पड़े हैं तो मैंने अपने हाथ को रोक लिया यहाँ तक के यह देखा के लोग दीने इस्लाम से वापस जा रहे हैं और पैग़म्बर के क़ानून को बरबाद कर देना

चाहते हैं, तो मुझे यह खौफ पैदा हो गया के अगर इस रखने और बरबादी को देखने के बाद भी मैंने इस्लाम और मुसलमानों की मदद न की तो इसकी मुसीबत रोजे क़यामत उससे ज़्यादा अज़ीम होगी जो आज इस हुकूमत के चले जाने से सामने आ रही है जो सिर्फ़ चन्द दिन रहने वाली है और एक दिन उसी तरह खत्म हो जाएगी जिस तरह सराब की चमक दमक खत्म हो जाती है या आसमान के बादल फट जाते हैं तो मैंने इन हालात में क़याम किया यहां तक के बातिल ज़ाएल हो गया और दीन मुतमइन होकर अपनी जगह पर साबित हो गया। (((-जनाबे कुमैल मौलाए कायनात के मखसूस असहाब में थे और बड़े पाये के आलिम व फ़ाज़िल थे लेकिन बहरहाल बशर थे और उन्होंने माविया के मज़ालिम के जवाब में यही मुनासिब समझा के जिस तरह वह हमारे इलाके में फ़साद फेला रहा है, हम भी उसके इलाके पर हमला कर दें ताके फ़ौजों का रूख उधर मुड़ जाए मगर यह बात इमामत के मिज़ाज के खिलाफ़ थी लेहाज़ा हज़रत ने फ़ौरन तम्बीह कर दी और कुमैल ने भी अपने एकदाम के नामुनासिब होने का एहसास कर लिया और यही इन्सान का कमाले किरदार है के ग़लती पर इसरार न करे वरना ग़लती न करना शाने इस्मत है शाने इस्लाम व ईमान नहीं है। जनाबे कुमैल की ग़ैरतदारी का यह आलम था के जब हज्जाज ने उन्हें तलाश करना शुरू किया और गिरफ़्तार न कर सका तो उनकी क़ौम पर दाना, पानी बन्द कर दिया, कुमैल को इस अम्र की इत्तेलाअ मिली तो फ़ौरन हज्जाज के दरबार में पहुंच गए और फ़रमाया के मैं अपनी ज़ात की हिफ़ाज़त की खातिर सारी क़ौम को खतरे में नहीं डाल सकता हूँ और खुद मोहब्बते अहलेबैत (अ0) से दस्तबरदार भी नहीं हो सकता हूँ लेहाज़ा मुनासिब यह है के अपनी सज़ा खुद बरदाश्त करूं जिसके नतीजे में हज्जाज ने उनकी ज़िन्दगी का ख़ात्मा करा दिया।-)))

खुदा की कसम अगर मैं तनो तन्हा उनके मुकाबले पर निकल पड़ूँ और उनसे ज़मीन छलक रही हो तो भी मुझे फ़िक्र और दहशत न होगी के मैं उनकी गुमराही के बारे में भी और अपने हिदायत याफ़ता होने के बारे में भी बसीरत रखता हूँ और परवरदिगार की तरफ़ से मन्ज़िले यकीन पर भी हूँ और मैं लकाए इलाही का इशतियाक़ भी रखता हूँ और इसके बेहतरीन अज़्र व सवाब का मुन्तज़िर और उम्मीदवार हूँ। लेकिन मुझे दुख इस बात का है के उम्मत की ज़माम अहमक़ों और फ़ाजिरों के हाथ में चली जाए और वह माले खुदा को अपनी इमलाक और बन्दगाने खुदा को अपना गुलाम बना लें, नेक किरदारों से जंग करें और फ़ासिकों को अपनी जमाअत में शामिल कर लें, जिनमें वह भी शामिल हैं जिन्होंने तुम्हारे सामने शराब पी है और उन पर इस्लाम में हद जारी हो चुकी है और बाज़ वह भी हैं के जो उस वक़्त तक इस्लाम नहीं लाए जब तक उन्हें फ़वाएद नहीं पेश कर दिये गए, अगर ऐसा न होता तो मैं तुम्हें इस तरह जेहाद की दावत न देता और सरज़न्श न करता और क़याम पर आमादा न करता बल्कि तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ देता के तुम सरताबी भी करते हो और सुस्त भी हो।

क्या तुम खुद नहीं देखते हो के तुम्हारे एतराफ़ कम होते जा रहे हैं और तुम्हारे शहरों पर कब्ज़ा हुआ जा रहा है, तुम्हारे मुमालिक को छीना जा रहा है और तुम्हारे इलाक़ों पर धावा बोला जा रहा है। खुदा तुम पर रहम करे अब दुश्मन से जंग के लिये निकल पड़ो और ज़मीन से चिपक कर न रह जाओ वरना यूँ ही ज़िल्लत का शिकार होगे, जुल्म सहते रहोगे और तुम्हारा हिस्सा इन्तेहाई पस्त होगा, और याद रखो के जंग आज़मा इन्सान हमेशा बेदार रहता है और अगर कोई शख़्स सो जाता है तो उसका दुश्मन हरगिज़ ग़ाफ़िल नहीं होता है, वस्सलाम।

63-आपका मकतूबे गिरामी

(कूफ़े के गवर्नर अबूमूसा अशअरी के नाम, जब यह ख़बर मिली के आप लोगों को जंगे जमल की दावत दे रहे हैं और वह रोक रहा है)

बन्दए खुदा, अमीरूल मोमेनीन अली (अ0) का ख़त अब्दुल्लाह बिन कैस के नाम-

अम्माबाद! मुझे एक ऐसे कलाम की ख़बर मिली है जो तुम्हारे हक़ में भी हो सकता है और तुम्हारे खिलाफ़ भी, लेहाज़ा अब मुनासिब यही है के मेरे कासिद के पहुंचते ही दामन समेट लो और कमर कस लो और फ़ौरन बिल से बाहर निकल आओ और अपने साथियों को भी बुला लो। (((-सूरते हाल यह थी के उम्मत ने पैग़म्बर (स0) के बताए हुए रास्ते को नज़रअन्दाज़ कर दिया और अबू बक्र के हाथ पर बैअत कर ली लेकिन अमीरूल मोमेनीन (अ0) की मुश्किल यह थी के अगर मुसलमानों में जंग व जेदाल का सिलसिला शुरू कर देते हैं तो मसीलमा कज़़ाब और तलीहा जैसे बदअयान को मौक़ा मिल जाएगा और वह लोगों को गुमराह करके इस्लाम से मुनहरिफ़ कर देंगे इसलिये आपने सुकूत इख़तेयार फ़रमाया और खिलाफ़त के बारे में कोई बहस नहीं की लेकिन मुरतदों के हाथों इस्लाम की तबाही का मन्ज़र देख लिया तो मजबूरन बाहर निकल आए के बाला आखिर अपने हक़ की बरबादी पर सुकूत इख़तेयार किया जा सकता है, इस्लाम की बरबादी पर सब्र नहीं किया जा सकता है-)))

इसके बाद हक़ साबित हो जाए तो खड़े हो जाओ और कमज़ोरी दिखलाना है तो नज़रों से दूर हो जाओ, खुदा की क़सम तुम जहां रहोगे घेरकर लाए जाओगे और छोड़े नहीं जाओगे यहां तक के दूध मक्खी के साथ और पिघला हुआ मुनजमिद के साथ मखलूत हो जाए और तुम्हें इत्मीनान से बैठना नसीब न होगा और सामने से इस तरह डरोगे जिस तरह अपने पीछे से डरते हो, और यह काम इस क़द्र आसान नहीं है जैसा तुम समझ रहे हो, यह एक मुसीबत कुबरा है जिसके ऊँट पर बहरहाल सवार होना पड़ेगा और इसकी दुश्वारियों को हमवार करना पड़ेगा और इसके पहाड़ को सर करना पड़ेगा लेहाज़ा होश के नाखन लो और हालात पर काबू रखो और अपना हिस्सा हासिल कर लो और अगर यह बात पसन्द नहीं है तो उधर चले जाओ जिधर न कोई आव भगत है और न छुटकारे की सूरत, और अब मुनासिब यही है के तुम्हें बेकार समझकर छोड़ दिया जाए के सोते रहो और कोई यह भी न दरयाफ़्तत करे के फ़लां शख़्स किधर चला गया, खुदा की क़सम यह हक़ परस्त का वाकई इक़दाम है और मुझे बेदीनों के आमाल की कोई परवाह नहीं है, वस्सलाम।

64-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के जवाब में)

अम्माबाद! यकीनन हम और तुम इस्लाम से पहले एक साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे लेकिन कल यह तफ़रिका पैदा हो गया के हमने ईमान का रास्ता इख़तेयार कर लिया और तुम काफ़िर रह गए और आज यह इख़तेलाफ़ है के हम राहे हक़ पर कायम हैं और तुम फ़ित्ना में मुब्तिला हो, तुम्हारा मुसलमान भी उस वक़्त मुसलमान हुआ है जब मजबूरी पेश आ गई और सारे अशराफ़े अरब इस्लाम में दाख़िल होकर रसूले अकरम (स0) की जमाअत में शामिल हो गए।

तुम्हारा यह कहना के मैंने तल्हा व जुबैर को क़त्ल किया है और आइशा को घर से बाहर निकाल दिया है और मदीना छोड़कर कूफ़े और बसरा में क़याम किया है तो इसका तुमसे कोई ताल्लुक नहीं है, न तुम पर कोई जुल्म हुआ है और न तुमसे माज़ेरत की कोई ज़रूरत है। और तुम्हारा यह कहना के तुम महाजेरीन व अन्सार के साथ मेरे मुकाबले पर आ रहे हो तो हिजरत तो उसी दिन ख़त्म हो गई जब तुम्हारा भाई गिरफ़्तार हुआ था और अगर कोई जल्दी है तो ज़रा इन्तेज़ार कर लो के मैं तुमसे खुद मुलाक़ात कर लूं और यही ज़्यादा मुनासिब भी है के इस तरह परवरदिगार मुझे तुम्हें सज़ा देने के लिये भेजेगा और अगर तुम खुद भी आ गए तो इसका अन्जाम वैसा ही होगा जैसा के बनी असद के शाएर ने कहा था: “वह मौसमे गरमा की ऐसी हवाओं का सामना करने वाले हैं जो नशेबों और चट्टानों पर संगरेज़ों की बारिश कर रही हैं’ (((-माविया ने हस्बे आदत अपने इस ख़त में चन्द मसाएल उठाए थे, एक मसला यह था के हम दोनों एक खानदान के हैं तो इख़्तेलाफ़ की क्या वजह है? हज़रत ने इसका जवाब यह दिया यह इख़्तेलाफ़ उसी दिन शुरू हो गया था जब हम दाएराए इस्लाम में थे और तुम कुफ़र की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। दूसरा मसला यह था के जंगे जमल की सारी ज़िम्मेदारी अमीरूल मोमेनीन (अ0) पर है? इसका जवाब यह है के इस मसले का तुमसे कोई ताल्लुक नहीं है लेहाज़ा इसके उठाने की ज़रूरत नहीं है। तीसरा मसला अपने लशकर के मुहाजेरीन व अन्सार में होने का था? इसका जवाब यह दिया गया के हिजरत फ़तहे मक्का के बाद ख़त्म हो गई और फ़तहे मक्का में तेरा भाई गिरफ़्तार हो चुका है जिसके बाद तेरे साथी औलाद तलका तो हो सकते हैं महाजेरीन कहे जाने के काबिल नहीं हैं।-)))

और मेरे पास वही तलवार है जिससे तुम्हारे नाना, मामू और भाई को एक ठिकाने तक पहुंचा चुका हूँ और तुम खुदा की क़सम मेरे इल्म के मुताबिक़ वह शख़्स जिसके दिल पर ग़िलाफ़ चढ़ा

हुआ है और जिसकी अक़ल कमज़ोर है और तुम्हारे हक़ में मुनासिब यह है के इस तरह कहा जाए के तुम ऐसी सीढ़ी चढ़ गए हो जहां से बदतरीन मन्ज़र ही नज़र आता है के तुमने दूसरे के गुमशुदा की जुस्तजू की है और दूसरे के जानवर को चराना चाहा है और ऐसे अम्र को तलब किया है जिसके न अहल हो और न उससे तुम्हारा कोई बुनियादी लगाव है। तुम्हारे क़ौल व फ़ेल में किस क़द्र फ़ासला पाया जाता है और तुम अपने चचा और मामूं से किस क़द्र मुशाबेह हो जिनको बदबख़्ती और बातिल की तमन्ना ने पैग़म्बर (स0) के इनकार पर आमादा किया और उसके नतीजे में अपने अपने मक़तल में मर-मरकर गिरे जैसा के तुम्हें मालूम है, न किसी मुसीबत को दिफ़ाअ कर सके और न किसी हरीम की हिफ़ाज़त कर सके, उन तलवारों की मार की बिना पर जिनसे कोई मैदाने जंग ख़ाली नहीं होता और जिनमें सुस्ती का गुज़र नहीं है।

और तुमने जो बार बार उस्मान के क़ातिलों का ज़िक्र किया है तो उसका आसान हल यह है के जिस तरह सबने बैअत की है पहले मेरी बैअत करो उसके बाद मेरे पास मुक़दमा लेकर आओ, मैं तुम्हें और ततुम्हारे मुद्दा अलैहम को किताबे खुदा के फ़ैसले पर आमादा करूंगा लेकिन इसके अलावा जो तुम्हारा मुद्दा है वह एक धोका है जो बच्चे को दूध छुड़ाते वक़्त दिया जाता है, और सलाम हो उसके अहल पर।

65-आपका मक़तूबे गिरामी (माविया ही के नाम)

अम्माबाद! अब वक़्त आ गया है के तुम काम का मुशाहेदा करने के बाद उनसे फ़ायदा उठा लो के तुमने बातिल दावा करने, झूठ और ग़लत बयानी के फ़रेब में कूद पड़ने, जो चीज़ तुम्हारी औकात से बलन्द है उसे इख़तेयार करने और जो तुम्हारे लिये ममनूअ है उसको हथिया लेने में

अपने इस्लाफ़ का रास्ता इख्तेयार कर लिया है और इस तरह हक़ से फ़रार और जो चीज़ गोश्त व ख़ून से ज़्यादा तुमसे चिमटी हुई है उसका इनकार करना चाहते हो जिसे तुम्हारे कानों से सुना है और तुम्हारे सीने में भरी हुई है, तो अब हक़ के बाद खुली हुई गुमराही के अलावा क्या बाकी रह जाता है। और वज़ाहत के बाद धोका के अलावा क्या है? (((-इब्ने अबी अल हदीद का बयान है के माविया रोज़े ग़दीर मौजूद था जब सरकारे दो आलम (स0) ने हज़रत अली (अ0) के मौलाए कायनात होने का एलान किया था और उसने अपने कानों से सुना था और इसी तरह रोज़े तबूक भी मौजूद था जब हज़रत ने एलान किया था के अली (अ0) का मरतबा वही है जो हारून का मूसा के साथ है और उसे मालूम था के हुज़ूर ने अली (अ0) की सुलह को अपनी सुलह और उनकी जंग को अपनी जंग करार दिया है, मगर इसके बावजूद उसकी सेहत पर कोई असर नहीं हुआ के इसका रास्ता उसकी फूफी उम्मे हबील और उसके मामू ख़ालिद बिन वलीद जैसे अफ़राद का था जिनके दिल व दिमाग़ में न इस्लाम दाखिल हुआ था और न दाखिल होने का कोई इमकान था।-)))

लेहाज़ा शुबह और उसके दसीसेकारी पर मुश्तमिल होने से डरो के फ़िल्ना एक मुद्दत से अपने दामन फैलाए हुए है और उसकी तारीकी ने आंखों को अन्धा बना रखा है। मेरे पास तुम्हारा वह खत आया है जिसमें तरह-तरह की बेजोड़ बातें पाई जाती हैं और उनसे किसी सुलह व आशती को तकवीयत नहीं मिल सकती है और इसमें वह ख़ुराफ़ात हैं जिनके ताने-बाने न इल्म से तैयार हुए हैं और न हिल्म से, इस सिलसिले में तुम्हारी मिसाल उस शख्स की है जिसका हुसूल मुश्किल है और जिसके निशानात गुम हो गए हैं और जहां तक उक्काब परवाज़ नहीं कर सकता है और उसकी बलन्दी सिताराए उयूक़ से टक्कर ले रही है।

हाशा वकला यह कहाँ मुमकिन है के तुम मेरे इकतेदार के बाद मुसलमानों के हल व उकद के मालिक बन जाओ या मैं तुम्हें किसी एक शख्स पर भी हुकूमत करने का परवाना या दस्तावेज दे दूँ लेहाज़ा अभी गनीमत है के अपने नफ़्स का तदारुक करो और उसके बारे में गौरो फ़िक्र करो के अगर तुमने उस वक़्त तक कोताही से काम लिया जब अल्लाह के बन्दे उठ खड़े हों तो ततुम्हारे सारे रास्ते बन्द हो जाएंगे और फिर इस बात का भी मौक़ा न दिया जाएगा जो आज काबिले कुबूल है, वस्सलाम। (((-माविया ने हज़रत से मुतालबा किया था के अगर उसे वलीअहदी का ओहदा दे दिया जाए तो वह बैअत करने के लिये तैयार है और फिर खूने उस्मान कोई मसला न रह जाएगा। आपने बिलकुल वाज़ेह तौर पर इस मुतालबे को ठुकरा दिया है और माविया पर रौशन कर दिया है के मेरी हुकूमत में तेरे जैसे अफ़राद की कोई जगह नहीं है और तूने जिस मक़ाम का इरादा किया है वह तेरी परवाज़ से बहुत बलन्द है और वहाँ तक जाना तेरे इमकान में नहीं है। बेहतर यह है के अपनी औक़ात का इदराक कर ले और राहे रास्त पर आ जाए।-)))

66-आपका मकतूबे गिरामी

(अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम, जिसका तज़क़िरा पहले भी दूसरे अलफ़ाज़ में हो चुका है)

अम्माबाद! इन्सान कभी-कभी ऐसी चीज़ को पाकर भी खुश नहीं होता है जो जाने वाली नहीं थी और ऐसी चीज़ को खोकर भी रन्जीदा हो जाता है जो मिलने वाली नहीं थी लेहाज़ा ख़बरदार तुम्हारे लिये दुनिया की सबसे बड़ी नेमत किसी लज़ज़त का हुसूल या ज़बाए इन्तेक़ाम ही न बन जाए बल्कि बेहतरीन नेमत बातिल के मिटाने और हक़ के ज़िन्दा करने को समझो और तुम्हारा सुरूर उन आमाल से हो जिन्हें पहले भेज दिया है और तुम्हारा अफ़सोस उन काम पर

हो जिसे छोड़कर चले गए हो और तमामतर फ़िक्र मौत के बाद के मरहले के बारे में होनी चाहिये।

67-आपका मकतूबे गिरामी (मक्के के गवर्नर कुसम बिन अलअबास के नाम)

अम्माबाद! लोगों के लिये हज के क़याम का इन्तेज़ार करो और उन्हें अल्लाह के यादगार दिनों को याद दिलाओ, सुबह व शाम उमूमी जलसे रखो, सवाल करने वालों के सवालात के जवाबात दो, जाहिल को इल्म दो और ओलमा से तज़क़िरा करो, लोगों तक तुम्हारा कोई तर्जुमान तुम्हारी ज़बान के अलावा न हो और तुम्हारा कोई दरबान तुम्हारे चेहरे के अलावा न हो, किसी ज़रूरतमन्द को मुलाक़ात से मत रोकना के अगर पहली ही मरतबा उसे वापस कर दिया गया तो उसके बाद काम कर भी दोगे तो तुम्हारी तारीफ़ न होगी, जो अमवाल तुम्हारे पास जमा हो जाएं उन पर नज़र रखो और तुम्हारे यहां जो अयालदार और भूके प्यासे लोग हैं उन पर सर्फ़ कर दो बशर्ते के उन्हें वाक़ई मोहताजों और ज़रूरतमन्दों तक पहुंचा दो और उसके बाद जो बच जाए वह मेरे पास भेज दो ताके यहाँ के मोहताजों पर तक़सीम कर दिया जाए।

अहले मक्का से कहो के ख़बरदार मकानात का किराया न लें के परवरदिगार ने मक्के को मुक़ीम और मुसाफ़िर दोनों के लिये बराबर करार दिया है। (आकिफ़ मुक़ीम को कहा जाता है और यादी जो बाहर से हज करने के लिये आता है) अल्लाह हमें और तुम्हें अपपने पसन्दीदा आमाल की तौफ़ीक़ दे, वस्सलाम।

(((-खुली हुई बात है के यह अम्मे वजूबी नहीं है और सिर्फ़ इस्तेहबाबी और एहतेरामी है वरना हज़रत (अ0) ने जिस आयते करीमा से इस्तेदलाल फ़रमाया है उसका ताल्लुक़ मस्जिदुल हराम से है, सारे मक्के से नहीं है और मक्के को मस्जिदुल हरामम मिजाज़न कहा जाता है जिस तरह के आयते मेराज में जनाबे उम हानी के मकान को मस्जिदुल हराम करार दिया गया है वैसे यह मसला ओलमाए इस्लाम में इख्तेलाफी हैसियत रखता है और अबू हनीफ़ा ने सारे मक्के के मकानात को किराये पर देने को हराम करार दिया है और इसकी दलील अब्दुल्लाह बिन अम्रो बिनअल आस की रिवायत को करार दिया गया है जो ओलमाए शिया के नज़दीक़ क़तअन मोतबर नहीं है और हैरत अंगेज़ बात यह है के जो अहले मक्का अपने को हनफी कहने में फ़ख़्र महसूस करते हैं वह भी अय्यामे हज के दौरान दुगना चैगना बल्कि दस गुना किराया वसूल करने ही को इस्लाम व हरमे इलाही की ख़िदमत तसव्वुर करते हैं, और हज्जाजे कराम को “ज़यूफल रहमान” करार देकर उन्हें “अर्ज़ुल रहमान” पर क़याम करने का हक़ नहीं देते हैं।-)))

68-आपका मकतूबे गिरामी (जनाबे सलमान फ़ारसी के नाम-अपने दौरे

ख़िलाफ़त से पहले)

अम्माबाद! इस दुनिया की मिसाल सिर्फ़ सांप जैसी है जो छूने में इन्तेहाई नर्म होता है लेकिन इसका ज़हर इन्तेहाई कातिल होता है, इसमें जो चीज़ अच्छी लगे उससे भी किनाराकशी करो के इसमें से साथ जाने वाला बहुत कम है, इसके हम्म व ग़म को अपने से दूर रखो के इससे जुदा होना यक़ीनी है और इसके हालात बदलते ही रहते हैं। इससे जिस वक़्त ज़्यादा इन्स

महसूस करो उस वक़्त ज़्यादा होशियार रहो के इसका साथी जब भी किसी खुशी की तरफ़ से मुतमईन होता है यह उसे किसी नाखुशगवार के हवाले कर देती है और उन्स से निकाल कर वहशत के हालात तक पहुंचा देती है, वस्सलाम।

69-आपका मकतूबे गिरामी (हारिस हमदानी के नाम)

कुरान की रीसमाने हिदायत से वाबस्ता रहो और उससे नसीहत हासिल करो, उसके हलाल को हलाल करार दो और हराम को हराम, हक़ की गुज़िशता बातों की तस्दीक़ करो और दुनिया के माज़ी से उसके मुस्तक़बिल के लिये इबरत हासिल करो के इसका एक हिस्सा दूसरे से मुशाबेहत रखता है और आख़िर अक्वल से मुलहक़ होने वाला है और सबका सब ज़ाएल होने वाला और जुदा हो जाने वाला है, नामे खुदा को इस क़द्र अज़ीम करार दो के सिवाए हक़ के किसी मौक़े पर इस्तेमाल न करो, मौत और उसके बाद के हालात को बराबर याद करते रहो और उसकी आरजू उस वक़्त तक न करो जब तक मुस्तहक़म असबाब न फ़राहम हो जाएं, हर उस काम से परहेज़ करो जिसे आदमी अपने लिये पसन्द करता हो और आम मुसलमानों के लिये नापसन्द करता हो और हर उस काम से बचते रहो जो तन्हाई में किया जा सकता हो और अलल एलान अन्जाम देने में शर्म महसूस की जाती हो और इसी तरह हर उस काम से परहेज़ करो जिसके करने वाले से पूछ लिया जाए तो या इन्कार कर दे या माज़ेरत करे, अपनी आबरू का लोगों के तीरे मलामत का निशाना न बनाओ और हर सुनी हुई बात को बयान न कर दो के यह हरकत भी झूठ होने के लिये काफ़ी है और इसी तरह लोगों की हर बात की तरदीद भी न कर दो के यह अम्र जेहालत के लिये काफ़ी है, गुस्से को ज़ब्त करो, ताक़त रखने के बावजूद लोगों को माफ़ करो, ग़ज़ब में हिल्म का मुज़ाहेरा करो, इक़तेदार पाकर दरगुज़र करना सीखो ताके

अन्जामकार तुम्हारे लिये रहे अल्लाह ने जो नेमतें दी हैं उन्हें दुरुस्त रखने की कोशिश करो और उसकी किसी नेमत को बरबाद न करना बल्कि उन नेमतों के आसार तुम्हारी ज़िन्दगी में वाज़ेह तौर पर नज़र आएं।

और याद रखो के तमाम मोमेनीन में सबसे बेहतर इन्सान वह है जो अपने नफ़्स, अपने अहल व अयाल और अपने माल की तरफ़ से ख़ैरात करे के यही पहले जाने वाला ख़ैर वहां जाकर ज़ख़ीरा हो जाता है और तुम हो कुछ छोड़ कर चले जाओगे वह तुम्हारे ग़ैर के काम आएगा, ऐसे शख्स की सोहबत इख़्तेयार न करना जिसकी राय कमज़ोर और उसके आमाल नापसन्दीदा हों के हर साथी का क़यास उसके साथी पर किया जाता है, सुकूनत के लिये बड़े शहरों का इन्तेखाब करो के वहां मुसलमानों का इज्तेमाअ ज़्यादा होता है और उन जगहों से परहेज़ करो जो जो ग़फलत, बेवफ़ाई और इताअते खुदा में मददगारों की किल्लत के मरकज़ हों, अपनी फ़िक्र को सिर्फ़ काम की बातों में इस्तेमाल करो और खबरदार बाज़ारी अड़्डों पर मत बैठना के यह शैतान की हाज़िरी की जगहें और फ़ितनों के मरकज़ हैं, ज़्यादा हिस्सा उन अफ़राद पर निगाह रखो जिनसे परवरदिगार ने तुम्हें बेहतर करार दिया है के यह भी शुक्रे खुदा का एक रास्ता है, जुमे के दिन नमाज़ पढ़े बग़ैर सफ़र न करना मगर यह के राहे खुदा में जा रहे हो या किसी ऐसे काम में जो तुम्हारे लिये बहाना बन जाए और तमाम काम में परवरदिगार की इताअत करते रहना के इताअते खुदा दुनिया के तमाम कामों से अफ़ज़ल और बेहतर है। ((- वाज़ेह रहे के जुमे के दिन तातील कोई इस्लामी क़ानून नहीं है, सिर्फ़ मुसलमानों का एक तरीका है, वरना इस्लाम ने सिर्फ़ बक़द्रे नमाज़ कारोबार बन्द करने का हुक्म दिया है और इसके बाद फ़ौरन यह हुक्म दिया है के ज़मीन में मुन्तशिर हो जाओ और रिज़्के खुदा तलाश करो, मगर अफ़सोस के जुमे की तातील के बेहतरीन रोज़े इबादत को भी अय्याशियों और बदकारियों का

दिन बना दिया गया और इन्सान सबसे ज़्यादा निकम्मा और नाकारा उसी दिन होता है, इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन-)))

अपने नफ़्स को बहाने करके इबादत की तरफ़ ले आओ और उसके साथ नर्मी बरतो, ज़ब्र न करो और उसी की फ़ुर्सत और फ़ारिगुलबाली से फ़ायदा उठाओ, मगर जिन फ़राएज़ को परवरदिगार ने तुम्हारे ज़िम्मे लिख दिया है उन्हें बहरहाल अन्जाम देना है और उनका खयाल रखना है और देखो खबरदार ऐसा न हो के तुम्हे इस हाल में मौत आ जाए के तुम तलबे दुनिया में परवरदिगार से भाग रहे हो, और खबरदार फ़ासिकों की सोहबत इख्तेयार न करना के शर बालाआखिर शर से मिल जाता है, अल्लाह की अज़मत का एतराफ़ करो और उसके महबूब बन्दों से मोहब्बत करो और गुस्से से इजतेनाब करो के यह शैतान के लशक़रों में सबसे अज़ीमतर लशकर है, वस्सलाम।

70-आपका मकतूबे गिरामी

(आमिले मदीना सहल बिन हनीफ़ अन्सारी के नाम, जब आपको खबर मिली के एक क्रौम माविया से जा मिली है)

अम्माबाद! मुझे यह खबर मिली है के तुम्हारे यहाँ के कुछ लोग चुपके से माविया की तरफ़ खिसक गए हैं तो खबरदार तुम इस अदद के कम हो जाने और इस ताक़त के चले जाने पर हरगिज़ अफ़सोस न करना के इन लोगो की गुमराही और तुम्हारे सुकूने नफ़्स के लिये यही काफ़ी है के वह लोग हक़ व हिदायत से भागे हैं और गुमराही और जेहालत की तरफ़ दौड़ पड़े हैं यह अहले दुनिया हैं लेहाज़ा इसी की तरफ़ मुतवज्जेह हैं और दौड़ लगा रहे हैं, हालांके उन्होंने इन्साफ़ को पहचाना भी है, सुना भी है और समझे भी हैं और उन्हें मालूम है के हक़ के मामले में हमारे यहाँ तमाम लोग बराबर की हैसियत रखते हैं इसीलिये यह लोग खुदगर्ज़ी की तरफ़ भाग निकले, खुदा उन्हें ग़ारत करे और तबाह कर दे।

खुदा की क़सम उन लोगों ने जुल्म से फ़रार नहीं किया है और न अद्ल से मुलहक़ हुए हैं, और हमारी ख़्वाहिश सिर्फ़ यह है के परवरदिगार इस मामले में दुश्वारियों को आसान बना दे और नाहमवारी को हमवार कर दे।

71-आपका मकतूबे गिरामी

(मन्ज़र बिन जारुद अबदी के नाम जिसने बाज़ आमाल में खयानत से काम लिया)

अम्माबाद! तेरे बाप की शराफ़त ने मुझे तेरे बारे में धोके में रखा और मैं समझा के तू उसी के रास्ते पर चल रहा है और उसी के तरीके पर गामज़न है, लेकिन ताज़ा तरीन अखबार से अन्दाज़ा होता है के तूने ख्वाहिशात की पैरवी में कोई कसर नहीं उठा रखी है और आखेरत के लिये कोई ज़खीरा नहीं किया है, आखेरत को बरबाद करके दुनिया को आबाद कर रहा है और दीन से रिश्ता तोड़कर कबीले से रिश्ता जोड़ रहा है। अगर मेरे पास आने वाली खबरें सही हैं तो तेरे घरवालों का ऊंट और तेरे जूते का तस्मा भी तुझसे बेहतर है और जो तेरा जैसा हो उसके ज़रिये न रखने को बन्द किया जा सकता है न किसी अम्र को नाफ़िज़ किया जा सकता है और न उसके मरतबे को बलन्द किया जा सकता है न उसे किसी अमानत में शरीक किया जा सकता है, न माल की जमाआवरी पर अमीन समझा जाए लेहाज़ा जैसे ही मेरा यह खत मिले फ़ौरन मेरी तरफ़ चल पड़ो, इन्शाअल्लाह।

सय्यद रज़ी- मन्ज़र बिन अलजारुद: यह वही शख्स है जिसके बारे में अमीरूल मोमेनीन (अ0) ने फ़रमाया था के यह अपने बाज़ुओं को बराकर देखता रहता है और अपनी चादरों में झूम कर चलता है और जूती के तस्मों को फूंकता रहता है (यानी इन्तेहाई मगरूर और मुत्कब्बिर किस्म का आदमी है)

72-आपका मकतूबे गिरामी

(अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम)

अम्माबाद! न तुम अपनी मुद्दते हयात से आगे बढ़ सकते हो और न अपने रिज़क से ज़्यादा हासिल कर सकते हो, और याद रखो के ज़माने के दो दिन होते हैं, एक तुम्हारे हक़ में और एक तुम्हारे खिलाफ़ और यह दुनिया हमेशा करवटें बदलती रहती है लेहाज़ा जो तुम्हारे हक़ में है वह कमज़ोरी के बावजूद तुम तक आ जाएगा और जो तुम्हारे खिलाफ़ है उसे ताक़त के बावजूद तुम नहीं टाल सकते हो।

73-आपका मकतूबे गिरामी

(माविया के नाम)

अम्माबाद! मैं तुमसे ख़त व किताबत करने और तुम्हारी बात सुनने में अपनी राय की कमज़ोरी और अपनी दानिशमन्दी की ग़लती का एहसास कर रहा हूँ और तुम बार-बार मुझसे अपनी बात मनवाने और ख़त व किताबत जारी रखने की कोशिश करने में ऐसे ही हो जैसे कोई बिस्तर पर लेटा ख़्वाब देख रहा हो और उसका ख़्वाब ग़लत साबित हो या कोई हैरतज़दा मुंह उठाए खड़ा हो और यह क़याम भी उसे महंगा पड़े और यही न मालूम हो के आने वाली चीज़ इसके हक़ में मुफ़ीद है या मुज़िर, तुम बिलकुल यही शख्स नहीं हो लेकिन इसी के जैसे हो और खुदा की क़सम के अगर किसी हद तक बाक़ी रखना मेरी मसलेहत न होता तो तुम तक ऐसे हवादिस आते जो हड्डियों को तोड़ देते और गोश्त का नाम तक न छोड़ते और याद रखो के यह शैतान ने तुम्हें बेहतरीन काम की तरफ़ रूजू करने और उमदा तरीन नसीहतों के सुनने से रोक रखा है और सलाम इसके अहल पर।

74- आपका मुआहेदा (संधी)

(जिसे रंबीया और अहले यमन के दरम्यान तहरीर फ़रमाया है और यह हश्शाम की तहरीर से नक़ल किया गया है)

यह वह अहद है जिस पर अहले यमन के शहरी और देहाती और क़बीलए रंबीया के शहरी और देहाती सबने इत्तेफ़ाक़ किया है के सबके सब किताबे खुदा पर साबित रहेंगे और उसी की दावत देंगे, जो उसकी तरफ़ दावत देगा और उसके ज़रिये हुक्म देगा उसकी दावत पर लब्बैक कहेंगे, न उसको किसी कीमत पर फ़रोख़्त करेंगे और न उसके किसी बदल पर राज़ी होंगे।

(((-अरब के वह क़बाएल जिनका सिलसिलाए नसब कहतान बिन आमिर तक पहुंचता है उन्हें यमन से ताबीर किया जाता है और जिन का सिलसिला रंबीया बिन नज़ार से मिलता है उन्हें रंबीया के नाम से याद किया जाता है, दौरें जाहेलीयत में दोनों में शदीद इख़तेलाफ़ात थे लेकिन इस्लाम लाने के बाद दोनों मुत्तहिद हो गए, वलहमदो लिल्लाह।-)))

इस अम्र के मुखालिफ़ और इसके नज़र अन्दाज़ करने वाले के ख़िलाफ़ मुत्तहिद रहेंगे और किसी सरज़न्श करने वाले की सरज़न्श पर इस अहद को तोड़ेंगे और न किसी ग़ैज़ व ग़ज़ब से राह में मुतासिर होंगे, और न किसी क़ौम को ज़लील करने या गाली देने का वसीला करार देंगे, इसी बात पर हाज़ेरीन भी कायम रहेंगे और ग़ायबीन भी इसी पर कम अक़ल भी कारबन्द रहेंगे और आलिम भी, इसी की पाबन्दी साहेबाने दानिश भी करेंगे और जाहिल भी, फिर इसके बाद

उनके ज़िम्मे अहदे इलाही और मीसाके परवरदिगार की पाबन्दी भी लाज़िम हो गई है और अहदे इलाही के बारे में रोज़े क़यामत भी सवाल किया जाएगा- कातिब अली (अ0) बिन अबी तालिब।

75-आपका मकतूबे गिरामी

(माविया के नाम, अपनी बैअत के इब्तेदाई दौर में जिसका ज़िक्र वाक़दी ने किताबुल जमल में किया है)

बन्दए खुदा, अमीरूल मोमेनीन अली (अ0) की तरफ़ से माविया बिन अबी सुफ़ियान के नाम

अम्माबाद! तुम्हें मालूम है के मैंने अपनी तरफ़ से हुज्जत तमाम कर दी है और तुमसे किनारा कशी कर ली है मगर फिर भी वह बात होकर रही जिसे होना था और जिसे टाला नहीं जा सकता था, यह बात बहुत लम्बी है और इसमें गुफ़्तगू बहुत तवील है लेकिन अब जिसे गुज़रना था वह गुज़र गया और जिसे आना था वह आ गया। अब मुनासिब यही है के अपने यहां के लोगों से मेरी बैअत ले लो और सबको लेकर मेरे पास हाज़िर हो जाओ, वस्सलाम।

76-आपकी वसीयत

(अब्दुल्लाह बिन अब्बास के लिये, जब उन्हें बसरा का वाली करार दिया)

लोगों से मुलाकात करने में उन्हें अपनी बज़म में जगह देने में और उनके दरम्यान फैसला करने में वुसअत से काम लो और खबरदार गैज़ व गज़ब से काम न लेना के यह शैतान की तरफ़ से हलकेपन का नतीजा है और याद रखो के जो चीज़ अल्लाह से करीब बनाती है वही जहन्नम से दूर करती है और जो चीज़ अल्लाह से दूर करती है वही जहन्नम से करीब बनाती है।

77-आपकी वसीयत

(अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम- जब उन्हें खवारिज के मुकाबले में एतमामे हुज्जत के लिये इरसाल फ़रमाया)

देखो उनसे कुरान के बारे में बहस न करना के उसके बहुत से वुजूह व एहतेमालात होते हैं और इस तरह तुम अपनी कहते रहोगे और वह अपनी कहते रहेंगे, बल्कि उनसे सुन्नत के ज़रिये बहस करो के इससे बच कर निकल जाने का कोई रास्ता न होगा।

78-आपका मकतूबे गिरामी

(अबू मूसा अशअरी के नाम)

-हकमीन के सिलसिले में इसके एक खत के जवाब में जिसका तज़क़िरा सईद बिन यहया ने “मगाज़ी” में किया है)

कितने ही लोग ऐसे हैं जो आख़ेरत की बहुत सी सआदतों से महरूम हो गए हैं, दुनिया की तरफ़ झुक गए हैं और ख़्वाहिशात के मुताबिक़ बोलने लगे हैं मैं उस अम्र की वजह से एक हैरत व इस्तेजाब की मन्ज़िल में हूँ जहां ऐसे लोग जमा हो गए हैं जिन्हें अपनी ही बात अच्छी लगती है, मैं उनके ज़ख़्म का मदावा तो कर रहा हूँ लेकिन डर रहा हूँ के कहीं यह मुनजमिद खून की शकल न इख़्तियार कर ले।

और याद रखो के उम्मत पैग़म्बर (स0) की शीराज़ाबन्दी और उसके इत्तेहाद के लिये समझ से ज़्यादा ख़्वाहिशमन्द कोई नहीं है जिसके ज़रिये मैं बेहतरीन सवाब और सरफ़राज़ी आख़िरत चाहता हूँ और मैं बहरहाल अपने अहद को पूरा करूंगा चाहे तुम इस बात से पलट जाओ जो आख़िरी मुलाकात तक तुम्हारी ज़बान पर थी, यकीनन बदबख़्त वह है जो अक़ल व तजुर्बे के होते हुए भी इसके फ़वाएद से महरूम रहे, मैं तो इस बात पर नाराज़ हूँ के कोई शख़्स हर्फ़े बातिल ज़बान पर जारी करे या किसी ऐसे अम्र को फ़ासिद कर दे जिसकी खुदा ने इस्लाह कर दी है लेहाज़ा जिस बात को तुम नहीं जानते हो उसको नज़रअन्दाज़ कर दो के शरीर लोग बड़ी बातें तुम तक पहुंचाने के लिये उड़कर पहुंचा करेंगे, वस्सलाम।

79-आपका मकतूबे गिरामी

(खिलाफत के बाद, लशकर के सरदारो के नाम)

अम्माबाद! तुमसे पहले वाले सिर्फ़ इस बात से हलाक हो गए के उन्होंने लोगों के हक़ रोक लिये और उन्हें रिश्वत देकर खरीद लिया और उन्हें बातिल का पाबन्द बनाया तो सब उन्हीं के रास्तों पर चल पड़े।

फेहरीस्त

इमाम अली के मकतूबात (पत्र).....	1
मुकद्देमा.....	2
इमाम अली के मकतूब (पत्र).....	3
1-आपका मकतूबे गिरामी (जो मदीने से बसरे की जानिब रवाना होते हुए अहले कूफा के नाम तहरीर किया)	4
2- आपका मकतूबे गिरामी (जिसे अहले कूफा के नाम बसरा की फतेह के बाद लिखा गया).....	5
3-आपका मकतूबे गिरामी (अपने काज़ी शरीह के नाम).....	5
4 -आपका मकतूबे गिरामी (लशकर के कुछ सरदारो के नाम).....	8
5- आपका मकतूबे गिरामी (आज़रबाईजान के गवर्नर अशअस बिन कैस के नाम).....	8
6- आपका मकतूबे गिरामी.....	9
7-आपका मकतूबे गिरामी.....	10
8- आपका मकतूबे गिरामी (जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली के नाम जब उन्हें माविया की फहमाइश के लिये रवाना फ़रमाया).....	11
9- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम).....	11
10- आपका मकतूबे गिरामी (माविया ही के नाम)	13
11- आपका मकतूबे गिरामी (दुश्मन की तरफ़ भेजे हुए एक लशकर को यह हिदायतें फ़रमाईं)	15
12- आपकी नसीहत (जो माक़ल बिन कैस रियाही को उस वक़्त फ़रमाई है जब उन्हें तीन हज़ार का लशकर देकर शाम की तरफ़ रवाना फ़रमाया है)	16
13-आपकी नसीहत.....	17
14- हिदायत (अपने लशकर के नाम सिफ़्रीन की जंग के आगाज़ से पहले)	18
15-आपकी दुआ (जिसे दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त दोहराया करते थे).....	19
16- आपका मकतूब गिरामी (जो जंग के वक़्त अपने असहाब से फ़रमाया करते थे).....	19
17-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम उसके एक ख़त के जवाब में).....	20

18- हज़रत का मकतूबे गिरामी (बसरा के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम).....	22
19- आपका मकतूबे गिरामी (अपने बाज़ गवर्नरो के नाम)	22
20- आपका मकतूबे गिरामी (ज़ियाद बिन अबिया के नाम).....	23
21- आपका मकतूबे गिरामी (ज़ियाद इब्ने अबिया के नाम)	24
22- आपका मकतूबे गिरामी	24
23- आपका इरशादे गिरामी (जिसे अपनी शहादत से पहले बतौर वसीयत फ़रमाया है).....	25
24- आपकी वसीयत (अपने अमवाल के बारे में जिसे जंगे सिफ़्फ़ीन की वापसी पर तहरीर फ़रमाया है) 26	
25- आपकी वसीयत (जिसे हर उस शख्स को लिख कर देते थे जिसे सदकात का आमिल करार देते थे)	28
26- आपका अहदनामा (बाज़ गवर्नरो के लिये जिन्हें सदकात की जमाआवरी के लिये रवाना फ़रमाया था)	31
27- आपका अहदनामा (मोहम्मद बिन अबीबक्र के नाम- जब उन्हें मिस्र का हाकिम बनाया).....	32
28- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के खत के जवाब में जो बकौल सय्यद रज़ी आपका बेहतरीन ख़ुत्बा है).....	36
29- आपका मकतूबे गिरामी (अहले बसरा के नाम)	42
30- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम).....	42
31- आपका वसीयत नामा (जिसे इमाम हसन (अ०) के नाम सिफ़्फ़ीन से वापसी पर मक़ामे हाज़ेरीन में तहरीर फ़रमाया है).....	43
32- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)	63
33- आपका मकतूबे गिरामी (मक्के के गवर्नर कसम बिन अब्बास के नाम).....	63
34- आपका मकतूबे गिरामी.....	64
35- आपका मकतूबे गिरामी (अब्दुल्लाह बिन अब्बास के नाम - मोहम्मद बिन अबीबक्र की शहादत के बाद)	66
36- आपका मकतूबे गिरामी (अपने भाई अक़ील के नाम जिसमें अपने बाज़ लशक़रों का ज़िक्र फ़रमाया है और यह दर हकीक़त अक़ील के मकतूब का जवाब है).....	67
37- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम).....	69

38-आपका मकतूबे गिरामी (मालिके अशतर की विलायत के मौके पर अहले मिस्र के नाम)	70
39-आपका मकतूबे गिरामी (अम्र इब्ने आस के नाम).....	71
40-आपका मकतूबे गिरामी (बाज़ गवर्नरो के नाम)	72
41- आपका मकतूबे गिरामी (बाज़ गवर्नरो के नाम).....	73
42-आपका मकतूबे गिरामी	77
43-आपका मकतूबे गिरामी (मुस्कला बिन हबीरा अलशीबानी के नाम जो अर्द शीर खुर्रह में आपके गवर्नर थे).....	77
44-आपका मकतूबे गिरामी	78
45-आपका मकतूबे गिरामी	79
46-आपका मकतूबे गिरामी (बाज़ गवर्नर के नाम).....	86
47- आपकी वसीयत (इमाम हसन (अ०) और इमाम हुसैन (अ०) से- इब्ने मुलजिम की तलवार से ज़ख्मी होने के बाद)	87
48- आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम).....	90
49- आपका मकतूबे गिरामी (माविया ही के नाम)	90
50- आपका मकतूबे गिरामी (लशकर के सरदारो के नाम).....	91
51-आपका मकतूबे गिरामी (टैक्स वसूल करने वालों के नाम).....	92
52-आपका मकतूबे गिरामी (शहरो के गर्वनरो के नाम- नमाज़ के बारे में)	94
53-आपका मकतूबे गिरामी	95
54-आपका मकतूबे गिरामी	120
55-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के नाम)	121
56-आपकी वसीयत (जो शरीह बिन हानी को उस वक़्त फ़रमाई जब उन्हें शाम जाने वाले हर अक्वल दस्ते का सरदार मुक़र्रर फ़रमाया)	122
57-आपका मकतूबे गिरामी (अहले कूफ़ा के नाम- मदीने से बसरा खाना होते वक़्त)	123
58-आपका मकतूबे गिरामी (तमाम शहरों के नाम - जिसमें सिफ़्फ़ीन की हकीकत का इज़हार किया गया है).....	123

59-आपका मकतूबे गिरामी (असवद बिन क़तबा वालीए हलवान के नाम).....	124
60-आपका मकतूबे गिरामी (उन गवर्नरो के नाम जिनका इलाका फ़ौज के रास्ते में पड़ता था).....	125
61-आपका मकतूबे गिरामी (कुमैल बिन ज़ियाद के नाम जो बैतुलमाल के आमिल थे और उन्होंने फ़ौजे दुश्मन को लूटमार से मना नहीं किया).....	126
62-आपका मकतूबे गिरामी (अहले मिस्र के नाम,मालिके अशतर के ज़रिये जब उनको मिस्र का गर्नर बनाकर रवाना किया).....	127
63-आपका मकतूबे गिरामी.....	130
64-आपका मकतूबे गिरामी (माविया के जवाब में).....	131
65-आपका मकतूबे गिरामी (माविया ही के नाम).....	133
66-आपका मकतूबे गिरामी.....	135
67-आपका मकतूबे गिरामी (मक्के के गवर्नर कुसम बिन अलअबास के नाम).....	136
68-आपका मकतूबे गिरामी (जनाबे सलमान फ़ारसी के नाम-अपने दौर ख़िलाफ़त से पहले).....	137
69-आपका मकतूबे गिरामी (हारिस हमदानी के नाम).....	138
70-आपका मकतूबे गिरामी.....	141
71-आपका मकतूबे गिरामी.....	141
72-आपका मकतूबे गिरामी.....	142
73-आपका मकतूबे गिरामी.....	143
74- आपका मुआहेदा (संधी).....	144
75-आपका मकतूबे गिरामी.....	145
76-आपकी वसीयत.....	145
77-आपकी वसीयत.....	146
78-आपका मकतूबे गिरामी.....	146
79-आपका मकतूबे गिरामी.....	148
फेहरीस्त.....	149

